VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

संस्कृति

Classroom Study Material

(May 2019 to February 2020)

DELHI LUCKNOW JAIPUR HYDERABAD PUNE AHMEDABAD CHANDIGARH

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /Vision_IAS vision_ias www.visionias.in /VisionIAS_UPSC

विषय सूची

1. मूर्तिकला और स्थापत्यकला 4

1.1. महापाषाण संस्कृति 4
1.2. चौखंडी स्तूप 5
1.3. अमरावती कला शैली 8
1.4. स्टूको मूर्ति 8
1.5. मिनी खजुराहो 9
1.6. बृहदेश्वर मंदिर 9
1.7. सुर्ख़ियों में अन्य स्थापत्यकला संरचनाएं 11

2. चित्रकारी एवं अन्य कला शैलियां 13

2.1. पट्टचित्र 13
2.2. बगरू ठप्पा छपाई 14
2.3. अन्य कला शैलियां 14

3. नृत्य और संगीत 15

3.1. असमी भाओना 15
3.2. सुर्ख़ियों में अन्य निष्पादन कला शैलियां 16

4. भाषा एवं साहित्य 17

4.1. शास्त्रीय भाषा 17
4.2. उर्दू 17
4.3. स्वदेशी भाषाएँ 18

5. यूनेस्को की पहलें 20

5.1. यूनेस्को विश्व विरासत स्थल 20
5.1.1. यूनेस्को विश्व विरासत स्थलों की संभावित सूची 22
5.1.2. ईरान की सांस्कृतिक धरोहर 22
5.2. यूनेस्को का क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क 23

6. त्यौहार 25

6.1. अंबुबाची मेला 25
6.2. लाई हराओबा 26
6.3. ज़ो कुटपुई 26
6.4. आदि महोत्सव 27
6.5. सुर्ख़ियों में रहे सांस्कृतिक महोत्सव 27

7. प्राचीन भारत 31

7.1. हड़प्पा सभ्यता के पतन से संबंधित नए तथ्य 31
7.2. संगम युग 33

VISION IAS

7.3. मामल्लपुरम 35
7.4. दक्षिण भारत के सबसे प्राचीनतम संस्कृत शिलालेख की प्राप्ति 36
7.5. पूमपुहार का डिजिटल रूप में पुनर्निर्माण 36
7.6. उत्तर भारत में 80,000 वर्ष पूर्व आरंभिक मानव का निवास 38
7.7. नवपाषाणकालीन शिवलिंग की खोज 39
7.8. नगरधन उत्खनन 39
7.9. सुर्ख़ियों में रहे बौद्ध मठ 40

8. प्रसिद्ध व्यक्तित्व 42

8.1. गुरु नानक 42
8.2. टीपू सुल्तान 43
8.3. महाराजा रणजीत सिंह 44
8.4. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर 45
8.5. अशफ़ाक़ुउल्ला ख़ाँ 46
8.6. विनायक दामोदर सावरकर 47
8.7. मुहम्मद इक़बाल 48
8.8. दारा शिकोह 49
8.9. आदि शंकर 50
8.10. तिरुवल्लुवर 50
8.11. गुरु रविदास जयंती 51
8.12. वेदांत देशिक 52
8.13. भारतीय इतिहास की व्याख्या में यात्रा वृतांतों की भूमिका 52
8.14. सुर्ख़ियों में रहे अन्य व्यक्तित्व 53

9. ऐतिहासिक घटनाएँ 55

9.1. पाइका विद्रोह 55
9.2. पैय्यानूर 56
9.3. जलियांवाला बाग 56
9.4. आजाद हिंद सरकार 58
9.5. नेहरू-लियाकत समझौता 59
9.6. प्रिवी पर्स का उन्मूलन 59
9.7. अन्य घटनाएँ 60

10. पुरस्कार एवं अवार्ड्स 62

10.1. नोबेल पुरस्कार 62
10.2. संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कार वितरण 62
10.3. पुर्तगाल द्वारा गांधी पुरस्कार की स्थापना 63
10.4. वर्ष 2019 का साहित्य अकादमी पुरस्कार 63
10.5. पद्म पुरस्कार 64
10.6. ज्ञानपीठ पुरस्कार 65

VISION IAS

11. विविध 66

11.1. भौगोलिक संकेतक दर्जा 66
11.2. गणतंत्र दिवस परेड 2020 67
11.3. पारसी जनसंख्या 68
11.4. कूर्ग का कोडावास समुदाय 69
11.5. पश्मीना उत्पादों को BIS प्रमाणन की प्राप्ति 69
11.6. वैश्विक यात्रा एवं पर्यटन प्रतिस्पर्धा सूचकांक 70
11.7. सरकारी पहल 70
11.8. सुर्ख़ियों में रही जनजातियाँ 72

1. मूर्तिकला और स्थापत्यकला

(Sculpture and Architecture)

1.1. महापाषाण संस्कृति

(Megalithic Culture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केरल-तमिलनाडु सीमा पर अवस्थित **पोथमाला पहाड़ियों (Pothamala hills)** पर नवीन **मेन्हीर (menhirs)** प्राप्त हुए हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- मेन्हीर **एकाश्म प्रस्तर पट्टिकाएं होती हैं, जिन्हें समाधियों के समीप लम्बवत (ऊपर की ओर)** गाड़ा गया है। ये ऊंचाई में लघु अथवा विशालकाय हो सकती हैं।
- पोथमाला पहाड़ियों में **सैकड़ों गोलाश्मिक प्रस्तर संरचनाएं (cobbled stone) पाई गई हैं।** ये संरचनाएं लगभग 3,000 वर्ष पूर्व प्रागैतिहासिक सभ्यता के एक **संरचित शवाधान केंद्र के अस्तित्व की ओर संकेत करती हैं।**
- ये मेन्हीर **केरल में अब तक ज्ञात मेन्हीरों में सबसे बड़े हैं।**
- मेन्हीर केवल कुछ क्षेत्रों (स्थानिक) में पाए गए हैं तथा ये **महापाषाणिक संस्कृतियों के द्योतक हैं।**

भारत में महापाषाणिक संस्कृति (Megalithic culture in India)

- महापाषाणिक संस्कृति वस्तुतः **मेगालिथ (महा-पाषाण) तथा इनसे संबंधित आवास स्थलों में पाए गए सांस्कृतिक अवशेषों** को संदर्भित करती है।
  - **मेगालिथ** के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के स्मारक शामिल हैं तथा इनमें केवल एकसमान विशेषता यह है कि ये **विशाल और अपरिष्कृत रूप से प्रसाधित प्रस्तर पट्टिकाओं से निर्मित** हैं।
  - ऐसे स्मारक विश्व के अनेक भागों में पाए गए हैं, यथा- **यूरोप, एशिया, अफ्रीका और मध्य एवं दक्षिण अमेरिका।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप में,** महापाषाणिक संस्कृतियाँ **सुदूर दक्षिण, दक्कन पठार, विंध्य-अरावली पर्वत श्रृंखलाओं और उत्तर पश्चिम में पायी गयी हैं।**
  - भारत में महापाषाणिक स्थलों की तिथि **1300 ई. पू. से 12वीं सदी ईस्वी तक** निर्धारित की गई है।
  - **विंध्य क्षेत्र** में महापाषाण संस्कृति **लौह-पूर्व ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति को संदर्भित करती है** तथा **प्रायद्वीपीय भारत** में ये **लौह युग** से संबंधित हैं।
  - **महापाषाणों (अर्थात् महापाषाणिक समाधियों) के निर्माण** की प्रथा भारत के कुछ **जनजातीय समुदायों (जैसे- खासी और मुंडा)** में वर्तमान में भी प्रचलित हैं।
- महापाषाण वस्तुतः **समाधियों (शवाधानों) की कुछ विशेष रीतियों को प्रतिबिंबित** करते हैं, जो भिन्न-भिन्न स्थलों में विभिन्न समयांतरालों में प्रकट हुईं तथा कुछ काल तक प्रचलन में रहीं।
  - इन शवाधान प्रथाओं में से कुछ की उत्पत्ति **नवपाषाण-ताम्रपाषाण युगीन संस्कृति** में हुई। उदाहरणार्थ- गर्त और कलश शवाधान (pit and urn burials) दक्षिण भारत के नवपाषाण-ताम्रपाषाणिक स्थलों से प्राप्त हुए हैं।
  - हालांकि, नवपाषाण-ताम्रपाषाणिक चरण के शवाधानों के विपरीत (जहाँ आवास स्थल विद्यमान थे), महापाषाणिक समाधियाँ **एक पृथक क्षेत्र में अवस्थित हैं। जीवित एवं मृत के अधिष्ठानों का पृथक्करण** विशिष्ट है तथा **सामाजिक संगठन में एक स्थानांतरण** की ओर संकेत करता है।

VISION IAS

- महापाषाणिक समाधियों के तीन मौलिक प्रकार हैं- **कक्षीय समाधियाँ (chamber tomb), कक्ष-विहीन समाधियाँ तथा शवाधानों से असंबद्ध महापाषाण।**
- प्राप्त हुए विभिन्न प्रकार के महापाषाण स्मारक हैं- मेन्हीर, **डॉल्मेन ताबूत (dolmenoid cist/dolmen), टोपीकल (topikal)** आदि। **(चित्र देखें)**

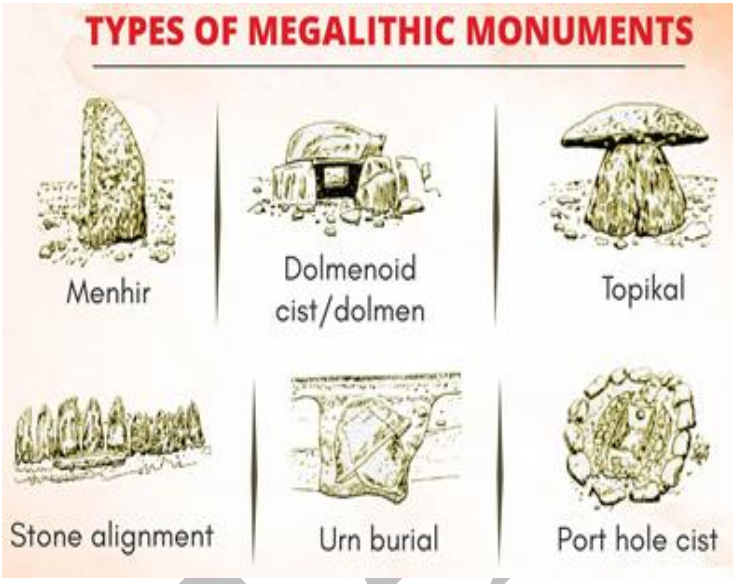

- भारत में महापाषाणिक संस्कृतियों को किसी **एकल, समरूप या समसामयिक (contemporaneous) संस्कृति** के रूप में नहीं समझा जा सकता है।

1.2. चौखंडी स्तूप

(Chaukhandi Stupa)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा चौखंडी स्तूप को "राष्ट्रीय महत्व का संरक्षित क्षेत्र" (प्रोटेक्टेड एरिया ऑफ़ नेशनल इंपॉर्टेंस) घोषित किया गया।

चौखंडी स्तूप के बारे में

- यह **सारनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)** में स्थित एक प्राचीन बौद्ध स्थल है, जो ईंटों से निर्मित एक उत्कृष्ट संरचना है तथा इसके शीर्ष पर एक अष्टभुजाकार मीनार अवस्थित है।
- जनश्रुतियों के अनुसार इस स्तूप का निर्माण मूलतः सम्राट अशोक द्वारा कराया गया था।
- शीर्ष पर अवस्थित **अष्टभुजाकार मीनार एक मुगल स्मारक है,** जिसका निर्माण **इस स्थल पर हुमायूँ की यात्रा** के उपलक्ष्य में 1588 ईस्वी में कराया गया था।

सारनाथ के विषय में

- सारनाथ को 'मृगदाव' (मृग उद्यान) के रुप में भी संदर्भित किया गया है। इसके अतिरिक्त इस स्थल को 'इशिपतन' (ऋषिपतन) के रुप में भी संबोधित किया गया है, जो संभवतः ऐसे स्थल को संदर्भित करता है जहाँ "दिव्य पुरुष धरती पर अवतरित हुए थे"।
- **प्रसिद्ध बौद्ध स्थल:** ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में ही दिया था, जिसे **धर्म-चक्र प्रवर्तन** कहा गया है।
  - **धमेख स्तूप (धर्म-चक्र स्तूप):** इस स्थल पर भगवान बुद्ध ने धर्म का प्रथम उपदेश दिया था। यह माना जाता है कि इसका निर्माण 500 ईस्वी में हुआ था, हालाँकि सम्राट अशोक द्वारा इसके निर्माण का आदेश तीसरी शताब्दी ई. पू. में दिया गया था।
  - **मूलगंध कुटी विहार:** यह वह स्थल है जहां महात्मा बुद्ध ने सारनाथ भ्रमण के दौरान निवास किया था।

- **बोधि वृक्ष:** यह मूलगंध कुटी विहार के निकट स्थित है तथा इसका रोपण श्रीलंका के अनुराधापुर के श्री महाबोधि वृक्ष से लाई गई शाखा के माध्यम से किया गया है।

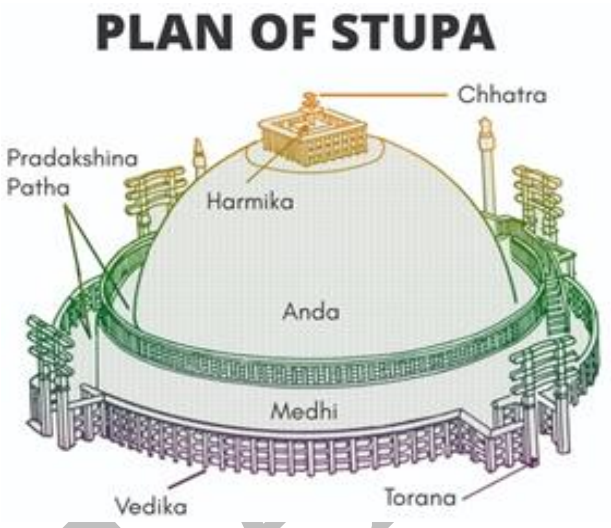

- **अशोक स्तम्भ:** भारत ने इस स्तम्भ को अपने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया है तथा स्तम्भ के निचले भाग पर स्थित अशोक चक्र को तिरंगे के मध्य में रखा है।
  - अशोक स्तम्भ सम्राट अशोक की सारनाथ यात्रा को प्रदर्शित करता है। 50 मीटर ऊँचे इस स्तम्भ के शीर्ष पर **चार सिंह (जिनके पृष्ठ भाग परस्पर संलग्न हैं) विराजमान हैं** तथा **सिंहों के नीचे चार पशुओं,** यथा- वृषभ, सिंह, हाथी और अश्व को चित्रित किया गया है। ये चारों पशु भगवान बुद्ध के जीवन के चार चरणों को निरुपित करते हैं।
- **जैन स्थल:** यह जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर **श्रेयांसनाथ** की जन्मस्थली है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archeological Survey of India: ASI)

- **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन ASI राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण हेतु उत्तरदायी एक प्रमुख संगठन है।
- इसके अतिरिक्त, **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958** {Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958} के प्रावधानों के अनुसार यह देश में सभी पुरातत्वीय गतिविधियों को विनियमित करता है।
- यह **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972** को भी विनियमित करता है।
- ASI की स्थापना 1861 ई. में **एलेग्जेंडर कनिंघम** द्वारा की गई थी, जो इसके प्रथम महानिदेशक भी थे।

राष्ट्रीय महत्व के स्थलों के बारे में

- **AMASR अधिनियम, 1958** के खंड 4 के तहत वे प्राचीन स्मारक अथवा पुरातत्वीय स्थल जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक महत्व के हैं तथा जो कम से कम 100 वर्षों से अस्तित्व में हैं, उन्हें राष्ट्रीय महत्व के स्थलों के रुप में घोषित किया जा सकता है।
- राष्ट्रीय महत्व के रुप में घोषित स्मारकों के **संरक्षण और अनुरक्षण का दायित्व** ASI का है तथा इस कार्य को वह संरचनात्मक मरम्मत, रासायनिक परिरक्षण और स्मारक के चतुर्दिक पर्यावरणीय विकास के माध्यम से सम्पादित करता है। यह एक नियमित एवं निरंतर संचालित होने वाली प्रक्रिया है।

अन्य महत्वपूर्ण स्तूप

साँची स्तूप

- यह भारत की प्राचीनतम संरचनाओं में से एक है और **सम्राट अशोक** द्वारा तीसरी शताब्दी ई. पू. में इसका निर्माण कराया गया था।
- ऐसा माना जाता है कि इसे शुंग सम्राट पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल के दौरान ध्वस्त कर दिया गया था। जबकि पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र शुंग के शासनकाल में इसका जीर्णोद्धार किया गया।
- **सातवाहन शासन** के दौरान, तोरणद्वार और वेदिकाओं में आलंबों (balustrade) का निर्माण करवाया गया और इसे अत्यधिक अलंकृत किया गया। तोरणद्वार को कथात्मक (जातक कथाएं) आकृतियों से सुसज्जित किया गया है। इन संरचनाओं पर बोधि

वृक्ष के नीचे संबोधि (ज्ञान) प्राप्त करते हुए भगवान बुद्ध की प्रतिमा उत्कीर्ण की गई है। भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाओं का भी चित्रांकन किया गया है।

- सांची स्तूप में चार सुंदर नक्काशीदार तोरण या द्वार हैं जो **बुद्ध के जीवन** और जातक की विभिन्न घटनाओं को दर्शाते हैं।
- इसे वर्ष 1989 में **यूनेस्को (UNESCO) के विश्व विरासत स्थल** के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।

भरहुत स्तूप

- भरहुत स्तूप मध्य प्रदेश के सतना जिले में अवस्थित है। इसका निर्माण संभवत: **शुंग शासनकाल के दौरान लगभग 150 ई. पू.** में हुआ था।
- इसका निर्माण **लाल बलुआ पत्थर** से किया गया है।
- इस स्थल की खोज 1873 ई. में **एलेक्जेंडर कनिंघम** द्वारा की गई थी।
- भरहुत पर की गई आख्यानात्मक नक्काशियों (रिलीफ) से यह प्रकट होता है कि शिल्पकार अपनी चित्रमय भाषा के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली रीति से अपनी **कहानियों** को प्रदर्शित करने में सक्षम थे।
    - आख्यान/कथानक में यक्ष तथा यक्षिणियों को हाथ जोड़े हुए और एकल मूर्तियों में हाथों को चपटा एवं वक्ष से संलग्न कर चित्रित किया गया है।
    - नक्काशीदार पट्टिकाओं पर बौद्ध कथाओं का चित्रण किया गया है, जैसे- माया का स्वप्न, देवताओं द्वारा बुद्ध की ज्ञान प्राप्ति का उत्सव मनाया जाना, बुद्ध के सिंहासन और बोधि वृक्ष की उपासना, हाथियों द्वारा बुद्ध के सिंहासन के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए दर्शाना, **जातक कथाओं** का भी चित्रण आदि।

अमरावती स्तूप

- यह प्राचीन भारत की बौद्ध कला और स्थापत्यकला का सुविख्यात उदाहरण है। यह **आंध्र प्रदेश** के अमरावती में स्थित है।
- इस स्तूप का निर्माण **तृतीय सदी ई. पू.** में हुआ था तथा 14वीं सदी ई. तक एक महत्वपूर्ण **बौद्ध मठ केंद्र** के रूप में सुविख्यात हो गया था। इस स्तूप की खोज 1797 ई. में **कोलिन मैकेंज़ी** द्वारा की गई थी।
- पूर्व में यह स्तूप चूना पत्थर की दो स्तम्भों को जोड़ने वाली क्षैतिज पट्टिकाओं (crossbars) और साधारण नक्काशियों से युक्त एक सरल संरचना थी, परन्तु जब **सातवाहन शासकों** द्वारा इसका पुनरुद्धार करवाया गया तब यह अत्यंत उत्कृष्ट स्मारक बन गया।
- ईंटों से निर्मित यह स्तूप एक गोलाकार वेदिका से युक्त है, जिस पर भगवान बुद्ध को एक हाथी को शांत करते हुए मानव रूप में चित्रित किया गया है। इसका निर्माण चार मूल दिशाओं में बाहर की ओर विस्तारित एक 95 फुट ऊँचे चबूतरे पर किया गया है।

राजस्थान का बैराठ स्तूप

- यह सम्राट अशोक द्वारा निर्मित मौर्यकालीन एक गोलाकार स्तूप है। इसका निर्माण काष्ठ के 26 अष्टकोणीय स्तम्भों से एकांतर रूप से ईंटों की चूने द्वारा पलस्तर की गई पट्टिकाओं से किया गया था।
- बैराठ या प्राचीन विराटनगर **मत्स्य** महाजनपद की राजधानी थी। किवदंतियों के अनुसार इस नगर की स्थापना राजा विराट द्वारा करवाई गई थी तथा इस शासक के राज्य में पांडवों ने छद्म वेष में अपने निर्वासन के 13 वर्ष व्यतीत किए थे।
- यह स्थान **अशोक के दो अभिलेखों** तथा महत्वपूर्ण प्राचीन बौद्ध अवशेषों हेतु भी प्रसिद्ध है।

गुजरात का देवनीमोरी स्तूप

- शामलाजी के पास मेसवा नदी के तट पर स्थित इस विशाल स्थल में कई विहार, स्तूप, छोटी गुफाएँ और चैत्य विद्यमान हैं।

आंध्र प्रदेश में स्थित स्तूप: जगय्यपेटा, भट्टीप्रोलु, नागार्जुनकोंडा, गोली आदि।

VISION IAS

1.3. अमरावती कला शैली

(Amaravati School of Art)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, आंध्रप्रदेश में **गुंडलाकम्मा नदी** के तट पर भारतीय साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों (indologists) के एक दल द्वारा **अमरावती कला शैली** की विशेषताओं से युक्त एक **बौद्ध स्मारक** की खोज की गई है।

अन्य संबंधित तथ्य

- खोजा गया बौद्ध स्मारक **स्थानीय चूना-प्रस्तर से निर्मित एक स्तम्भ है,** जिसके मध्य और शीर्ष के सभी चार किनारों पर अर्द्ध कमल पदक उकेरे गए हैं। इसकी कुछ विशेषताएँ इक्ष्वाकु वंश की अमरावती कला शैली से समानता प्रकट करती हैं।
- **अमरावती कला शैली** आँध्र प्रदेश में **कृष्णा और गोदावरी नदियों** की निचली घाटियों में विकसित हुई थी।
- इस कला शैली के मुख्य संरक्षक **सातवाहन** थे परन्तु कालांतर में सातवाहनों के उत्तराधिकारी **इक्ष्वाकु शासकों** के अधीन भी इसका संरक्षण जारी रहा। यह कला शैली **150 ई. पू. से 350 ईस्वी** के मध्य विकसित हुई।
- अमरावती कला शैली की महत्वपूर्ण विशेषता **"कथात्मक कला"** है। इसमें पदकों (medallions) को इस रीति से उकेरा जाता था कि मानो वे किसी घटना को स्वाभाविक तरीके से चित्रित करते हों। उदाहरणार्थ- एक पदक में **"भगवान बुद्ध द्वारा एक हाथी को शांत करने"** की संपूर्ण कथा को चित्रित किया गया है।
- यहाँ प्रकृति से लिए गए चित्रों की बजाय **मानवीय चित्रों** की प्रधानता है।

गांधार, मथुरा और अमरावती कला शैली के मध्य मुख्य विभेद:

कला शैली	गांधार	मथुरा	अमरावती
प्रभाव	हेलेनिस्टिक और यूनानी कला की विशेषताओं का प्रभाव	प्रकृति में स्वदेशी	प्रकृति में स्वदेशी
प्रयुक्त सामग्री	धूसर बलुआ पत्थर	लाल बलुआ पत्थर	श्वेत संगमरमर
संबंधित धर्म	मुख्यतः बौद्ध	बौद्ध, हिन्दू और जैन	मुख्यतः बौद्ध
संरक्षक	कुषाण	कुषाण	सातवाहन
प्रतिमाओं का विवरण	घुंघराले केश, दाढ़ी और मूंछों के साथ बुद्ध की आध्यात्मिक प्रतिमाएं	दाढ़ी एवं मूछों के बिना बुद्ध की प्रसन्नचित्त प्रतिमाएं	जातक कथाओं का चित्रण

1.4. स्टूको मूर्ति

(Stucco Sculpture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, पुरातत्त्ववेत्ताओं द्वारा **तेलंगाना के सूर्यपेट जिले के फणीगिरी बौद्ध स्थल** से उत्खनन के दौरान एक मानवाकार स्टूको मूर्ति की खोज की गई है। ज्ञातव्य है कि यह देश में अब तक खोजी गई सबसे बड़ी स्टूको मूर्ति है।

फणीगिरी पहाड़ी

- यह तेलंगाना का एक प्रमुख बौद्ध स्थल है तथा इसके पुरावशेष लगभग प्रथम सदी ईस्वी के हैं, जिन्हें वर्ष 2001 में उत्खनन के दौरान खोजा गया था।
- इस स्थल से प्राप्त मूर्तिकला संबंधी सम्पदा **सातवाहन और इक्ष्वाकु वंश** के मध्य एक क्रमिक संक्रमण को प्रदर्शित करती है।
- राज्य सरकार द्वारा फणीगिरी को **बौद्ध सर्किट** में शामिल किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं।
- यहाँ से प्रथम शताब्दी ई. पू. के **सातवाहन युग** से संबंधित **महास्तूप,** अर्द्धगोलाकार **चैत्य गृह,** व्रतानुष्ठित (votive) स्तूप तथा स्तम्भयुक्त समागम सभाकक्ष प्राप्त हुए हैं।

VISION IAS

- यह बौद्ध भिक्षुओं का सबसे बड़ा प्रशिक्षण स्थल और ध्यान केंद्र था तथा यहाँ लगभग 200 बौद्ध विहार स्थित थे जहां बौद्ध भिक्षु निवास करते थे। ये विहार इसी पहाड़ी पर अवस्थित थे।

स्टूको कला के बारे में

- स्टूको का प्रयोग भित्तियों एवं भीतरी छतों पर सजावटी लेपन के रूप में तथा स्थापत्य में मूर्तिकला-विषयक तथा कलात्मक विषयों के रूप में किया जाता है।
- **परंपरागत स्टूको** का निर्माण चूना, रेत और जल के मिश्रण से किया जाता था जबकि **आधुनिक स्टूको** को पोर्टलैंड सीमेन्ट, रेत एवं जल से निर्मित किया जाता है।
- एक प्लास्टर सामग्री के रूप में इसे नम अवस्था में प्रयोग किया जाता है तथा सूखने के पश्चात् यह अत्यंत कठोर हो जाता है।
- भारतीय स्थापत्य में स्टूको का प्रयोग **एक वास्तुशिल्पीय संदर्भ में प्रतिमा हेतु सामग्री** के रूप में किया जाता था।
- पूर्व में स्टूको कला **गांधार क्षेत्र** (पेशावर और उत्तरी पाकिस्तान में) में दृष्टिगत हुई थी।
- इसका प्रयोग मुख्यतया विहार परिसरों में किया गया था। उदाहरणार्थ- नालंदा और **विक्रमशिला** विहारों की मूर्तिकला में स्टूको का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जाता था।
- **द्रविड़ स्थापत्य** में विमान के अलंकरण हेतु सैकड़ों स्टूको प्रतिमाओं का प्रयोग किया गया है।

1.5. मिनी खजुराहो

(Mini Khajuraho)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के **मार्कंडेश्वर मंदिर समूह** का जीर्णोद्धार करवाया जा रहा है।

विवरण

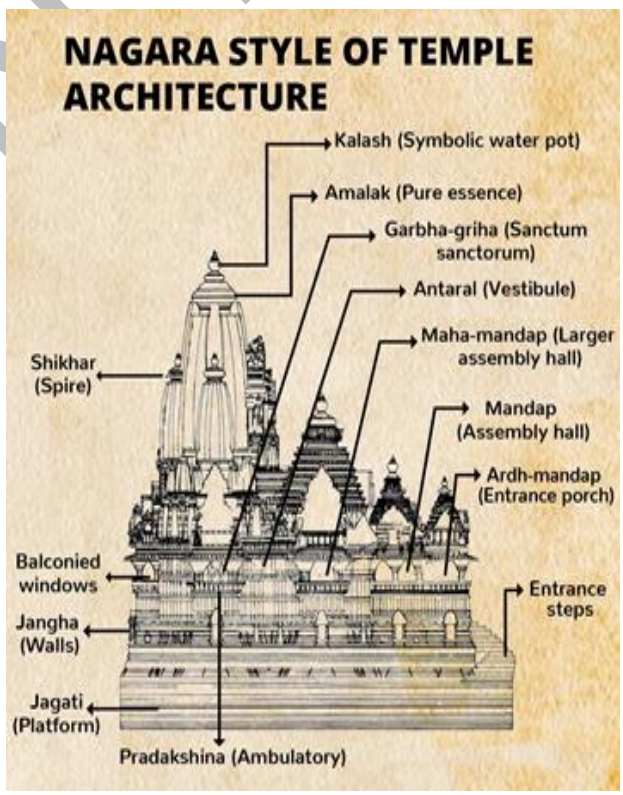

- इस मंदिर समूह का निर्माण 9वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य हुआ था तथा इस समूह में 24 विभिन्न प्रकार के मंदिर शामिल हैं।
- इस मंदिर समूह का नाम इसके मुख्य मंदिर के नाम पर रखा गया है, जो भगवान शिव को समर्पित है तथा जिसे **मार्कंडेश्वर या मार्कंडादेव मंदिर** कहा जाता है। यह मंदिर **वैनगंगा नदी के तट** पर मार्कंडा गाँव में स्थित है।
- यह मंदिर समूह **'मिनी खजुराहो'** या **'विदर्भ का खजुराहो'** के रूप में भी प्रसिद्ध है। ये मंदिर शैव, वैष्णव एवं शक्ति पंथ से संबंधित हैं।
- ये मंदिर उत्तर भारत की **नागर मंदिर स्थापत्य शैली** में निर्मित हैं।
- ऐसी मान्यता है कि लगभग 200 वर्ष पूर्व वज्रपात की एक घटना के कारण मंदिर का शिखर अंशतः विखंडित हो गया था। तत्पश्चात लगभग 120 वर्ष पूर्व एक गोंड शासक ने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाने का प्रयास किया था।

1.6. बृहदेश्वर मंदिर

(Brihadisvara Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **बृहदेश्वर मंदिर में 23 वर्ष पश्चात्** कुंभाभिषेकम समारोह आयोजित किया गया था।

कुंभाभिषेकम के विषय में

- कुंभाभिषेकम हिंदू मंदिरों के अभिषेक उत्सव का एक भाग रहा है।
- **कुंभ** का अर्थ है- शीर्ष और यह मंदिर के शिखर या मुकुट (सामान्यतया गोपुरम में) को व्यक्त करता है, वहीं **अभिषेकम** का आशय आनुष्ठानिक स्नान से है।

बृहदेश्वर मंदिर के बारे में

- **भगवान शिव** को समर्पित बृहदेश्वर मंदिर, तमिलनाडु के तंजावुर में **कावेरी नदी** के दक्षिणी तट पर स्थित है।
- इसे **पेरिया कोविल, राजराजेश्वर मंदिर और राजराजेश्वरम्** के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर का निर्माण 1003 ई. से 1010 ई. के मध्य महान चोल सम्राट **राजराजा प्रथम** द्वारा करवाया गया था। यह भारत के सबसे बड़े मंदिरों में से एक है तथा द्रविड़ स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
  - यह मंदिर **यूनेस्को (UNESCO) की विश्व विरासत स्थल** सूची में सूचीबद्ध है, जिसे 'महान प्राणवान चोल मंदिर' के रूप में भी जाना जाता है। इस सूची में शामिल अन्य दो मंदिर हैं- **'गंगईकोंडचोलापुरम मंदिर'** और **'दरासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर'।**

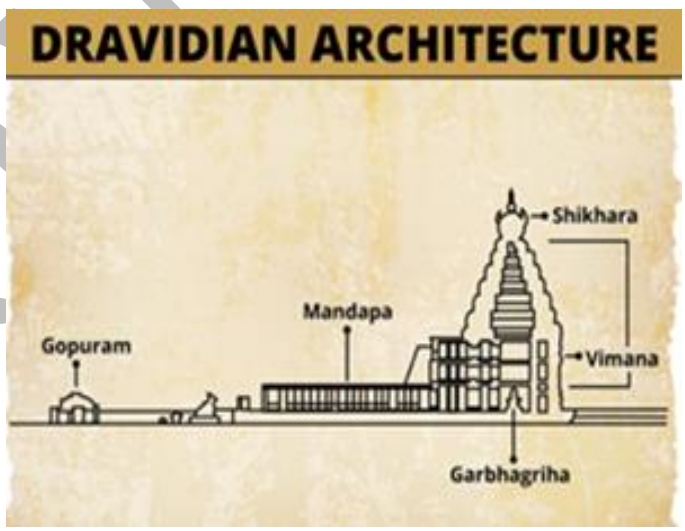

चोल स्थापत्यकला

- चोल शासनकाल के तहत **कला एवं स्थापत्यकला की द्रविड़ शैली** अपनी पराकाष्ठा पर थी। चोल शासकों ने **पल्लव स्थापत्यकला** शैली का अनुसरण किया था। चोलकालीन मंदिरों के गृभगृह वृत्ताकार एवं वर्गाकार दोनों प्रकार के थे।
  - **प्रमुख मंदिरों में शामिल हैं-** राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित गंगैकोण्डचोलपुरम् का शिव मंदिर; पुडुकोट्टई जिले के नार्त्तामलाई में स्थित चोलेश्वर मंदिर एवं कोडुम्बलुर के मंदिर; तिरुचिराप्पल्ली के श्रीनिवासनल्लूर स्थित कोरंगनाथ मंदिर आदि।
- गोपुरम के शीर्ष पर **गुंबदाकार शिखर और कलश** निर्मित किए जाते थे। चोल मंदिर प्रस्तर प्रतिमाओं एवं अलंकरण हेतु विख्यात हैं।
- अनेक मंदिरों में स्तम्भयुक्त मंडप निर्मित किए जाते थे, जिन्हें **अर्द्धमंडप, महामंडप तथा नंदीमंडप** कहा जाता है। प्रतिमाओं एवं अभिलेखों को इन मंदिरों की भित्तियों पर उत्कीर्ण किया जाता था।
- चोल मंदिरों से पाषाण एवं धातु निर्मित मूर्तियां बहुतायत में प्राप्त हुई हैं।

- मंदिरों की भित्तियों पर आख्यानात्मक पट्टिकाओं पर **रामायण, महाभारत एवं पुराणों की कथाओं और 63 नयनारों के जीवन** का चित्रण किया गया है।

- 12वीं सदी ई. की **नटराज मूर्ति** चोलकालीन मूर्तिकला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।
  - इस मूर्ति में 'नटराज शिव' (भगवान शिव) के तांडव नृत्य को लौकिक जगत के संहारक के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
  - शिव को अपने दाहिने पैर पर स्वयं को संतुलित करते हुए तथा दाएं पैर से ही **अज्ञानता अथवा विस्मृति के राक्षस, अपस्मार** का दमन करते हुए दर्शाया गया है।
  - शिव का बायां पैर भुजंग त्रसित मुद्रा में ऊपर उठा हुआ है, जो **तिरोभाव** को प्रस्तुत करता है, अर्थात् उपासकों के मस्तिष्क से माया अथवा भ्रम रूपी आवरण को समाप्त करता है।
  - शिव की चारों भुजाएं फैली हुई हैं तथा **मुख्य दायीं भुजा अभय हस्त मुद्रा** में प्रदर्शित की गई है। इसकी अन्य निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:
    - शिव अपने **ऊपरी दाएं हाथ** में अपने प्रिय वाद्ययंत्र **डमरू को तालबद्ध** रूप में धारण किए हुए हैं।
    - ऊपरी **बाएं हाथ की हथेली से ज्वाला प्रज्ज्वलित** हो रही है, जबकि **मुख्य बाईं भुजा डोला हस्त मुद्रा** में है।
  - भगवान शिव के केश दायीं और बाईं दिशा में लहराते हुए वृताकार ज्वाला की माला को स्पर्श कर रहे हैं। शिव की नृत्यरत मुद्रा इसी ज्वाला से घिरी हुई है।

चोल कला

- **नृत्य:** चोलकाल के दौरान **भरतनाट्यम और कथकली,** इन दो नृत्य कलाओं का प्रदर्शन किया जाता था। भगवान शिव को **करण नृत्य** के प्रतिपादक के रूप में प्रस्तुत किया जाता था।
  - चिदंबरम के नटराज मंदिर तथा कुंभकोणम में स्थित सारंगपाणि मंदिर में भी भगवान नटराज की नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित किया गया है।
- **नाटक: राजराजेश्वर नाटकम् तथा राजराजा विजयम्** का प्रदर्शन त्यौहार के दौरान किया जाता था।
- **चित्रकला:** पेरियापुराणम् के दृश्यों का सुंदरतापूर्वक चित्रण किया गया है। कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर तथा मलैयादिपट्टी स्थित विष्णु मंदिर भी चोल चित्रकला के उत्कृष्ट दृष्टांतों को संरक्षण प्रदान किए हुए हैं।

1.7. सुर्ख़ियों में अन्य स्थापत्यकला संरचनाएं

(Other architecture forms in news)

सुरंगा बावड़ी	• इस स्मारक का चयन वर्ल्ड मॉन्यूमेंट्स फंड (एक **NGO**) द्वारा "दक्कन पठार की प्राचीन जल प्रणाली" के अंतर्गत किया गया है। यह **NGO** विश्व भर में प्राचीन स्मारकों के जीर्णोद्धार की निगरानी करता है। • सुरंगा बावड़ी **कर्नाटक में आदिलशाही युग** में निर्मित भूमिगत सुरंगों के माध्यम से जलापूर्ति की प्राचीन **करेज (Karez) प्रणाली** का अभिन्न भाग थी। • करेज अधिकांशत: मध्य-पूर्व क्षेत्र में पाई जाती है। भारत में करेज प्रणाली कर्नाटक के बीदर, गुलबर्गा और बीजापुर तथा मध्य प्रदेश के बुरहानपुर में भी पायी गई है। • यूसुफ़ आदिल शाह द्वारा स्थापित आदिलशाही राजवंश ने दक्षिण भारत के पश्चिमी दक्कन क्षेत्र में (बीजापुर सल्तनत) **1449 ई. से 1668 ई.** तक शासन किया था।
बेलम गुफाएं	• आंध्रप्रदेश में बेलम गुहलू के नाम से ज्ञात बेलम गुफाएं, **मेघालय की क्रेम लिअत प्राह गुफाओं** के बाद भारतीय उपमहाद्वीप की **दूसरी सर्वाधिक लंबी** गुफाएं हैं।

VISION IAS

जहाज महल	• यह मालवा सल्तनत के सुल्तान **गियासुद्दीन (1469-1500 ई.)** द्वारा निर्मित **दो जलाशयों के मध्य एक** दो मंजिला महल है। • इसका संभवतः उसके द्वारा हरम और विहार एवं मनोविनोद स्थल के रूप में उपयोग किया जाता था। • यह **मध्य प्रदेश के मांडू** में स्थित है।
बीबी का मकबरा	• यह **1651-1661** ई. के दौरान औरंगज़ेब के पुत्र शहजादे **आजम शाह** द्वारा अपनी माता दिलरस बानू बेगम (जिसे राबिया-उल-दौरानी के नाम से भी जाना जाता है) की स्मृति में बनावाया गया मकबरा है। • यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित है। • इसे ताजमहल से अपनी चित्तग्राही समानता के कारण **'दक्कन का ताज'** भी कहा जाता है।
सिरसा का थेर टीला	• हरियाणा के सिरसा जिले में एक टीला है जिसे प्राचीन नगर **सरिषिका** के संबंध में कुछ साक्ष्य उपलब्ध करवाने वाला माना जाता है। • सिरसा को तक्षशिला की ओर जाने वाले प्राचीन मार्ग पर हरियाणा में स्थित प्राचीनतम नगरों में से एक माना जाता है।

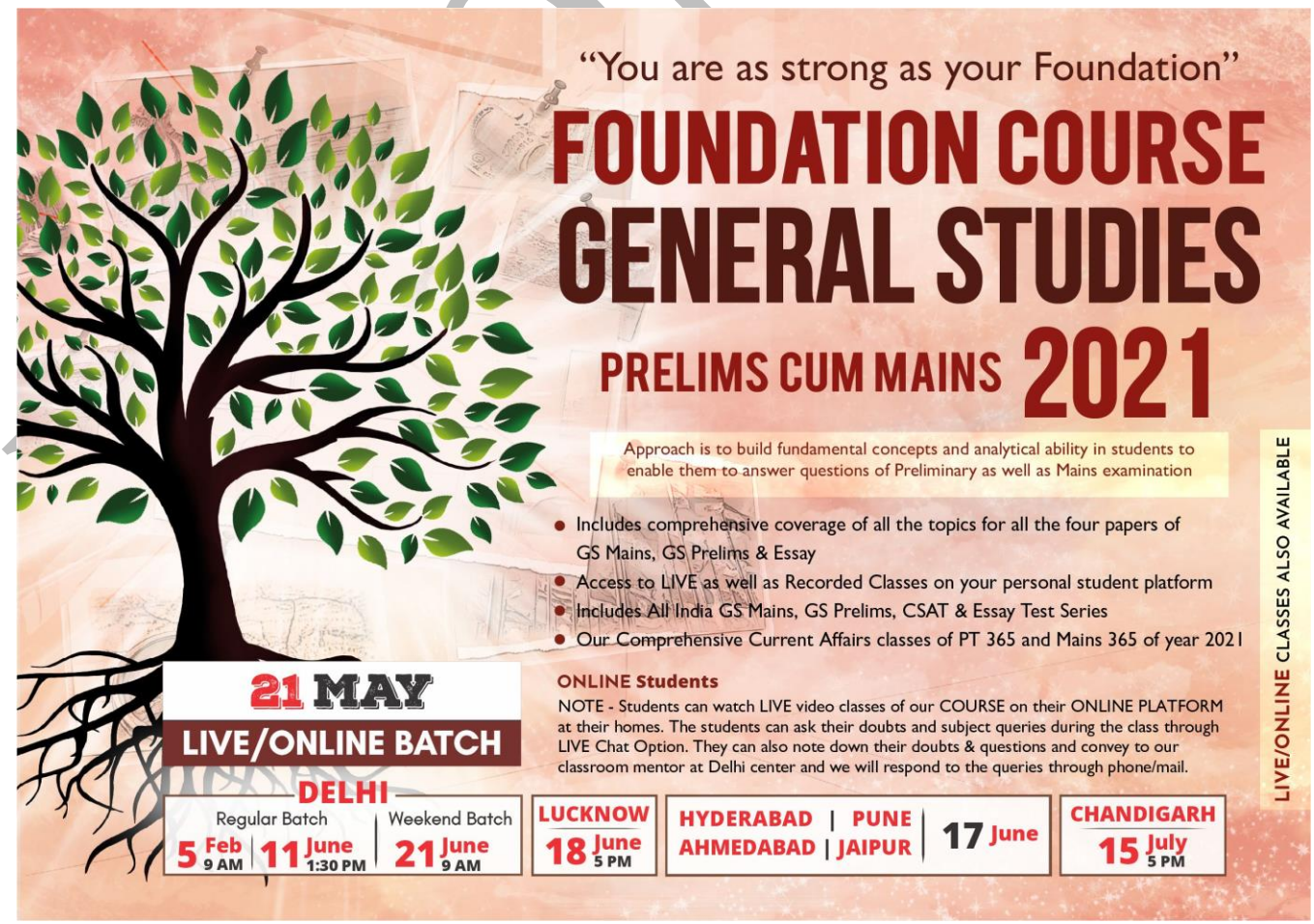

2. चित्रकारी एवं अन्य कला शैलियां

(Paintings & other Art Forms)

2.1. पट्टचित्र

(Pattachitra)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, ओडिशा के तटीय गाँवों में आए **फानी चक्रवात** के कारण **पट्टचित्र कला** के अनेक खण्डों को क्षति पहुंची है।

पट्टचित्र के बारे में

- पट्ट का अर्थ वस्त्र होता है। यह **ओडिशा** की एक परंपरागत वस्त्र आधारित **स्क्रॉल पेंटिंग (कुंडलित चित्रकारी)** है, जो अपनी चित्रात्मक संकल्पना, चित्रकारी की तकनीक, रेखा चित्रण और वर्ण (रंग) योजना के कारण अद्वितीय है।
- ज्ञातव्य है कि इस चित्रकारी का संपादन **महापात्रा** (ओडिशा के कलाकारों की एक जाति) द्वारा किया जाता है।
- अंतरतम गर्भगृह में **भगवान जगन्नाथ** के अलंकरण के साथ यह एक महत्वपूर्ण कला शैली बन गई है।

अन्य संबंधित तथ्य

- पट्टचित्र के अतिरिक्त पैपियर माशे मास्क (Papier Mache Masks) (कुट्टी अर्थात् कागज की लुगदी के मुखौटे व पशु-पक्षी आदि के हस्तशिल्प) और गुड्डे-गुड़ियों पर काष्ठ नक्काशी आदि कलाओं के कारण **रघुराजपुर** (पुरी, ओडिशा) की पहचान एक **विरासत गाँव** के रूप में की गई है।

विशेषताएं

- कलाकार **प्राथमिक चित्रण में पेंसिल या चारकोल का प्रयोग नहीं करते हैं।**
- पट्टचित्र में यह परंपरा प्रचलित रही है कि सर्वप्रथम चित्र के **किनारों को पूर्ण** किया जाता है।
- जब चित्र पूर्णतया निर्मित हो जाता है तब इसे चारकोल की आंच पर रखा जाता है तथा सतह पर लाह (रोगन) का लेप किया जाता है। यह इसे एक चमकदार परिसज्जा प्रदान करने के साथ-साथ इसे **जल-प्रतिरोधी तथा टिकाऊ** बनाता है।
- यह एक अनुशासनात्मक कला शैली है, जिसमें चित्रकार **रंगों एवं प्रतिमानों के प्रयोग में अनम्यता** बनाए रखते हैं तथा **एकल प्रवृत्ति में रंगों का प्रयोग वर्जित होता है।**
- **विषय (थीम): भगवान जगन्नाथ** के मंदिर, उनके भाई बलराम और बहन सुभद्रा, कृष्ण लीला, भगवान विष्णु के अवतार तथा पंचतंत्र, पुराणों, रामायण, महाभारत व गीत गोविंद से पौराणिक एवं लोक कथाओं का चित्रांकन।
- **हस्तशिल्प सामग्री एवं रंग:** रंगलेप में वनस्पति, मृदा एवं खनिज स्रोतों से प्राप्त सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है।
  - **कैथा वृक्ष** से प्राप्त गोंद **मुख्य सामग्री** है तथा इसका विभिन्न वर्णकों के निर्माण हेतु आधार के रूप में प्रयोग किया जाता है।
  - **श्वेत** रंग शंख से, **लाल** रंग हिंगुल (खनिज) से, **पीला** रंग हरिताल पत्थर से और **नीला** रंग रामराजा (नील की एक किस्म) से तैयार किया जाता है तथा **काला** रंग काजल या नारियल के खोल से प्राप्त किया जाता है।
- समय के साथ-साथ पट्टचित्र कला एक **सराहनीय संक्रमण** से गुजर चुकी है तथा वर्तमान में **टसर रेशम और ताड़पत्र** पर भी चित्रकारियां की जा रही हैं तथा साथ ही वाल हैंगिंग्स और प्रदर्शन-वस्तुओं के रूप में भी रचनाएँ की जा रही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण स्क्रॉल पेंटिंग्स:

- **कलमकारी - आंध्र प्रदेश**
- **कालीघाट पाट्स - पश्चिम बंगाल**
- **फड़ चित्रकला - राजस्थान**
- **चेरियाल चित्रकारी - तेलंगाना**
- **पिछवई चित्रकारी - राजस्थान**

VISION IAS

2.2. बगरू ठप्पा छपाई

(Bagru Block Printing)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय कपड़ा मंत्री द्वारा पारंपरिक बगरू ठप्पा छपाई कला को संरक्षित करने हेतु बगरू (राजस्थान) में 'तीतानवाला संग्रहालय' का उद्घाटन किया गया।

बगरू ठप्पा छपाई से संबंधित तथ्य

- यह **राजस्थान के बगरू गाँव** में प्राकृतिक रंगों के साथ **छिप्पा समुदाय** द्वारा की जाने वाली छपाई की एक पारंपरिक तकनीक है।
- परंपरागत रूप से, बगरू पर मुद्रित **रूपांकनों** को गहरी रेखाओं के साथ बड़ा किया जाता है। रूपांकनों में **वन्य पुष्प, कलियाँ, पत्ते और मुद्रित ज्यामितीय प्रतिरूप** शामिल हैं।
- बगरू में मुख्यतः **लाल और काले** रंग का प्रयोग किया जाता है।

भारत की कुछ अन्य महत्वपूर्ण पारंपरिक ठप्पा छपाई तकनीकें निम्नलिखित हैं:

- **गुजरात:** अजरक छपाई
- **राजस्थान:** सांगानेरी, अजरक, डाबू
- **मध्य प्रदेश:** बाघ छपाई, भैरवगढ़ प्रिंट (बाटिक)
- **आंध्र प्रदेश:** कलमकारी

कलकत्ता, सेरामपुर (पश्चिम बंगाल), **वाराणसी** और **फर्रुखाबाद** (उत्तर प्रदेश) भी भारत में ठप्पा छपाई के महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

2.3. अन्य कला शैलियां

(Other Art Forms)

पिथौरा चित्रकला	• हाल ही में, पिथौरा चित्रकारी के कलाकारों ने दिल्ली के 45 से अधिक स्कूलों के छात्रों के लिए इस कला शैली पर अपनी प्रथम कार्यशाला का आयोजन किया। • पिथौरा अनुष्ठानात्मक चित्रकारी है जो गुजरात और मध्य प्रदेश की राठवा, भील तथा नायक जनजातियों द्वारा दीवारों पर बनाई जाती है। • इन चित्रकारियों की विशेषता गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से संलग्न क्षेत्रों के चारों ओर सात पहाड़ियों का निरूपण करने वाले सात अश्व हैं। • इनमें उनके दैनिक जीवन जैसे कि विवाह, त्यौहारों और समारोहों की भी छवियां बनायीं जाती हैं।
सुलावेसी कला	• हाल ही में, **इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप पर एक गुफा चित्रकारी** की खोज की गई है, जो आधुनिक धार्मिक संस्कृति के शुभारंभ को आलोकित कर सकती है। • इस गुफा चित्रकारी में पशुओं का आखेट करते हुए मानव सदृश आकृतियों का चित्रण किया गया है। • **वर्ष 2017** में चूना पत्थर की गुफा में पाई गई इस चित्रकारी की तिथि यूरेनियम-श्रृंखला विश्लेषण का उपयोग करके **लगभग 44,000 वर्ष पूर्व निर्धारित** की गई है।

VISION IAS

3. नृत्य और संगीत

(Dances & Music)

3.1. असमी भाओना

(Assamese Bhaona)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **भाओना कलाकारों के एक समूह ने आबूधाबी** में परंपरागत ब्रजावली भाषा के विपरीत **अंग्रेजी भाषा** में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

भाओना के विषय में

- भाओना, **शंकरदेव** द्वारा सृजित **पौराणिक कथाओं** पर आधारित एक **नाट्य शैली** है।
  - भाओना नाट्य शैली को लोकप्रिय रूप में **अंकिया नाट** के नाम से भी जाना जाता है। भाओना, असम के अंकिआ नाट की प्रस्तुति है तथा इसके मंचन को भाओना कहा जाता है।
- भाओना में सामान्यतया 40-50 लोग भाग लेते हैं तथा **वेषभूषा एवं आभूषण धारण किए हुए कलाकारों** द्वारा आपसी संवाद, संगीत एवं नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है।
- भाओना में ऑर्केस्ट्रा का परिधान पूर्णतया श्वेत होता है तथा अभिनेताओं द्वारा विभिन्न **राजाओं, रानियों, दैत्यों एवं पशुओं का प्रतिनिधित्व करने वाले चमकीले परिधान धारण** किए जाते हैं।
- कलाकार, प्रकाश के एक मेहराबदार पथ से गुजरते हैं, जिसे "अग्नि गढ़" कहा जाता है। वे प्राय: **काव्यात्मक रूप में ब्रजावली भाषा में संवाद** करते हैं।
- मुख्य नाट्य सामान्यतया **गायन-बायन के निष्पादन द्वारा आगे संचालित** होता है।
  - यह एक संगीतमय प्रस्तुति है तथा इसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों **(खोल, ताल, डोबा और नगाड़ा; इन सभी वाद्य यंत्रों का सृजन भी शंकरदेव द्वारा किया गया था)** द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसका निष्पादन विभिन्न कठोर और तीव्र अनुक्रमों तथा विधियों के साथ किया जाता है, जिनके नाम भी भिन्न-भिन्न हैं।

ब्रजावली भाषा के विषय में

- ब्रजावली, भाओना में प्रयुक्त होने वाली एक विशिष्ट भाषा है, जिसका सृजन शंकरदेव द्वारा किया गया था।
- **ब्रजावली का सृजन** इसलिए किया गया था, क्योंकि हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में प्रयुक्त होने वाली मूल भाषा **संस्कृत, सामान्य-जन हेतु समझने में कठिन थी।**
- इसके अतिरिक्त, शंकरदेव की यह इच्छा थी कि असमी जन-सामान्य के साथ संपर्क स्थापित करने हेतु नाटक में किसी अन्य भाषा का प्रयोग किया जाए, **जिन्होंने उनके नाटकों में सामान्य-जन की भाषा बोलने वाले दैवीय पात्रों की अपेक्षा नहीं की थी।**

शंकरदेव

- श्रीमंत शंकरदेव (1449-1568 ई.) **एक महान असमी संत, विद्वान, कवि, नाटककार, समाज सुधारक और असम में वैष्णववाद के प्रणेता थे।**
  - उन्होंने **असम में भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात किया** तथा अपने नव-वैष्णववादी आन्दोलन - **एक शरण नाम धर्म** - के माध्यम से लोगों को एकजुट किया।
- शंकरदेव ने अपने काव्यों, नाटकों (अंकिया नाट) और गीतों (बरगीत व भटिमा) के माध्यम से असमी भाषा तथा साहित्य को समृद्ध किया।
- वे असमी शास्त्रीय नृत्य - **सत्रिया** - के भी सृजनकर्ता थे।

VISION IAS

3.2. सुर्ख़ियों में अन्य निष्पादन कला शैलियां

(Other performing Art Forms in News)

गतका/गटका	• यह पंजाब राज्य की एक **प्राचीन मार्शल आर्ट शैली** है। • वस्तुत: **गतका** शब्द प्रशिक्षण में प्रयुक्त होने वाली एक काष्ठ छड़ को संदर्भित करता है, जिसे **'खुतका'** कहा जाता है। • यह माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति तब हुई जब मुगल काल के दौरान **छठे सिख गुरु हरगोबिंद जी ने आत्म-रक्षार्थ 'कृपाण' धारण** किया था।
कलरीपायट्टु	• कलरीपायट्टु **केरल** की प्राचीनतम **मार्शल आर्ट शैलियों** में से एक है, जिसकी उत्पत्ति तृतीय शताब्दी ई. पू. में हुई थी। • कलरीपायट्टु तकनीक में पदचालन और मुद्राओं का संयोजन समाहित है।
यक्षगान	• यह पौराणिक कथाओं और पुराणों पर आधारित **कर्नाटक** की **परंपरागत नाट्य शैली** है। सर्वाधिक प्रसिद्ध उपकथाएँ **महाभारत एवं रामायण** हैं। • यह विशिष्ट शैलियों एवं रूपों में नृत्य, संगीत, संवाद, परिधान, श्रृंगार और मंचन तकनीक का संयोजन है। • 'यक्ष' का अर्थ गौण देवता होता है तथा गान का तात्पर्य गायन से है। • यह विश्वास किया जाता है कि इसकी उत्पत्ति 11वीं एवं 15वीं सदी ई. के मध्य भक्ति आंदोलन के दौरान हुई थी।
खोन रामलीला	• हाल ही में, उत्तर प्रदेश सरकार के **संस्कृति विभाग** द्वारा थाईलैंड सरकार के सहयोग से **लखनऊ** में खोन रामलीला के प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। • खोन **थाईलैंड का एक प्रसिद्ध मुखौटा नृत्य नाटक** तथा एक निष्पादन कला है, जिसमें रमणीय नृत्य गतिविधियाँ, वाद्ययंत्र एवं गायन अभिनय तथा चटकीले परिधान शामिल होते हैं, जो श्रीराम की महिमा का गुणगान करते हैं। • इसमें कोई संवाद नहीं होता है तथा पार्श्विक स्वरों द्वारा **रामायण की संपूर्ण कथा का वाचन** किया जाता है। • थाईलैंड की खोन रामलीला **यूनेस्को (UNESCO) की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत** सूची में सूचीबद्ध है।
मल्लखंब	• यह एक पारंपरिक भारतीय क्रीड़ा है, जिसमें एक जिम्नास्ट एक लंबवत काष्ठ स्तंभ अथवा रस्से के साथ कंसर्ट में भिन्न-भिन्न मुद्राओं में प्रदर्शन करता है। मल्लखंब शब्द खेल में प्रयुक्त स्तंभ को ही संदर्भित करता है। • मल्लखंब की उत्पत्ति संभवत: **12वीं सदी ई.** में हुई थी, जिसका 1135 ई. में चालुक्यों की एक उत्कृष्ट कृति मानस-ओल्हास में उल्लेख मिलता है। • लगभग सात सदी उपरांत (लगभग 19वीं सदी ई. के प्रथम अर्द्धांश के दौरान) पेशवा बाजीराव द्वितीय के शिक्षक **बालम भट्ट दादा देवधर** द्वारा इसका पुनर्प्रचलन किया गया। • यह **मध्य प्रदेश का राजकीय खेल** भी है।

VISION IAS

4. भाषा एवं साहित्य

(Languages and Literature)

4.1. शास्त्रीय भाषा

(Classical Language)

सुर्ख़ियों में क्यों

- हाल ही में, आयोजित अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें मराठी भाषा को 'शास्त्रीय भाषा' के रूप में घोषित करने की मांग की गई।

अन्य संबंधित तथ्य

- **यह सम्मेलन, मराठी लेखकों का एक वार्षिक संगम** है और इसकी शुरुआत 1878 ई. में हुई थी।
  - उल्लेखनीय है कि कई प्रमुख **मराठी बुद्धिजीवियों द्वारा इसकी अध्यक्षता** की गई है, जिनमें जस्टिस महादेव गोविंद रानाडे, बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय और प्रहलाद केशव "आचार्य" अत्रे शामिल हैं।
- वर्तमान में **छह भाषाओं, यथा- तमिल (वर्ष 2004 में घोषित), संस्कृत (वर्ष 2005 में घोषित), कन्नड़ (वर्ष 2008 में घोषित), तेलुगु (वर्ष 2008 में घोषित), मलयालम (वर्ष 2013 में घोषित)** और **ओडिया (वर्ष 2014 में घोषित)** को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।
- संस्कृति मंत्रालय के अनुसार, एक भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करने हेतु दिशा-निर्देश निम्नलिखित हैं:
  - संबंधित भाषा के प्रारंभिक ग्रंथ/अभिलिखित इतिहास 1,500-2,000 वर्षों की अवधि से अधिक प्राचीन होने चाहिए;
  - प्राचीन साहित्य / ग्रंथों का एक निकाय, जिसे वक्ताओं की पीढ़ियों द्वारा एक मूल्यवान धरोहर माना गया हो;
  - साहित्यिक परंपरा मौलिक होनी चाहिए न कि अन्य वक्ता समुदाय से गृहीत की गई हो;
  - शास्त्रीय भाषा और साहित्य आधुनिक साहित्य से विशिष्ट हो तथा शास्त्रीय भाषा व इसके उत्तरवर्ती रूपों या इसकी उप-शाखाओं के मध्य एक असातत्य भी हो सकता है।
- शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त होने के निम्नलिखित लाभ हैं:
  - भारतीय शास्त्रीय भाषाओं में प्रख्यात विद्वानों को प्रति वर्ष **दो प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।**
  - शास्त्रीय भाषाओं में अध्ययन के लिए एक **उत्कृष्टता केंद्र** स्थापित किया गया है।
  - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा इन भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु शोध परियोजनाओं को पुरस्कृत किया जाता है तथा **केंद्रीय विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय भाषाओं के लिए एक निश्चित संख्या में संव्यावसायिक पद (प्रोफेशनल चेयर) सृजित किए गए हैं।**

4.2. उर्दू

(Urdu)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, पंजाब विश्वविद्यालय ने स्कूल ऑफ़ फॉरेन लैंग्वेजेज में उर्दू भाषा विभाग का विलय करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। इस प्रस्ताव की इस आधार पर आलोचना की गई है कि उर्दू एक भारतीय भाषा है।

उर्दू के विषय में

- **उर्दू, भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 आधिकारिक भाषाओं में से एक है।**
- **यह भारतीय करेंसी नोटों पर लिखित 15 भारतीय भाषाओं में से एक है।**

VISION IAS

- यह तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों तथा जम्मू-कश्मीर एवं दिल्ली जैसे संघ शासित प्रदेशों की आधिकारिक भाषाओं में से एक है।
- उर्दू, हिंदी से घनिष्ट रूप से संबंधित है। ये दोनों भाषाएँ स्वर विज्ञान और व्याकरण में अत्यंत समरूप हैं।
- विशेषज्ञों के अनुसार **उर्दू भाषा का उद्भव और विकास भारत में छठी से तेहरवीं शताब्दी ई. के मध्य हुआ था।**
- सभी ऐतिहासिक संदर्भों से यह संकेत मिलता है कि उर्दू का उद्भव भारत के पंजाब राज्य में हुआ था।
- उर्दू की मुख्य बोलियाँ, देहलवी, रेख्ता आदि हैं।
- अपनी फ़ारसी लिपि के बावजूद, उर्दू एक भारतीय भाषा है, क्योंकि ऐसी कई भारतीय भाषाएँ, जो देश के बाहर व्युत्पन्न लिपियों में लिखी जाती हैं (उदाहरणार्थ- पंजाबी शाहमुखी भाषा को भी दाईं से बाईं ओर लिखा जाता है)।
- पंजाब में अपने उद्भव के पश्चात्, यह हरियाणा के कुछ हिस्सों और दक्षिण भारत के कुछ राज्यों के साथ-साथ दिल्ली में विकसित व पल्लवित हुई तथा दक्षिण में इसका **दक्खनी (दक्कन) भाषा** के रूप में विकास हुआ।

4.3. स्वदेशी भाषाएँ

(Indigenous Languages)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2019 को **'स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' (International Year of Indigenous Languages)** घोषित किया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), **"लुप्तप्राय भाषाओं हेतु केंद्रों की स्थापना" (Establishment of Centres for Endangered Languages)** के नाम से एक योजना का संचालन कर रहा है, जिसके तहत 9 केंद्रीय विश्विद्यालयों में विभिन्न केंद्रों को अनुमोदित किया गया है।
- जिन बोलियों को लिखने के लिए देवनागरी लिपि उपलब्ध नहीं है, उन बोलियों के संरक्षण हेतु UGC ने विभिन्न विश्विद्यालयों में **देवनागरी लिपि विभाग** की स्थापना के लिए विश्विद्यालयों से प्रस्ताव भी आमंत्रित किए हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- **पापुआ न्यू गिनी 'प्रचलित' स्वदेशी भाषाओं की अधिकतम संख्या (840) के साथ** विश्व में प्रथम स्थान पर है, जबकि भारत को 453 भाषाओं के साथ चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ है।
- महाद्वीपों में एशिया और अफ्रीका में स्वदेशी भाषाओं की संख्या सर्वाधिक (विश्व की कुल स्वदेशी भाषाओं के 70% से अधिक) है।
- यूनेस्को (UNESCO) के 'एटलस ऑफ़ द वर्ल्डस लैंग्वेजेज इन डेंजर' के अनुसार **वर्ष 1950 के पश्चात् से 228 भाषाएँ विलुप्त** हो गई हैं।
- लगभग 10% भाषाओं को 'वल्नरेबल' जबकि अन्य 10% को 'क्रिटिकली इंडेंजर्ड' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- **भारत** में वर्ष 1950 से अब तक **पांच भाषाएँ 'विलुप्त' (extinct) हो गई हैं,** जबकि 42 भाषाएँ 'क्रिटिकली इंडेंजर्ड' हैं।
- केंद्र सरकार लगभग 10,000 से भी कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली देश की सभी मातृभाषाओं एवं भाषाओं की सुरक्षा, संरक्षण और प्रलेखन हेतु **'भारत की संकटग्रस्त भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण हेतु योजना' (Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages of India: SPPEL)** का कार्यान्वयन कर रही है।

- इस कार्यक्रम के अंतर्गत बोलियों (dialects) को भी शामिल किया गया है।
- इस योजना का क्रियान्वयन मैसूर स्थित **केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (Central Institute of Indian Languages: CIIL)** द्वारा किया जा रहा है।

अतिरिक्त जानकारी

सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा

- ऑनलाइन डेटाबेस एँथनोलॉग के अनुसार संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा **अंग्रेजी** एवं उसके पश्चात् **मंडारिन** तथा **हिंदी** का स्थान है। सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में बंगाली का स्थान **सातवाँ** है।
- जनगणना 2011 के अनुसार भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा **हिंदी** (528 मिलियन लोगों द्वारा बोली जाती है) है, उसके पश्चात् **बंगाली** (97.2 मिलियन), **मराठी** (83 मिलियन), **तेलुगू** (81 मिलियन), **तमिल** (69 मिलियन), **गुजराती** (55.5 मिलियन) और **उर्दू** (50.8 मिलियन) का स्थान है।

5. यूनेस्को की पहलें

(Initiatives of UNESCO)

5.1. यूनेस्को विश्व विरासत स्थल

(UNESCO World Heritage Sites)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, गुलाबी नगरी **जयपुर** को **यूनेस्को (UNESCO) विश्व विरासत स्थल का दर्जा** प्राप्त हुआ।

पृष्ठभूमि

- वर्ष 2017 में, **ओल्ड अहमदाबाद शहर** 'विरासत शहर' का दर्जा प्राप्त करने वाला **भारत का प्रथम शहर था।**
- जयपुर के समावेशन के साथ ही यूनेस्को विश्व विरासत स्थलों की सूची में संपूर्ण भारत के विरासत स्थलों की संख्या बढ़कर **38** हो गई है, जिनमें **30 सांस्कृतिक स्थल, 7 प्राकृतिक स्थल और 1 मिश्रित स्थल हैं।**
- भारत द्वारा जयपुर शहर का नामांकन **"दक्षिण एशिया में स्वदेशी शहर नियोजन और निर्माण का एक असाधारण शहरी उदाहरण"** के रूप में किया गया था।

जयपुर शहर के विषय में - नगर नियोजन

- भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्य राजस्थान के दुर्गीकृत शहर जयपुर की स्थापना सवाई राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा 1727 ई. में की गई थी।
    - जयपुर शहर **उत्तर मध्यकालीन नगर नियोजन एवं स्थापत्यकला** के क्षेत्र में अपने अनुकरणीय विकास हेतु सुविख्यात है।
    - पहाड़ी क्षेत्र में अवस्थित प्रदेश के अन्य शहरों के विपरीत, जयपुर शहर की स्थापना मैदानी अंचल में की गई तथा इसका निर्माण **वैदिक स्थापत्य** के आलोक में वर्णित **ग्रिड योजना** के अनुसरण में किया गया है।
    - शहर का नगर नियोजन वस्तुत: प्राचीन हिन्दू और उत्तरी मध्यकालीन मुगल के साथ-साथ पश्चिमी संस्कृतियों से विचारों के आदानप्रदान को प्रदर्शित करता है।
    - एक **वाणिज्यिक राजधानी** के रूप में अभिकल्पित जयपुर शहर ने वर्तमान में भी अपनी व्यावसायिक, कलात्मक एवं सहयोगी परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए रखा है।
- **गोविंद देव मंदिर, आमेर दुर्ग, सिटी पैलेस, जंतर-मंतर, हवा महल** इत्यादि जैसे प्रतिष्ठित स्मारकों के कारण जयपुर शहर को एक मुख्य पर्यटन स्थल का गौरव प्राप्त है। यह शहर अपनी जीवंत मूर्त संस्कृति और विरासत के लिए भी प्रसिद्ध है।

विश्व विरासत समिति (World Heritage Committee) के बारे में

- यह विश्व धरोहर अभिसमय के क्रियान्वयन हेतु उत्तरदायी एक कार्यकारी निकाय है।
- विश्व धरोहर अभिसमय एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है, जिसे यूनेस्को के सदस्य राष्ट्रों द्वारा वर्ष **1972** में अंगीकृत किया गया था।
- **इस अभिसमय का प्राथमिक लक्ष्य, उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य वाली विश्व की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत की पहचान करना और उन्हें संरक्षण** प्रदान करना है।
- इस अभिसमय का रणनीतिक उद्देश्य **"विश्वसनीयता, संरक्षण, क्षमता-निर्माण, संचार, समुदाय" अर्थात् 'फाइव Cs' (Credibility, Conservation, Capacity-building, Communication, Communities)** पर आधारित है।
- यह अभिसमय विरासत संरक्षण के लिए **जागरूकता बढ़ाने के उत्प्रेरक** के रूप में कार्य करता है।

VISION IAS

- इस अभिसमय के तहत स्थापित **वर्ल्ड हेरिटेज फंड विश्व विरासत स्थलों की पहचान, संरक्षण और प्रोत्साहन हेतु** सदस्य राष्ट्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- यूनेस्को (UNESCO) के अंतर्गत एक विश्व विरासत स्थल के रूप में नामित होने हेतु एक शहर को (i) **'उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य' (outstanding universal value)** का होना चाहिए तथा (ii) उसे अपनी विरासत की सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध होना आवश्यक है।

यूनेस्को (UNESCO)

- यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषीकृत एजेंसी है, जिसका मुख्यालय पेरिस में स्थित है।
- इसका घोषित उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में उल्लिखित मूलभूत स्वतंत्रता के साथ-साथ न्याय, विधि के शासन और मानव अधिकारों के प्रति सार्वभौमिक सम्मान में वृद्धि करते हुए शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक सुधारों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर शांति व सुरक्षा में योगदान करना है।
- ज्ञातव्य है कि **संयुक्त राज्य अमेरिका और इजराइल** ने 31 दिसम्बर 2018 को **UNESCO की सदस्यता का त्याग** कर दिया था।

सुर्ख़ियों में रहे भारत के अन्य विश्व विरासत स्थल

तट मंदिर (मामल्लपुरम)	• यह **द्रविड़ शैली** में निर्मित एक संरचनात्मक मंदिर है, जिसका निर्माण **नरसिंहवर्मन द्वितीय** द्वारा 700–728 ई. के मध्य करवाया गया था। यह मंदिर ग्रेनाइट पाषाण खंडों से निर्मित है।
अजंता और एलोरा की गुफाएं (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)	• अजंता की गुफाएं शैलोत्कीर्ण बौद्ध गुफाएं हैं तथा इनका निर्माण द्वितीय सदी ई. पू. से 480 ई. के मध्य किया गया था। • एलोरा गुफाएं विश्व का विशालतम शैलोत्कीर्ण मठ-मंदिर गुफा परिसर है, जिसमें **बौद्ध, हिन्दू एवं जैन** स्मारक विद्यमान हैं, जिनका निर्माण 600 से 1000 ई. हुआ था।
बोधगया स्थित महाबोधि मंदिर	• महाबोधि मंदिर परिसर भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है। यह विशेष रूप से उनकी **ज्ञान प्राप्ति** से संबद्ध है। • **प्रथम मंदिर का निर्माण सम्राट अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ई. पू.** में करवाया गया था तथा वर्तमान मंदिर 5वीं या 6वीं शताब्दी से संबंधित है। • यह पूर्णतया ईंटों से निर्मित प्रारंभिक बौद्ध मंदिरों में से एक है।
हम्पी स्थित पाषाण निर्मित रथ (Stone Chariot at Hampi)	• **विट्ठल मंदिर परिसर** (यूनेस्को विश्व विरासत स्थल) में निर्मित यह रथ **गरुड़ को समर्पित** एक पवित्र संरचना है। यह मंदिर **कर्नाटक** में **तुंगभद्रा** नदी के तट पर हम्पी में अवस्थित है। • हम्पी रथ भारत के प्रमुख रथों में से एक है। अन्य प्रमुख रथ हैं - कोणार्क (ओडिशा) का रथ मंदिर तथा महाबलीपुरम (तमिलनाडु) स्थित रथ मंदिर। • इस रथ का निर्माण 16वीं सदी ई. में **विजयनगर साम्राज्य के शासक कृष्णदेवराय** द्वारा करवाया गया था। ज्ञातव्य है कि कृष्णदेवराय ओडिशा में एक युद्ध के दौरान कोणार्क सूर्य मंदिर के रथ से अत्यधिक प्रभावित हुए थे।

VISION IAS

5.1.1. यूनेस्को विश्व विरासत स्थलों की संभावित सूची

(Tentative List of UNESCO World Heritage Sites)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, यूनेस्को (UNESCO) ने **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** द्वारा प्रेषित प्रस्ताव पर मध्यप्रदेश के **ओरछा शहर** और **कैलाश मानसरोवर** के भारतीय भाग को विश्व विरासत स्थलों की अपनी संभावित सूची में शामिल किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **ओरछा के बारे में**
  - इसे **सांस्कृतिक विरासत** की सूची में शामिल करने हेतु ASI द्वारा अनुरोध किया गया है।
  - इस ऐतिहासिक बस्ती का नाम एक लोकोक्ति **'ओंदो छे'** से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'निम्न' या 'प्रच्छन्न'।
  - **बेतवा नदी** के तट पर अवस्थित ओरछा नगर का निर्माण **16वीं सदी** में बुंदेला राजवंश के शासक **राजा रूद्र प्रताप सिंह** द्वारा करवाया गया था।
  - बुंदेला स्थापत्य में मुगल प्रभाव परिलक्षित होता है।
  - यह अपने **चतुर्भुज मंदिर,** ओरछा किला परिसर, राजमहल आदि हेतु प्रसिद्ध है।
  - इसके अतिरिक्त ओरछा **सावन और भादों नामक दो ऊँची मीनारों,** अपने चार महलों, यथा- जहाँगीर महल, राजमहल, शीशमहल व राय प्रवीन महल तथा खुले बंगलों, प्रस्तर नक्काशी युक्त खिड़कियों व पशु मूर्तियों के रूप में बुंदेलखंड की संस्कृति का चित्रण करने वाली अपनी अवधारणा हेतु भी प्रसिद्ध है।
  - यह संपूर्ण **भारत का एकमात्र स्थल है** जहां भगवान राम की अराधना एक देवता के रूप में नहीं बल्कि एक राजा के रूप में की जाती है तथा उन्हें समर्पित एक मंदिर भी है, जिसे **श्रीराम राजा मंदिर** कहा जाता है।

कैलाश मानसरोवर के बारे में

- इसे **मिश्रित श्रेणी** (प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत दोनों रूपों में) में स्वीकार किया गया है।
- यह स्थल **पूर्व में नेपाल के साथ तथा उत्तर में चीन के साथ सीमा** साझा करता है।
- भारतीय स्थल **'कैलाश पवित्र भूमि'** के रूप में संदर्भित 31,000 वर्ग किलोमीटर के एक विशाल भूखंड का भाग है, जो चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के सुदूर दक्षिणी-पश्चिमी भाग तथा नेपाल के सुदूर पश्चिमी क्षेत्र के जिलों तक विस्तारित है। इस स्थल में **कैलाश पर्वत** और **मानसरोवर झील** अवस्थित हैं।
- कैलाश पर्वत **चार प्रमुख नदियों** का उद्गम स्थल भी है, यथा- सिंधु, ब्रह्मपुत्र, कर्णाली और सतलज।
- विदेश मंत्रालय द्वारा दो भिन्न मार्गों, यथा- **लिपुलेख (उत्तराखंड) तथा नाथुला दर्रों (सिक्किम)** के माध्यम से प्रत्येक वर्ष कैलाश यात्रा का आयोजन करवाया जाता है।

5.1.2. ईरान की सांस्कृतिक धरोहर

(Iran's Cultural Heritage)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, अमेरिकी राष्ट्रपति ने ईरान को चेतावनी दी थी कि यदि वह प्रतिशोधपूर्ण कार्रवाई में किसी अमेरिकी संपत्ति पर हमला करता है, तो अमेरिका द्वारा **ईरान और ईरानी संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण** उसके 52 स्थलों को लक्षित किया जाएगा।

VISION IAS

अन्य संबंधित तथ्य

- ईरान, **10,000 ई. पू. की विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है।**
- ईरान के कुछ **महत्वपूर्ण विश्व विरासत स्थल अग्रलिखित हैं:** इस्फ़हान में **मीदन इमाम** और **मस्जिद-ए-ज़मीं**, तेहरान में **गोलेस्तान पैलेस**, **पसारागडे और पर्सेपोलिस** (छठी सदी ई. पू. में स्थापित अख़ामनी साम्राज्य की राजधानियाँ) और **तख्त-ए-सोलेमन** (पारसियों का प्राचीन पवित्र स्थल)।
- **सशस्त्र संघर्ष की स्थिति में सांस्कृतिक सम्पत्ति के संरक्षण के लिए अभिसमय, 1954 {Convention for the Protection of Cultural Property in the Event of Armed Conflict (1954)}:** यह एक एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है, जो विशेष रूप से युद्ध और सशस्त्र संघर्ष के दौरान सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा पर केंद्रित है।
  - **यह अभिसमय सांस्कृतिक संपत्ति** को "प्रत्येक व्यक्ति की सांस्कृतिक धरोहर के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण चल अथवा अचल सम्पत्ति" के रूप में परिभाषित करता है, जैसे- स्थापत्य, कला या ऐतिहासिक (या तो ये धार्मिक हो सकते हैं अथवा लौकिक) स्मारक; पुरातात्विक स्थल आदि।
  - वर्तमान में **133 देशों ने इस अभिसमय पर हस्ताक्षर** किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान के साथ-साथ **भारत** ने भी इस पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **रोम संविधि, 1998:** यह अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय की संस्थापक संधि है, जो किसी ऐतिहासिक स्मारक या धर्म, शिक्षा, कला अथवा विज्ञान के प्रति समर्पित इमारत पर किसी अंतर्राष्ट्रीय हमले को एक "युद्ध अपराध" के रूप में घोषित करती है।
  - 122 देशों ने रोम संविधि पर हस्ताक्षर किए हैं। अमेरिका इस संविधि का एक हस्ताक्षरकर्ता देश है, किंतु इसने अभी तक इसकी अभीपुष्टि नहीं की है। **भारत द्वारा न तो इस पर हस्ताक्षर किए गए हैं और न ही इसकी अभिपुष्टि की गयी है।**

5.2. यूनेस्को का क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क

(UNESCO's Creative Cities Network: UCCN)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, यूनेस्को ने वर्ल्ड सिटीज डे (विश्व शहर दिवस : 31 अक्टूबर) के अवसर पर **मुंबई** और **हैदराबाद** सहित विश्व के 66 शहरों को 'क्रिएटिव सिटीज' के नेटवर्क में शामिल करने की घोषणा की।

अन्य संबंधित तथ्य

- मुंबई को **क्रिएटिव सिटी ऑफ़ फिल्मस** और हैदराबाद को **क्रिएटिव सिटी ऑफ़ गैस्ट्रोनॉमी (पौष्टिक भोजन बनाने की कला या विज्ञान)** के तौर पर नामित किया गया है।
- इससे पूर्व, यूनेस्को ने **चेन्नई** और **वाराणसी** को सिटीज ऑफ़ म्यूजिक (संगीत का शहर) तथा **जयपुर** को सिटी ऑफ़ क्राफ्ट्स एंड फॉल्क आर्ट्स (शिल्प एवं लोक कलाओं का शहर) के तौर पर इस नेटवर्क में शामिल किया था।

यूनेस्को के क्रिएटिव सिटीज (रचनात्मक शहर) नेटवर्क के बारे में

- इस पहल को वर्ष 2004 में उन शहरों के साथ और उनके मध्य **सहयोग को प्रोत्साहन प्रदान** करने के लिए प्रारम्भ किया गया था, जिन्होंने रचनात्मकता को संधारणीय शहरी विकास के लिए एक रणनीतिक कारक के रूप में मान्यता प्रदान की है।
- वर्तमान में इस नेटवर्क के तहत सम्मिलित शहर एक साझा उद्देश्य की दिशा में एक साथ कार्य कर रहे हैं:
  - रचनात्मकता एवं सांस्कृतिक उद्योगों को स्थानीय स्तर पर उनकी विकास योजनाओं के केंद्र में रखना और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय सहयोग स्थापित करना।
- इस नेटवर्क में शामिल होने के उपरांत, शहर सांस्कृतिक गतिविधियों, वस्तुओं और सेवाओं के सृजन, उत्पादन, वितरण एवं प्रसार को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु अपनी **सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा** करने तथा साझेदारी विकसित करने के लिए सार्वजनिक, निजी क्षेत्रों और नागरिक समाज के साथ प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

VISION IAS

- इस नेटवर्क के अंतर्गत निम्नलिखित **सात रचनात्मक क्षेत्र** (seven creative fields) सम्मिलित हैं:
  - शिल्प और लोक कला (Crafts and Folk Arts);
  - मीडिया आर्ट्स;
  - फिल्म;
  - डिज़ाइन;
  - पाक-कला (Gastronomy);
  - साहित्य; तथा
  - संगीत।
- पूर्व में, **3 भारतीय शहरों को UCCN के सदस्यों** के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी। ये शहर हैं: **जयपुर**- क्राफ्ट्स एंड फॉल्क आर्ट्स (वर्ष 2015); **वाराणसी** - क्रिएटिव सिटी ऑफ़ म्यूजिक (वर्ष 2015) तथा **चेन्नई** - क्रिएटिव सिटी ऑफ़ म्यूजिक (वर्ष 2017)।
- यूनेस्को के सांस्कृतिक पहलों से संबंधित सभी मामलों के लिए **संस्कृति मंत्रालय** नोडल मंत्रालय है।

6. त्यौहार

(Festivals)

6.1. अंबुबाची मेला

(Ambubachi Mela)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, असम में पूर्वोत्तर भारत के सबसे बड़े धार्मिक त्यौहारों में से एक अंबुबाची मेले का उत्सव मनाया गया।

अंबुबाची मेला के विषय में

- यह **ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर गुवाहाटी (असम) की नीलांचल पहाड़ियों पर स्थित कामाख्या मंदिर में 4 दिनों तक आयोजित किया जाने वाला वार्षिक उत्सव** है।
- कामाख्या मंदिर 51 शक्ति पीठों में से एक है जो शिव की पत्नी सती के शरीर के विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। **इसे तांत्रिक पंथ की एक प्रमुख पीठ माना जाता है।**
- यह मंदिर वह स्थल है जहां हिंदू देवी सती का मृत्यु तक दहन होते समय उनका गर्भ और जननांग गिरा था। मंदिर के गर्भगृह में वह योनी - मादा जननांग- है जिसका प्रतीक एक चट्टान है।
- इस चार दिवसीय आयोजन के दौरान यह माना जाता है कि मंदिर की **अधिष्ठात्री देवी कामाख्या** (प्रजनन की देवी) **अपने रजोधर्म के वार्षिक चक्र** से गुजरती हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

खर्ची महोत्सव

- यह चौदह देवताओं और भू-देवी की पूजा करने के लिए त्रिपुरा के ओल्ड अगरतला में **चतुर्दश देवता मंदिर (14 देवताओं का मंदिर)** में एक सप्ताह तक आयोजित होने वाला पर्व है।
- यह पूजा **पापों को विनष्ट करने और भू-देवी के रजोधर्म के उपरांत रजोधर्म निवृत्ति चरण को साफ करने** के लिए की जाती है।
- यह **पूजा अम्बुबची मेला के** 15 **दिन बाद की जाती** है।
- पूजा के दिन चौदह देवताओं को **सैद्रा नदी** में ले जाया जाता है।
- पूर्वकालीन समय में **त्रिपुरा के शासक 14 देवी-देवताओं की पूजा करते थे,** परन्तु कालांतर में यह सामान्य-जन का त्यौहार बन गया।
- पशु बलि इस त्यौहार का एक महत्वपूर्ण भाग है और इसमें बकरियों तथा कबूतरों की बलि भी सम्मिलित है।

भारत में तंत्रवाद

- तंत्रवाद की उत्पत्ति का इतिहास **हड़प्पा सभ्यता** से जुड़ा हुआ है, जो लगभग **2700** से **1750** ई. पू. के मध्य तक अस्तित्वमान थी।
- हालांकि, लगभग **छठी शताब्दी ईस्वी** से तंत्रवाद का प्रसार **भारत के धार्मिक क्षेत्र में सर्वाधिक उल्लेखनीय विकास था।**
- तंत्रवाद में स्त्रियां और शूद्र दोनों भाग लेते थे और जादुई अनुष्ठानों पर अत्यधिक बल दिया जाता था।
- इनका उद्देश्य भक्तों की भौतिक सुख-संपत्ति की इच्छाओं की पूर्ति करना और दिन-प्रतिदिन के रोगों और चोटों का उपचार करना था।
- ब्राह्मणों ने कई आदिवासी अनुष्ठानों और जादू-टोनों को अपना लिया था, जिन्हें अब उनके द्वारा आधिकारिक तौर पर संकलित, प्रायोजित और प्रोत्साहित किया जाने लगा था।
- तंत्रवाद **जैन धर्म**, **बौद्ध धर्म**, **ईसाई धर्म**, **शैवमत और वैष्णवमत** में भी व्याप्त हो गया।
  - **मंडल** तांत्रिक (तिब्बती) बौद्ध धर्म में पवित्र कला रचनाएं हैं।
- आधुनिक तंत्र योग की समझ का सर्वप्रथम **आगम** के रूप में ज्ञात वैदिक धर्मशास्त्र में विस्तृत विवरण दिया गया था।

VISION IAS

6.2. लाई हराओबा

(Lai Haraoba)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, लाई हराओबा उत्सव मनाया गया।

लाई हराओबा के विषय में

- **यह मणिपुर के मेइती समुदायों द्वारा मनाया जाने वाला** एक पांच दिवसीय अनुष्ठानिक त्यौहार है।
- लाई हराओबा का अर्थ 'देवताओं का उत्सव' या देवताओं को प्रसन्न करना होता है।
- यह त्यौहार **ब्रह्मांड के सृजन** और पशुओं, पौधों तथा मनुष्य के विकास के स्मरण में मनाया जाता है।
- यह त्यौहार मणिपुर राज्य के आराध्यदेव **उमंग लाई** के सम्मान में मनाया जाता है।
- इस त्यौहार के दौरान, पुरुष और स्त्रियां देवी एवं देवताओं की मूर्तियों के समक्ष नृत्य करते हैं और साथ ही नृत्य नाटक, **खंबा एवं थोइबी** के अभिनय का प्रदर्शन करते हैं, जो प्रचलित लोककथाओं के नायक एवं नायिका हैं।
- यह मौखिक साहित्य, संगीत, नृत्य और अनुष्ठानों के माध्यम से मनाया जाता है।
- **मेइती के संबंध में**
  - मेइती मणिपुर राज्य का **बहुसंख्यक नृजातीय समूह** है।
  - मेइती की काफी बड़ी आबादी **असम, मेघालय और त्रिपुरा** जैसे पड़ोसी राज्यों तथा बांग्लादेश एवं म्यांमार के समीपस्थ क्षेत्रों में भी आवासित है।
  - मेइती मेइतिलोन (मणिपुरी) बोलते हैं जो एक **तिब्बती-बर्मी** भाषा है। यह (मणिपुरी) भारत की आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त भाषाओं में से एक है, जिसे वर्ष 1992 में संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया था।

6.3. ज़ो कुटपुई

(ZO KUTPUI)

सुर्ख़ियों में क्यों?

मिज़ोरम सरकार ने देश के कम से कम 10 राज्यों और अमेरिका, म्यांमार एवं बांग्लादेश जैसे देशों में **जो कुटपुई (त्यौहार)** का आयोजन किया।

विवरण

- इस कार्यक्रम में विभिन्न मिज़ो जनजातियों द्वारा **विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया।**
- यह आयोजन विश्व के विभिन्न भागों में रहने वाली विविध मिजो जनजातियों के मध्य भातृत्व को **एकताबद्ध और सुदृढ़ करने का प्रयास** है।
- **मिज़ोरम के अन्य महत्वपूर्ण त्यौहार: मिम कुट** (अगस्त और सितंबर के महीनों में मनाया जाता है, जब मक्के की फसल कटाई के लिए तैयार होती है), **चापचार कुट** (मार्च के महीने में मनाया जाता है), **थालफवंग कुट** आदि।
- **मिज़ो के संबंध में**
  - मिज़ो पूर्वोत्तर भारत, पश्चिमी बर्मा और पूर्वी बांग्लादेश में रहने वाले स्थानीय नृजातीय समूह हैं।
  - इस पदावली में कई नृजातीय समूह सम्मिलित हैं, जो विभिन्न कुकी-चिन भाषाएं बोलते हैं।
  - मिज़ो निरंतर अपने गांवों को बदतलते हुए पारंपरिक रूप से स्थानांतरित कृषि का अनुसरण करते हैं।
  - मिजो समूहों में लुशाई, पावी (लई), लाखेर (मारा), और हमर सर्वाधिक प्रमुख हैं।

VISION IAS

6.4. आदि महोत्सव

(AADI Mahotsav)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव **'आदि महोत्सव'** का आयोजन किया गया।

विवरण

- यह केंद्र सरकार के **जनजातीय कार्य मंत्रालय** और **भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (ट्राइफेड)** की एक संयुक्त पहल है।
- इस महोत्सव की विशेषता जनजातीय हस्तशिल्प, कला, चित्रकारी, वस्त्र, आभूषणों आदि की प्रदर्शनी-सह-बिक्री थी।
- **महोत्सव की थीम:** "जनजातीय संस्कृति, शिल्प, व्यंजन और वाणिज्य की भावनाओं का उत्सव" (A Celebration of the Spirit of Tribal Culture, Craft, Cuisine and Commerce)।
- यह जनजातीय वाणिज्य को **डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक संव्यवहार के आगामी स्तर** पर ले जाने का प्रयास था तथा इसमें विशेष आकर्षण के रूप में आदिवासियों के इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल कौशल का भी प्रदर्शन किया गया।

भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (Tribal Cooperative Marketing Development Federation of India: TRIFED) के बारे में

- वर्ष 1987 में स्थापित ट्राइफेड, **जनजातीय कार्य मंत्रालय** के अंतर्गत कार्य करता है।
- यह **"ट्राइब्स इंडिया"** ब्राण्ड नाम के तहत **जनजातीय कला और शिल्प सहित जनजातीय उत्पादों के विपणन विकास में संलग्न है।**
- यह जनजातीय उत्पादों के निर्यात और आयात को व्यवस्थित करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करता है तथा अंतरराज्यीय व्यापार को सुगम बनाता है।
- यह आपूर्ति/बाजार अवसंरचना जैसे कि जनजातीय उत्पादों से संबंधित गोदामों, विपणन याड्र्स आदि के निर्माण को बढ़ावा देता है।
- यह **वन धन विकास केंद्र योजना** का कार्यान्वयन भी करता है।

6.5. सुर्ख़ियों में रहे सांस्कृतिक महोत्सव

(Cultural Festival in News)

त्यौहार	राज्य	विवरण
आषाढ़ी बीज	**गुजरात**	• आषाढ़ी बीज या कच्छी नववर्ष वह प्रतिष्ठित संस्कृति है, जिसमें **वर्षा के आगमन का उत्सव मनाया जाता है।** • **गुजरात के कच्छ क्षेत्र (मरुस्थली क्षेत्र) का कच्छी समुदाय** देशज पांचांग के अनुसार कच्छी नववर्ष मनाता है। • इस अवसर पर **गणेश, लक्ष्मी और अन्य स्थानीय देवी-देवताओं** की पूजा की जाती है। • आषाढ़ी बीज के दौरान, वे वायुमंडल में आर्द्रता की जांच करते हैं ताकि यह अनुमान लगाने में सहायता प्राप्त हो सके कि आने वाले मानसून में कौन-सी फसल सर्वोत्तम होगी।

VISION IAS

भोगाली बिहू	**असम**	• भोगाली बिहू या माघ बिहू फसल कटाई का उत्सव है, जो असम में कटाई के मौसम (जनवरी-फरवरी) के अंत का प्रतीक है। • देश के विभिन्न भागों में अन्य फसल कटाई उत्सव - पंजाब में बैसाखी, बंगाल में पोइला बैसाख, तमिलनाडु के पुथंडू, केरल में विशु आदि। • **गोगोना** एक प्रकार का माउथ ऑर्गन है। यह नरकुल से निर्मित कंपन उत्पन्न करने वाला एक वाद्ययंत्र है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से असम में पारंपरिक बिहू संगीत में किया जाता है।
मेला खीरभवानी	**जम्मू-कश्मीर**	• ज्येष्ठ अष्टमी से आरंभ होने वाला खीर भवानी मेला नब्बे के दशक में अपनी जान बचाने के लिए अपने घरों से पलायन करने वाले **विस्थापित कश्मीरी पंडित समुदाय के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है।** • यह मेला जम्मू-कश्मीर के गांदरबल जिले के प्रसिद्ध रगन्या देवी मंदिर में आयोजित किया गया। • इस दौरान कश्मीरी पंडित ग़ांदरबल जिले में तुलमुल्ला के पांच अन्य मंदिरों, यथा- कुपवाड़ा में टिक्कर, अनंतनाग में लक्तिपोरा ऐशमुक़ाम तथा कुलगाम जिले में माता त्रिपुरसुंदरी देवसर और माता खीरभवानी मंजगाम का दर्शन करते हैं।
चमलियाल मेला	**जम्मू-कश्मीर**	• यह अंतर्राष्ट्रीय सीमा से संलग्न चमलियाल बॉर्डर पर आयोजित किया जाता है। • यह मेला सांबा जिले में लोकप्रिय रूप से बाबा चमलियाल के नाम से प्रसिद्ध एक संत **बाबा दलीप सिंह मन्हास** के पुण्यस्थल पर लगता है।
लुई-नगाई-नी	**मणिपुर**	• यह **मणिपुर की नागा जनजातियों** द्वारा मनाया जाने वाला बीज बुवाई का उत्सव है। • यह नागाओं की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है और यह आशा की जाती कि यह त्यौहार आनंद व समृद्धि लाएगा तथा सभी समुदायों के मध्य एकता एवं भ्रातृत्व के बंधन को मजबूत बनाएगा।
छठ पूजा	**बिहार**	• यह बिहार और इसके पड़ोसी राज्यों (यथा- उत्तर प्रदेश एवं झारखंड) तथा नेपाल के मधेश क्षेत्र में मनाया जाने वाला पर्व (छठ पूजा) है। छठ पूजा के दौरान भक्त सूर्य की पूजा करते हैं और प्रकृति के गुणों की स्तुति करते हैं।
हॉर्नबिल (धनेश) महोत्सव	**नागालैंड**	• यह **नागालैंड की देशज योद्धा जनजातियों** का सबसे बड़ा समारोह है। • इस महोत्सव का उद्देश्य **नगालैंड की समृद्ध संस्कृति को पुनर्जीवित और संरक्षित करना तथा इसकी विलक्षणता एवं परंपराओं का प्रदर्शन करना है।** • इसका आयोजन प्रति वर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में किया जाता है। • इस महोत्सव का नाम **राज्य के सर्वाधिक श्रद्धेय पक्षी प्रजातियों में से एक हॉर्नबिल के नाम पर रखा गया है**, जिसका महत्व कई आदिवासी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, गीतों और नृत्यों में परिलक्षित होता है।
नागोबा जात्रा	**तेलंगाना**	• यह तेलंगाना के **आदिलाबाद** जिले में आयोजित किया जाने वाला एक जनजातीय महोत्सव है। • यह दूसरा सबसे बड़ा जनजातीय आनंदोत्सव है और यह **गोंड जनजाति के मेसाराम कबीले** द्वारा मनाया जाता है। • गोंड जनजाति के नर्तकों द्वारा **गुसाडी नृत्य** का प्रदर्शन इस आयोजन का एक प्रमुख आकर्षण है।

VISION IAS

सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला	**हरियाणा**	• यह **विश्व का सबसे बड़ा शिल्प मेला** है। यह भारत के हस्तशिल्प, हथकरघा और सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि एवं विविधता को प्रदर्शित करने के लिए वर्ष 1987 से आयोजित किया जा रहा है। • यह हरियाणा के फ़रीदाबाद जिले के सूरजकुंड में आयोजित किया जाता है। • **34वें सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला (वर्ष 2020)** के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य को थीम स्टेट चुना गया है। • वर्ष 2013 से इस मेले का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्नयन किया गया और **लगभग 20 देश** इस मेले में भाग लेते हैं। • यह मेला केंद्रीय पर्यटन, वस्त्र, संस्कृति और विदेश मंत्रालयों के सहयोग से सूरजकुंड मेला प्राधिकरण तथा हरियाणा पर्यटन द्वारा आयोजित किया जाता है।
केरल के पद्मनाभास्वामी मंदिर में मुराजापम अनुष्ठान	**केरल**	• **18वीं शताब्दी ई.** में त्रावणकोर के राजा मार्तण्ड वर्मा द्वारा यह अनुष्ठान आरंभ किया गया था तथा यह छह वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है। • इसमें विद्वानों द्वारा ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का मंत्रोच्चारण सम्मिलित है।
भारत में पशु क्रीड़ा		• **जल्लीकट्टू** ○ यह **तमिलनाडु का एक पारंपरिक खेल** है, जिसके दौरान सांड का पीछा किया जाता है। यह फसल कटाई के महोत्सव **पोंगल** के दिवस पर आयोजित किया जाता है। ○ संगम साहित्य में भी जल्लीकट्टू का संदर्भ मिलता है। • **कम्बाला** ○ यह **तमिलनाडु** में सांडों की दौड़ का स्थानीय नाम है। दौड़ के दौरान सांडों को दौड़ाया जाता है और सबसे तेज दौड़ने वाला सांड विजयी घोषित होता है। • **इरुद विडुम वडाह** ○ यह **कर्नाटक** में आयोजित की जाने वाली वार्षिक भैंस दौड़ है।
पोराग त्यौहार	**असम**	• इस उत्सव को **नरसिंह बिहू** उत्सव के नाम से भी जाना जाता है और यह मिशिंग जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला फसल कटाई का त्यौहार है। • इसमें किसान अपने और अपनी फसलों के लिए भू-देवी से आशीर्वाद मांगते हैं।
वसंतोत्सवम	**आंध्र प्रदेश**	• यह पर्व तिरुमाला में मनाया जाता है तथा **वसंत ऋतु का आगमन दर्शाता है**। **1460 के दशक में राजा अच्युतराय** के शासनकाल के दौरान इसे आरंभ किया गया था। • यह प्रति वर्ष चैत्र (मार्च/अप्रैल) माह में त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा पर 3 दिनों के लिए मनाया जाता है।
मकर विलक्कु महोत्सव	**केरल**	• यह मकर संक्रांति के अवसर पर **सबरीमाला मंदिर** द्वारा दो माह तक मनाए जाने वाला वार्षिक उत्सव है।
बतुकम्म महोत्सव	**तेलंगाना**	• यह दुर्गा नवरात्रि के दौरान मनाया जाने वाला नौ दिवसीय पुष्प उत्सव है। • बतुकम्म का अर्थ है कि 'मातृ देवी जीवित हो गई हैं'। यह महोत्सव तेलंगाना की सांस्कृतिक भावना का निरूपण करता है, जो **नारीत्व की संरक्षक देवी** का प्रतीक है। • इस पर्व को देवी गौरी का वसंतोत्सव भी माना जाता है।

VISION IAS

पंढरपुर वारी	**महाराष्ट्र**	• यह **आषाढ़ माह के दौरान वह विशेष यात्रा** है जो आलंदी गांव से आरंभ होती है और 250 किलोमीटर तक जारी रहती है जब तक कि तीर्थयात्री महाराष्ट्र के **विठोबा मंदिर, पंढरपुर** तक पहुंच नहीं जाते। • इस दौरान कई पालकियां ले जाई जाती हैं, जिसमें प्रसिद्ध ऋषियों की पादुकाएं होती हैं और इसकी कुल अवधि 21 दिन होती है, जो आषाढ़ एकादशी को समाप्त होती है। • वारी परंपरा संत ध्यानेश्वर के महान पितामह त्रयंबकपंत कुलकर्णी द्वारा आरंभ की गई थी। ध्यानेश्वर ने **नामदेव**, **सावता माली और तुकाराम** जैसे अन्य संतों के साथ स्वयं अपने जीवनकाल में भी वारी यात्रा में भाग लिया था। • इसके प्रतिभागियों को वरकारी के रूप में जाना जाता है।

7. प्राचीन भारत

(Ancient History)

7.1. हड़प्पा सभ्यता के पतन से संबंधित नए तथ्य

(New Findings on the Decline of Harappan Civilization)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **राखीगढ़ी** से प्राप्त **कुछ अस्थिपंजरों के अवशेषों** के DNA विश्लेषण ने हड़प्पा सभ्यता के पतन के संदर्भ में **आर्य-आक्रमण के सिद्धांत पर प्रश्न-चिन्ह** आरोपित किए हैं।

राखीगढ़ी

- राखीगढ़ी पुरास्थल भारतीय उपमहाद्वीप की अतिप्राचीन हड़प्पा सभ्यता के पांच ज्ञात सबसे विशाल नगरों में से एक है।
- **इस स्थल से प्राप्त महत्वपूर्ण पुरावशेष:**
  - एक विशाल क्षेत्र में विस्तृत पांच अंतर्संबंधित टीले।
  - यह स्थल परिपक्व हड़प्पा चरण का प्रतिनिधित्व करता है अर्थात् यह नियोजित नगर-क्षेत्र, कच्ची एवं पक्की ईंटों से निर्मित आवास भवन, उचित जल-निकासी प्रणाली आदि विशेषताओं से युक्त था।
  - मृदभांड उद्योग में **लाल रंग के मृदभांडों** की प्रधानता थी।
  - इस स्थल से उत्खनन के दौरान कच्ची ईंटों से निर्मित पशुबलि से संबद्ध गर्त एवं मिट्टी के फर्श पर त्रिकोणीय तथा वृत्तीय संरचना में निर्मित **अग्नि वेदिकाओं के साक्ष्य** भी प्राप्त हुए हैं, जो हड़प्पा सभ्यता की आनुष्ठानिक प्रथाओं को प्रदर्शित करते हैं।

लोथल

- लोथल गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में साबरमती नदी और उसकी सहायक भोगवा नदी के मध्य स्थित है।
- यह 2700 ई. पू. की हड़प्पा सभ्यता की सामुद्रिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र था। **यहाँ से विश्व के सबसे प्राचीन मानव निर्मित डॉकयार्ड के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।**
- **भारत** और **पुर्तगाल** लोथल में एक **राष्ट्रीय समुद्री विरासत संग्रहालय** के निर्माण में परस्पर सहयोग करेंगे।
- **राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (National Maritime Heritage Complex: NMHC)** का निर्माण सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के आधार पर किए जाने की संभावना है। साथ ही इसमें एक विशाल संग्रहालय का भी निर्माण किया जाएगा जो भारत के अंतर्देशीय जलमार्गों की विरासत और जलमार्गों के माध्यम से व्यापार को प्रदर्शित करेगा।
- इस परियोजना को **पोत परिवहन मंत्रालय** द्वारा अपने **सागरमाला कार्यक्रम** के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), राज्य सरकार और अन्य हितधारकों की भागीदारी के साथ कार्यान्वित किया जा रहा है।

अन्य संबंधित तथ्य

- हाल ही में, **"प्राचीन हड़प्पा जीनोम में स्टेपी पशुचारकों तथा ईरानी कृषकों की वंशावली की अनुपस्थिति"** (An Ancient Harappan Genome Lacks Ancestry from Steppe Pastoralists and Iranian Farmers) नामक शीर्षक से एक पेपर (लेख) प्रकाशित किया गया है, जिसमें आर्य-आक्रमण सिद्धांत के अनेक उल्लेखनीय बिंदुओं को चुनौती दी गई है।
- इस पेपर में यह वर्णित किया गया है कि दक्षिण एशिया में किसी भी प्रकार का आर्य आक्रमण और आर्य प्रवास (माइग्रेशन) नहीं हुआ था तथा इस क्षेत्र में आखेट-खाद्य संग्रह चरण से आधुनिक युग तक हुए सभी विकास स्थानीय लोगों द्वारा सम्पादित किए गए हैं।

आर्य-आक्रमण सिद्धांत के बारे में

- **ब्रिटिश पुरातत्वविद मार्टिमर व्हीलर द्वारा प्रदत्त** इस सिद्धांत के अनुसार, **आर्य** नामक एक यायावर हिन्द-यूरोपीय कबीले (स्टेपी पशुचारक या अनातोलिया के कबीलाई तथा ईरानी कृषक) द्वारा सैंधव सभ्यता पर अकस्मात आक्रमण कर उसे विनष्ट कर दिया गया तथा इस प्रकार यह कबीला **सैंधव सभ्यता के पतन का कारण बना।**

VISION IAS

- व्हीलर का यह मानना था कि **मोहनजोदाड़ो के शीर्ष स्तरों से प्राप्त कई बिना दफनाए हुए नर-कंकाल** युद्ध में हताहत हुए व्यक्तियों के थे।
- यह सिद्धांत यह भी संकेत करता है कि शांतिप्रिय हड़प्पाई लोगों के विरुद्ध अश्वों और अधिक उन्नत हथियारों के उपयोग के माध्यम से आर्यों ने इन्हें सरलता से पराजित कर दिया था।
- **ऋग्वेद से उद्धृत साक्ष्य**
  - ऋग्वेद में कई बार दास और दस्यु के दुर्गों का उल्लेख किया गया है। वैदिक देवता इंद्र को **"पुरंदर" अर्थात् "दुर्ग विध्वंसक (गढ़-विध्वंसक)" कहा गया है।**
  - ऋग्वैदिक आर्यों के आवासीय भौगोलिक क्षेत्र में पंजाब और घग्गर-हाकरा क्षेत्र सम्मिलित थे।
  - चूँकि इस ऐतिहासिक चरण में इस क्षेत्र में ऐसे किसी अन्य सांस्कृतिक समूहों के अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं, जिन्होंने दुर्गों का निर्माण किया हो, अतः व्हीलर को यह विश्वास था कि वे हड़प्पाई नगर ही हैं, जिनका वर्णन ऋग्वेद में किया गया है।
  - वस्तुतः ऋग्वेद में एक स्थल का वर्णन किया गया है जिसे **हरियूपिया** कहा गया है। यह स्थल रावी नदी के तट पर अवस्थित था। आर्यों ने यहाँ एक युद्ध किया था। इस स्थल का नाम हड़प्पा नाम से अत्यधिक सुमेलित है।
  - इन साक्ष्यों के आधार पर व्हीलर ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि वे आर्य आक्रमणकारी ही थे जिन्होंने हड़प्पा के नगरों का विध्वंस किया।

नवीन अध्ययन द्वारा प्रस्तुत तथ्य

- सिंधु घाटी सभ्यता के निवासी **विशिष्ट स्वदेशी लोग थे** तथा **अस्थिपंजर अवशेषों के DNA स्थानीय जनसंख्या से साम्य स्थापित करते हैं।**
  - मोहनजोदाड़ो के दुर्गीकृत क्षेत्र के ऊपरी स्तरों से प्राप्त अस्थिपंजर अवशेष उन लोगों से संबंधित हैं, जिनकी **मृत्यु बाढ़ के कारण हुई थी न कि आर्यों के आक्रमण से,** जैसा कि सर मार्टिमर व्हीलर द्वारा परिकल्पना की गई है।
  - मध्य एशिया से लोगों का लघु स्तर पर प्रवास हुआ था तथा दक्षिण एशिया की जनसंख्या के साथ उनके जीन का अत्यल्प मिश्रण हुआ था। अतः इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उन्होंने सैंधव सभ्यता के लोगों की वंशावली को ही परवर्तित कर दिया था।
  - ऐसा कोई भी आक्रमण नहीं हुआ था जिसके कारण संपूर्ण आबादी ही विस्थापित हुई हो।
  - सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों का जीनोम दक्षिण एशियाई आबादी से संबंधित है।
  - सिंधु घाटी सभ्यता की जनसंख्या में स्टेपी पशुचारकों या अनातोलिया तथा ईरानी कृषकों से संबद्ध वंशावली नहीं है।
- **कृषि:** यह ईरान से प्रवास के माध्यम से इस क्षेत्र में प्रचलित हुई थी तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हड़प्पाई जींस सभी दक्षिण एशियाई लोगों में विविध परिमाणों में विद्यमान हैं।

हड़प्पा सभ्यता के पतन से संबंधित अन्य सिद्धांत

- हड़प्पा सभ्यता के पतन से संबद्ध कई अन्य सिद्धांत भी हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:
  - **बाढ़ एवं भूकंप:** ऐसी विपदाओं के अनेक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जैसे कि आवासीय भवन और गलियाँ अत्यधिक गाद निक्षेप द्वारा आच्छादित थे तथा सैंधव क्षेत्र अभी भी एक अशांत भूकंपीय क्षेत्र के अंतर्गत है।
    - **आलोचना:** इस सिद्धांत द्वारा सिंधु घाटी से बाहर अवस्थित बस्तियों के पतन के कारण को वर्णित नहीं किया गया है तथा यह भी माना गया है कि कोई नदी विवर्तनिक प्रभावों द्वारा अवरुद्ध नहीं हो सकती।
  - **सिंधु नदी का मार्ग परिवर्तन:** ऐसे प्रमाण प्राप्त हुए हैं कि पवन संबंधी क्रियाओं के कारण हड़प्पा में गाद का निक्षेप हुआ था, अतः रेत एवं तलछट पवनों के साथ प्रवाहित हुए थे न कि बाढ़ के साथ।
    - **आलोचना:** यह केवल मोहनजोदाड़ो के परित्याग (desertion) का वर्णन करता है न कि उसके पतन का।
  - **वर्धित शुष्कता और घग्गर नदी का सूखना:** विविध साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि शुष्क जलवायुवीय परिस्थितियों के कारण कृषि कार्यों का ह्रास हुआ था तथा विवर्तनिकी गतिविधियों के कारण घग्गर नदी सूख गई होगी।
    - **आलोचना:** घग्गर नदी के सूखने का अभी तक काल निर्धारण नहीं हो सका है।

VISION IAS

अन्य संबंधित तथ्य

सादिकपुर सिनौली को राष्ट्रीय महत्व का दर्जा प्राप्त होने की संभावना:

- यह माना गया है कि सिनौली उत्तर हड़प्पाई युग का **सबसे बड़ा क़ब्रिस्तान** हो सकता है। यह **यमुना नदी के बाएं तट** पर अवस्थित है।
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा उत्खनन:** यहाँ से **रथ,** तलवारें और अन्य पुरा-वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जो **ताम्र-कांस्य युग (3300 ई. पू. से 1200 ई. पू.)** के दौरान इस क्षेत्र में **लोगों के एक योद्धा वर्ग** के उपस्थित होने की ओर संकेत करती हैं।
- इसके अतिरिक्त, ASI ने यहाँ से **भूमिगत पवित्र कक्ष, पादयुक्त अलंकृत ताबूत,** बर्तनों में चावल और दाल के अंश तथा **मनुष्यों के साथ दफनाई गई पशु अस्थियाँ** प्राप्त की हैं।

7.2. संगम युग

(Sangam Age)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, तमिलनाडु में कीलादी (Keeladi) पुरास्थल के उत्खनन ने यह संकेत दिया है कि संगम युग की अवधि **छठी शताब्दी ई. पू. और प्रथम शताब्दी ईस्वी** के मध्य हो सकती है (पूर्व में संगम युग को तीसरी शताब्दी ई. पू. और तीसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य माना गया है)।

अन्य संबंधित तथ्य

- **संगम युग के तौर पर** उस काल को संदर्भित किया जाता है, जब संगम साहित्य के रूप में आरंभिक तमिल साहित्य का संकलन किया गया था।
- इन साहित्यों को **संगम साहित्य** कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचना एवं संकलन कवि सम्मेलनों (संगम) में की गई थी। इन सम्मेलनों का आयोजन मदुरै (तथा कपाटपुरम्) नगर में किया गया था।
- उत्खनन उपरांत प्राप्त परिणाम यह तथ्य प्रस्तुत करते हैं कि तमिलनाडु के वैगई नदी के मैदानी क्षेत्रों {किजहादी (Keezhadi) पुरास्थल इस मैदानी क्षेत्र से संबंधित है} में **द्वितीय नगरीकरण** (प्रथम नगरीकरण सैंधव सभ्यता के दौरान) "गंगा के मैदानों" में हुए नगरीकरण के समय ही अर्थात् छठी शताब्दी ई. पू. में ही हुआ था।
  - वैगई नदी के मैदानी क्षेत्रों में **छठी शताब्दी ई. पू. में ही साक्षरता प्राप्त कर ली गई थी अथवा लेखन कला को ग्रहण कर लिया गया था।**
- यहाँ से **कृषक समाज, पशुपालन और बुनकर उद्योग** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- **संगम युग का निर्धारण करने वाले साक्ष्यों के विविध स्रोत:**
  - **अभिलेख:** अशोक के शिलालेख (चेर, चोल और पाण्ड्य राज्य), हाथीगुम्फा अभिलेख (कलिंग शासक), वेल्विकुडी तथा तिरुकोईलूर से प्राप्त अभिलेख इत्यादि।
  - **मदुरै से प्राप्त सिक्के** तमिल प्रदेश और रोमन साम्राज्य के मध्य व्यापारिक-वाणिज्यिक संबंधों की ओर संकेत करते हैं।
  - **पुरातात्त्विक प्रमाण** जो पुदुचेरी के निकट अरिकमेडु से प्राप्त हुए हैं, रोम और तमिलनाडु के मध्य व्यापारिक संबंधों की पुष्टि करते हैं।
  - **विदेशी वृतांत:** संगम साहित्य के अतिरिक्त, यूनानी एवं रोमन लेखकों जैसे विदेशी यात्रियों के साहित्यिक वृतांत संगम युग के अध्ययन के अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
    - **मेगस्थनीज** ने अपनी पुस्तक **इंडिका** में भी तीन तमिल राज्यों का वर्णन किया है।
  - **संगम साहित्य** में मुख्य रूप से **तोलकाप्पियम्** (आरंभिक संगम साहित्य), **इत्थुथोकै (Ettuthokai)** तथा **पत्थुप्पात्तु (Pathuppattu)** सम्मिलित हैं। ये कृतियां संगम युग के इतिहास को जानने हेतु महत्वपूर्ण जानकरी प्रदान करती हैं।
    - **तोलकाप्पियम्** तमिल व्याकरण का एक ग्रंथ है, जिसके रचियता **तोलकाप्पियर** हैं। यह ग्रंथ तत्कालीन **राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य** का वर्णन करता है।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH 8468022022

- **इत्थुथोकै** (अष्ट पद्यावली) में आठ कविताएँ हैं।
- **पत्थुप्पात्तु** (दस काव्य), दस संक्षिप्त पदों का संग्रह है।
- दो महत्वपूर्ण महाकाव्य - **शिलप्पादिकारम् (इलांगो अडिगल द्वारा रचित) तथा मणिमेकलै (रचियता सीतल सतनार)** उत्तर संगम युग से संबंधित हैं।
- परंपरा के अनुसार कुल **तीन संगम** आयोजित किए गए। प्रथम संगम **मदुरै** में और द्वितीय संगम **कपाटपुरम्** में आयोजित हुआ तथा पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में तृतीय संगम **मदुरै** (पाण्ड्यों की राजधानी) में आयोजित किया गया था।

संगम युग के बारे में

संगम युगीन राजव्यवस्था

- प्राचीन काल में तमिल प्रदेश पर **तीन राजवंशों, यथा- चेर, चोल और पांड्यों** का शासन था तथा जिनके **राजकीय प्रतीक** क्रमशः धनुष, व्याघ्र और मत्स्य थे।
- संगम युग के दौरान शासन का स्वरूप वंशानुगत राजतंत्र था।
- संगम युग के दौरान **सैन्य प्रशासन कुशलतापूर्वक संगठित था** तथा प्रत्येक शासक के पास एक नियमित सेना थी।

संगम युगीन समाज

- तोलकाप्पियम् में पांच प्रकार की भूमि का वर्णन है, यथा- कुरिंजी (पहाड़ी भूमि), मुल्लई (चरागाह भूमि), मरुदम (कृषि भूमि), नेयदल (तटीय भूमि) तथा पलई (मरुभूमि)। इन पाँचों भूखंडों में निवास करने वाले लोगों के अपने संबद्ध मुख्य व्यवसाय और साथ ही साथ प्रमुख आराध्य देव थे।
- तोलकाप्पियम् में निम्नलिखित चार जातियों का वर्णन किया गया है, यथा- अरासर (शासक वर्ग), अन्थानर (पुरोहित वर्ग), वणिगर (व्यापारी वर्ग) तथा वेल्लार (कृषक)।
- अनेक काव्यों में महिलाओं के शौर्य की प्रशंसा की गई है, परन्तु **विधवाओं की स्थिति दयनीय थी तथा सती प्रथा भी प्रचलित थी।**
- इस युग में टोडा, ईरुला, नागा और वेदार (Vedars) जैसी प्राचीन आदिम जनजातियाँ भी विद्यमान थीं।

संगम युगीन अर्थव्यवस्था

- **कृषि मुख्य व्यवसाय था** तथा धान सामान्यतया उपजाई जाने वाली प्रमुख फसल थी। साथ ही रागी, गन्ना, कपास, काली मिर्च, अदरक, हल्दी, दालचीनी व विविध प्रकार के फसलों की कृषि भी की जाती थी।
- **राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भू-राजस्व था,** हालांकि विदेशी व्यापारियों पर सीमा शुल्क भी अधिरोपित किया जाता था।
- संगम युग के **हस्तशिल्प** भी प्रसिद्ध थे तथा इसमें बुनाई, धातुकर्म और काष्ठशिल्प सम्मिलित थे। **पोत निर्माण व आभूषण निर्माण उद्योग भी प्रचलित थे।**
- **मुख्यतया** सूती वस्त्र, मसाले, हाथीदांत से निर्मित उत्पाद, मोती और बहुमूल्य रत्नों का **निर्यात** किया जाता था तथा **स्वर्ण, अश्व और मीठी मदिरा का आयात किया जाता था।**

अतिरिक्त जानकारी

अव्वैयर (Avvaiyar)

- **अव्वैयर** का शाब्दिक अर्थ **'सम्मानित महिला'** होता है, जो कि तमिलनाडु में एक पारिवारिक नाम है।
- यह एक से अधिक कवियत्रियों की उपाधि थी, जो तमिल साहित्य के विभिन्न युगों के दौरान सक्रिय थीं। ऐसी कम से कम **चार अव्वैयर** ज्ञात हैं।
- वे तमिल साहित्य से संबंधित अत्यधिक विख्यात एवं महत्वपूर्ण कवियत्रियाँ थीं। सर्वाधिक प्रसिद्ध अव्वैयर संगम युग के दौरान मौजूद थीं।

VISION IAS

7.3. मामल्लपुरम

(Mamallapuram)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, चीन के साथ ऐतिहासिक संपर्क के कारण तमिलनाडु के मामल्लपुरम में भारत और चीन के मध्य द्वितीय अनौपचारिक शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मामल्लपुरम का ऐतिहासिक महत्व

- यह सातवीं शताब्दी ईस्वी में पल्लव शासकों के अधीन एक **प्रमुख बंदरगाह नगर** था। इस नगर का नाम पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ई.) के नाम पर रखा गया है, जिसे "मामल्ल" के नाम से भी जाना जाता था।
- **मामल्लपुरम की स्थापत्य कला संबंधी विरासत**
  - **तट मंदिर (Shore Temple):** यह एक संरचनात्मक मंदिर है, जिसका निर्माण 700-728 ई. के मध्य ग्रेनाइट शिलाखंडों से किया गया था। इसका निर्माण नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा द्रविड़ स्थापत्य शैली में कराया गया था।
    - इसे **यूनेस्को (UNESCO) विश्व विरासत स्थल** के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
  - **पंचरथ (पांच रथ):** ये एकाश्म शैलोत्कीर्ण संरचनाएं हैं। पांच पांडव भ्राताओं और द्रौपदी के नाम पर इसका नामकरण किया गया है। उल्लेखनीय है कि ये शैलोत्कीर्ण संरचनाएं न तो रथ सदृश्य हैं और न ही संभवतः ये पांडवों को निरुपित करते हैं। ये संभवतया विशुद्ध रूप से स्थानीय चरित्र को प्रदर्शित करते हैं।
  - **अर्जुन का तप (Arjunan Penance):** यह एक चट्टान पर उत्कीर्णित (27 x 9 मी.) विश्व की सर्वाधिक बड़ी उभारदार नक्काशी कला (bas-relief) है। इसमें 100 से अधिक देवताओं, पक्षियों, पशुओं और ऋषियों की नक्काशियां (प्रतिमाएं) उत्कीर्ण हैं। इसे लोकप्रिय रूप से अर्जुन का तप कहा जाता है।
    - ऐसा मानना है कि इसमें महाभारत के एक दृष्टांत की सचित्र व्याख्या की गई है, जिसके अंतर्गत अर्जुन, कौरवों का विनाश करने हेतु एक शक्तिशाली और दैवीय धनुष की प्राप्ति के लिए भगवान शिव की प्रार्थना करने के दौरान कठोर तप कर रहे हैं।
    - यह **"गंगा अवतरण"** के नाम से भी विख्यात है। पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा **भागीरथ** ने अपने पूर्वजों की आत्मा के मोक्ष हेतु गंगा नदी के पृथ्वी पर अवतरण के लिए एकल पद मुद्रा में खड़े होकर भगवान ब्रह्मा की तपस्या की थी।
  - **वराह गुफा:** इसे **आदिवराह गुफा मंदिर** भी कहा जाता है। यह सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित एक **शैलोत्कीर्णित गुफा** मंदिर है।
    - गुफा की प्रमुख प्रतिमा, सागर से भू-देवी (माता पृथ्वी) की रक्षा करते हुए **वराह (शूकर) स्वामी** के रूप को प्रदर्शित करती हुई भगवान विष्णु की प्रतिमा है। मंदिर की दीवारों एवं स्तम्भों पर अनेक पौराणिक चरित्रों की प्रतिमाएं उत्कीर्ण की गई हैं।

चीन के साथ संपर्क

- पल्लव शासकों के चीन के साथ **व्यापारिक एवं रक्षा संबंध** थे, जिसके अंतर्गत ये शासक तिब्बत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विकसित होने से रोकने हेतु चीन की सहायता करने के लिए सहमत हुए थे।
- पुरातत्वविदों और इतिहासकारों द्वारा किए गए विभिन्न अध्ययन दर्शाते हैं कि मामल्लपुरम के चीन, श्रीलंका और अन्य दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के साथ महत्वपूर्ण वाणिज्यिक संबंध थे। मामल्लपुरम में चीन, फारस और रोम के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं, जो यह प्रदर्शित करते हैं कि ये देश/क्षेत्र पल्लवों हेतु व्यापारिक केंद्र के रूप में कार्य करते थे।
- चीनी यात्री **ह्वेनत्सांग** ने नरसिंहवर्मन प्रथम के शासनकाल के दौरान इस प्रदेश की यात्रा की थी।
- जनश्रुतियों के अनुसार **बोधिधर्म** ने 527 ई. में तमिलनाडु तट से गुआंगझु (Guangzhou) तक की यात्रा की थी। बोधिधर्म को चीन में जेन बौद्धधर्म (Zen Buddhism) को ले जाने का श्रेय प्रदान किया जाता है।
- इसके अतिरिक्त, वर्तमान चीनी राष्ट्रपति पूर्व में फुज़ियान प्रांत के गवर्नर थे। यह प्रांत चीन के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित है तथा इस क्षेत्र का तमिलनाडु के साथ गहन सांस्कृतिक संबंध रहा था।

VISION IAS

7.4. दक्षिण भारत के सबसे प्राचीनतम संस्कृत शिलालेख की प्राप्ति

(Earliest Sanskrit inscription in South India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा दक्षिण भारत में संस्कृत के एक प्राचीनतम शिलालेख की खोज की गई है।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह शिलालेख आंध्र प्रदेश के **गुंटूर जिले के चेबरोलू गांव** में खोजा गया है।
  - इसे सातवाहन शासक **विजय** द्वारा 207 ईस्वी में उत्कीर्णित करवाया गया था।
  - यह **सप्तमातृका पंथ** से संबंधित अब तक का **सर्वप्राचीन पुरालेखीय साक्ष्य** भी है।
  - यह **चौथी शताब्दी ई.** में इक्ष्वाकु शासक **एहवला चंटामुला** द्वारा उत्कीर्ण करवाए गए नागार्जुनकोंडा शिलालेख से भी पूर्व तिथि का है, जिसे अब तक दक्षिण भारत में सबसे प्राचीन संस्कृत शिलालेख माना जाता रहा है।

सप्तमातृका पंथ

- हिन्दू धर्म के शाक्त संप्रदाय में 'सप्तमातृका' पद **आराध्य सात देवियों** के एक समूह को संदर्भित करता है।
- ये 'मातृकाएं' विभिन्न देवों की अवतरण (विभिन्न देवताओं के अवतार के रूप में) शक्तियां हैं।
- आंध्र प्रदेश में सप्तमातृका पंथ, **बादामी के आरंभिक चालुक्य शासकों के शासनकाल (छठी से आठवीं शताब्दी ई.) के दौरान** व्यापक रूप से प्रचलित था, हालांकि नागार्जुनकोंडा में देवियों की उपासना चौथी शताब्दी ई. से ही प्रचलन में थी।
- प्रारंभिक कदंबकालीन ताम्रपत्रों तथा आरंभिक चालुक्य और पूर्वी चालुक्य शासकों के ताम्रपत्रों से भी सप्तमातृका उपासना के आरंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, परन्तु नवीनतम खोजा गया शिलालेख इन अभिलेखों से भी **200 वर्ष** प्राचीन है।
- सात माताओं या सप्तमातृका की अवधारणा का उल्लेख ऋग्वेद, पुराण और शिल्पशास्त्र जैसे ग्रंथों में भी मिलता है।

अन्य संस्कृत अभिलेख

- पुरालेखों में संस्कृत का प्रयोग प्रथम शताब्दी ई. पू. में प्राचीनतम संस्कृत शिलालेखों, अर्थात् **अयोध्या, घोसुण्डी और हाथीबाड़ा शिलालेखों** के साथ आरंभ हुआ।
- **मथुरा** से प्राप्त संस्कृत के प्राचीन आरंभिक अभिलेख **क्षत्रप सोडश** के काल के हैं, जो प्रथम शताब्दी के आरंभिक वर्षों से संबंधित हैं।
- **जूनागढ़ शिलालेख:** इसे शक शासकों के पश्चिमी क्षत्रपों (चष्टन द्वारा स्थापित) के महान शासक राजा रुद्रदामन (शासनकाल 130 से 150 ई. तक) द्वारा 150 ईस्वी में उत्कीर्ण करवाया गया था और यह अभिलेखीय संस्कृत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।
  - यह पूर्ण रूप से लगभग मानक संस्कृत में उत्कीर्णित और साथ ही काव्यात्मक शैली का भी प्रथम वृहद अभिलेख है।
  - चौथी शताब्दी में प्रारंभिक गुप्त सम्राटों के शासनकाल के दौरान यह कहा जाने लगा कि संस्कृत अपनी उत्कृष्टता के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में अभिलेखीय भाषा के रूप में स्थापित हो गई थी।
- समुद्रगुप्त (335-380 ई.) के अभिलेखों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगत होता है, विशेष रूप से **इलाहाबाद स्तंभलेख** में, जो कि कुछ साधारण वर्तनी विषयक अनियमितताओं के बावजूद, प्राय: गद्य और पद्य की मिश्रित (चम्पू शैली) उच्च शास्त्रीय साहित्यिक शैली के प्रतिमान का प्रतिनिधित्व करता है।

7.5. पूमपुहार का डिजिटल रूप में पुनर्निर्माण

(Poompuhar to be digitally Reconstructed)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, तमिलनाडु के एक बंदरगाह शहर, पूमपुहार, जो 1000 वर्ष पूर्व समुद्र में जलमग्न हो गया था, को **भारतीय डिजिटल विरासत परियोजना** के तहत डिजिटल रूप से पुनर्निर्मित किया जा रहा है।

VISION IAS

पूमपुहार के बारे में

- कावेरी नदी के मुहाने पर स्थित **पूमपुहार** (पुहार या कावेरीपट्टनम) प्राचीन काल में प्रारंभिक **चोल शासकों (600-300 ई. पू.)** की राजधानी थी।
- **संगम साहित्य,** विशेषकर जैन कवि इलांगो अडिगल द्वारा रचित तमिल महाकाव्य **शिल्प्पदिकारम** में इस कस्बे का कई बार उल्लेख मिलता है।
- प्लिनी और टॉलेमी के वृतांतों और पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी में भी इसका उल्लेख मिलता है।
- यह नगर लगभग 1000 वर्ष पूर्व **"कडालकोल"** या बढ़ते समुद्री जल स्तर के कारण जलमग्न हो गया था।

भारतीय डिजिटल विरासत (Indian Digital Heritage: IDH) परियोजना के बारे में

- यह देश की मूर्त और अमूर्त विरासत के **डिजिटल प्रलेखन तथा व्याख्या के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा आरंभ** की गई एक पहल है।
- IDH परियोजना का मूल उद्देश्य विकसित सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों (ICT) के साथ भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का अधिकतम समन्वय करना है, ताकि भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत के डिजिटल रूप में संरक्षण, उपयोग तथा अनुभव में सहायता प्राप्त की जा सके।
- इसका उद्देश्य कला-इतिहासकार, वास्तुकार या भारतीय विरासत का विद्वतापूर्ण अध्ययन करने वाले किसी भी वैज्ञानिक को विश्लेषणात्मक उपकरण प्रदान करना है।
- इसके अंतर्गत प्रथम परियोजना **'डिजिटल हम्पी'** थी।

कुछ महत्वपूर्ण प्राचीन बंदरगाह नगर

- **सूरत:** गुजरात में स्थित, यह **मुगल काल** के दौरान पश्चिमी व्यापार का प्रमुख केंद्र था।
- **कांची:** वर्तमान में कांचीपुरम (तमिलनाडु) के रूप में जाना जाता है। 600 ई. पू. से 300 ई. पू. के मध्य चीन के व्यापारी विदेशी जहाजों में यहाँ मोती, कांच और दुर्लभ पत्थरों की खरीद करने हेतु यात्रा करते थे और विनिमय के रूप में स्वर्ण और रेशम कि बिक्री करते थे।
- **मदुरा (मदुरै, तमिलनाडु):** यह पांड्यों की राजधानी थी, जिनका मन्नार की खाड़ी में मोती उत्पादन (pearl fisheries) पर नियंत्रण था।
- **भड़ौच:** वर्तमान में इसे भरुच/बरुगाज़ा (गुजरात) के रूप में जाना जाता है। यह नर्मदा नदी के तट पर स्थित था और सड़क मार्ग द्वारा सभी महत्वपूर्ण मार्गों से जुड़ा हुआ था।
- **सिरस्त्रीन (टॉलेमी द्वारा उल्लिखित) / सौराष्ट्र:** यह गुजरात का प्रायद्वीपीय क्षेत्र है। यह हिन्द-यूनानी शासकों के दौरान महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।
- **सुपारा/सोपारा:** वर्तमान में इसे नालासोपारा कहा जाता है। यह महाराष्ट्र के पालघर जिले में स्थित है। प्राचीन सोपारा बंदरगाह मेसोपोटामिया, मिस्र, कोचीन, अरब और पूर्वी अफ्रीका के साथ पश्चिमी भारत के व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- **मुजिरिस:** यह प्रथम शताब्दी ई. पू. में, केरल के मालाबार तट पर मुजिरिस या मुसिरी नाम से एक प्राचीन इंडो-रोमन बंदरगाह था।
- **कोरकाई:** यह तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में स्थित था। यह 2000 वर्ष से अधिक प्राचीन है और यह पांड्यों की प्रारंभिक राजधानी भी थी। यह प्राचीन विश्व में मोती उत्पादन के सबसे बड़े केंद्रों में से एक था।

VISION IAS

- **पोडुका:** पोडुका या अरिकमेडु या पोडुके (पुडुचेरी) एक बंदरगाह नगर था, जिसका उल्लेख प्रथम शताब्दी के पेरिप्लस मैरिस एरिथ्रैई (पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी) में **'प्राचीन भारत में विदेशी व्यापार'** से संबंधित स्थल के रूप किया गया है।
- **ताम्रलिप्ति:** यह बंदरगाह पश्चिम बंगाल के मिदनापुर के वर्तमान शहर तामलुक में स्थित था। ताम्रलिप्त नाम ताम्र (तांबे) से लिया गया है, जिसका खनन अविभाजित बिहार के सिंहभूमि जिले के घाटशिला से किया जाता था और इस बंदरगाह के माध्यम से निर्यात किया जाता था।
  - **सोपतमा/मरक्कणम:** यह तमिलनाडु में स्थित है।
  - **मुसलीपट्टनम** आंध्र प्रदेश में स्थित है।
  - **दशरन** ओडिशा में स्थित है।
  - **तगारा:** महाराष्ट्र में स्थित यह बंदरगाह कल्याण को वेंगी से जोड़ता है।

7.6. उत्तर भारत में 80,000 वर्ष पूर्व आरंभिक मानव का निवास

(Early Humans Lived in Northern India 80,000 Years Ago)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, मध्य प्रदेश में सोन नदी की ऊपरी घाटी में ढाबा नामक स्थल पर खाइयों (trenches) में किए गए एक पुरातात्विक उत्खनन से ऐसे साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र में लगभग 80,000 वर्ष पूर्व से निरंतर मानव निवास की पुष्टि करते हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस उत्खनन से टोबा सुपर-विस्फोट काल के दौरान के एक **वृहद उपकरण उद्योग** (पाषाणोपकरण उद्योग) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
  - ये **वृहद महापाषाणिक (मेगालिथिक) उपकरण** लगभग 65,000 से 80,000 वर्ष तक प्राचीन हैं, वहीं लघु उपकरणों का समय वर्तमान से लगभग 50,000 वर्ष पूर्व का है।
  - इसलिए, माना जाता है कि इस क्षेत्र में मानव का निरंतर आवास सुपर-विस्फोट से अप्रभावित था।
  - ये उपकरण **अफ्रीकी मध्य पाषाण युग (Middle Stone Age: MSA) और अरब के पाषाणोपकरण** संग्रह तथा **ऑस्ट्रेलिया** की आरंभिक कलाकृतियों के लगभग समान हैं। इसलिए माना जा रहा है कि ये संभवत: होमो सेपियन्स के उत्पाद हैं, क्योंकि उनका अफ्रीका से बाहर पूर्व की ओर विस्तार हुआ था।

मानव आबादी प्रसार के संबंध में प्राप्त निष्कर्षों का महत्व

- यह खोज विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में मानव आबादी की प्रथम उपस्थिति और अफ्रीका से मानव के प्रसार पर **प्रतिस्पर्धी सिद्धांतों** के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।
  - होमो सेपियन्स प्रवास के संबंध में सामान्य विचार यह है कि आधुनिक मानव का केवल विगत 50,000 वर्षों में ही अफ्रीका से बाहर प्रसार हुआ था।
  - हालांकि, जीवाश्म साक्ष्यों से यह आभास हुआ है कि आधुनिक मानव 2,00,000 वर्ष पूर्व ही अफ्रीका से यूनान एवं अरब में तथा 80,000-1,00,000 वर्ष पूर्व चीन में प्रवास कर गया था।
- यह वॉलकैनिक विंटर परिकल्पना (volcanic winter hypothesis) को भी अप्रासंगिक घोषित करता है।
  - ऐसा माना जाता है कि लगभग 74,000 वर्ष पूर्व, सुमात्रा के निकट अवस्थित टोबा नामक ज्वालामुखी में हुए सुपर-विस्फोट ने लगभग एक दशक तक पृथ्वी के कई हिस्सों में शीत ऋतु सदृश्य मौसम (वॉलकैनिक विंटर) बनाए रखा था।
  - यह तर्क भी प्रस्तुत किया गया है कि इस प्रेरित शीत ने न केवल विस्फोट के उपरांत से लगभग एक हजार वर्ष तक पृथ्वी की सतह को ठंडा रखा, बल्कि संपूर्ण एशिया में अत्यधिक आबादी को भी नष्ट कर दिया था।

VISION IAS

7.7. नवपाषाणकालीन शिवलिंग की खोज

(Neolithic Age Siva Linga Discovered)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, आंध्र प्रदेश में **मोपुरु पहाड़ी** पर, **भैरवेश्वर स्वामी मंदिर परिसर** में 18 फुट ऊँचे एक शिवलिंग की खोज की गई।

अन्य संबंधित तथ्य

- ऐसा माना जा रहा है कि इस शिवलिंग को प्राकृतिक रूप से **नवपाषाण युग** में 3,000-2,800 ई. पू. के दौरान निर्मित किया गया था।
- इस शिवलिंग की खोज दर्शाती है कि नवपाषाणकालीन **धार्मिक प्रथाओं** के दौरान लोग खड़ी मुद्रा में देवी और देवताओं की मूर्तियों की उपासना किया करते थे।

नवपाषाण युग के बारे में

- नवपाषाण (नव प्रस्तर युग) काल, मध्य पाषाण काल के पश्चात् तथा कांस्य युग के पूर्व के काल का प्रतिनिधित्व करता है।
- इस काल की प्रमुख विशेषताओं में निम्नलिखित सम्मिलित हैं: पॉलिश युक्त पाषणोपकरण, घरेलू पादपों एवं पशुओं पर निर्भरता, स्थायी बस्तियां, कृषि कार्य का आरंभ, मृद्भाण्ड निर्माण, बुनकर शिल्प आदि।
- **भारत में महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल:** बुर्जहोम और गुफकराल (कश्मीर), चोपानी-माण्डो (उत्तर प्रदेश), ब्रह्मगिरि और टेककलकोटा (कर्नाटक), चिरांद (बिहार) आदि।

7.8. नगरधन उत्खनन

(Nagardhan Excavations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, नागपुर के निकट रामटेक तालुका के **नगरधन** में पुरातात्विक उत्खननों ने **वाकाटक राजवंश** के जीवन, धार्मिक संबद्धता और व्यापार प्रथाओं पर ठोस साक्ष्य उपलब्ध कराए हैं।

उत्खनन के निष्कर्ष

- **स्थान:** नगरधन एक नगरीय केंद्र था और जिसे **नंदीवर्धन** कहा जाता था तथा यह **वाकाटक राज्य** की **पूर्वी शाखा** का **राजधानी** नगर था।
- **रानी प्रभावतीगुप्त के विषय में:** उसने रुद्रसेन द्वितीय के आकस्मिक निधन के उपरांत वाकाटक राज्य का कार्यभार ग्रहण किया।
- **मृत्तिका मुहरें:** इन मुहरों का प्रथम बार उत्खनन हुआ है, जिससे ज्ञात होता है कि वाकाटक राजवंश में एक उत्तराधिकारी महिला शासिका थी।
    - इन मुहरों पर **ब्राह्मी लिपि** में उसका नाम अंकित है, जिसके साथ **शंख** का भी चित्रण है, जो **गुप्त शासकों** की **वैष्णव** संबद्धता का संकेत है।
    - इन मुहरों का राजधानी नगर से जारी आधिकारिक शाही अनुमति के रूप में उपयोग किया जाता होगा।
    - **वाकाटक लोग ईरान और भूमध्य सागर के माध्यम से उससे आगे तक व्यापार करते थे।**
- **धर्म:** वाकाटक शासक **हिंदू धर्म के शैव संप्रदाय के अनुयायी** थे, परन्तु सत्ताधारी रानी अपने श्रद्धेय देव के चयन हेतु स्वतंत्र थी।
    - **महाराष्ट्र में नरसिंह** की पूजा करने की प्रथा रामटेक से व्युतपन्न हुई और **रानी प्रभावतीगुप्त** की महाराष्ट्र के **विदर्भ क्षेत्र** में वैष्णव प्रथाओं का प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका थी।

VISION IAS

- **मंदिर:** वैष्णव मत से संबंध का संकेत देने वाले **केवल नरसिम्हा** व **रुद्र नरसिम्हा जैसे कई मंदिर रामटेक से संबद्ध हैं** और इनका निर्माण रानी प्रभावतीगुप्त के शासनकाल के दौरान करवाया गया था।
- **व्यवसाय: पशु पालन एक मुख्य व्यवसाय था।** घरेलू पशुओं की सात प्रजातियों, यथा- मवेशी, बकरी, भेड़, शूकर, बिल्ली, अश्व और कुक्कुट के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- रानी प्रभावतीगुप्त द्वारा जारी किए गए **ताम्रपत्र** भी प्राप्त हुए हैं। इसमें रानी के पितामह समुद्रगुप्त और पिता चंद्रगुप्त द्वितीय का उल्लेख करने वाली गुप्तों की वंशावली प्रदर्शित की गई है।
- **भगवान गणेश की अक्षत मूर्ति,** जिसे किसी आभूषण से अलंकृत नहीं किया गया है, भी इस स्थल से प्राप्त हुई है। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि **गणेश की उस समय सामान्य तौर पर पूजा होती थी।**

वाकाटक राजवंश के बारे में

- वाकाटक साम्राज्य **तीसरी और पांचवीं शताब्दी ईस्वी के मध्य दक्कन में सातवाहनों** का उत्तराधिकारी राजवंश था। वाकाटक उस समय उत्तर भारत में शासन करने वाले गुप्तों के समकालीन थे।
- उनका राज्य **उत्तर में मालवा के दक्षिणी सीमांत और गुजरात से लेकर दक्षिण में तुंगभद्रा नदी तक तथा पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में छत्तीसगढ़ के सीमांत** तक विस्तृत था।
- वाकाटक साम्राज्य की स्थापना एक ब्राह्मण सामंत **विंध्यशक्ति** ने की थी।
- वाकाटक शासकों ने अपने समय के अन्य राजवंशों के साथ कई वैवाहिक गठबंधन किए थे। **गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय** से हुआ था।
- वाकाटक कला, वास्तुकला और साहित्य के संरक्षक थे। वे **शैवमत** के अनुयायी थे।
- **अजंता की गुफाओं** के शैलोत्कीर्ण बौद्ध विहारों और चैत्यों का निर्माण **वाकाटक राजा हरिषेण** के संरक्षण में किया गया था।

7.9. सुर्ख़ियों में रहे बौद्ध मठ

(Buddhist Monasteries in News)

- **बोज्जनकोंडा और लिंगलामेत्ता मठ:** ये आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम के शंकरम गाँव स्थित दो **शैलोत्कीर्णित** बौद्ध मठ हैं। इनका निर्माण तीसरी शताब्दी ई. पू. में किया गया था।
  - **इन स्थलों पर बौद्ध धर्म के तीन रूप परिलक्षित हुए हैं: थेरवाद-** जब भगवान बुद्ध को एक उपदेशक के रूप में माना गया था; **महायान-** जब बौद्ध धर्म अधिक भक्तिमय हो गया था; तथा **वज्रयान-** जब बौद्ध परंपरा का तंत्र और अंतर्भूत रूप में अधिक अभ्यास किया जाता था।
  - विशाखापट्टनम थोटलकोंडा, एप्पिकोंडा और बाविकोंडा के बौद्ध स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है।
- **मोघलमारी मठ**
  - हाल ही में, पश्चिम बंगाल के मोघलमारी में बौद्ध मठ स्थल से प्राप्त किए गए मित्तिका पटलिका पर अभिलेखों के एक अध्ययन ने दो मठों, यथा- **मुगलयिका विहारिका** और **यज्ञपींडिका महाविहार** की उपस्थिति की पुष्टि की।
    - इन मठों का निर्माण 6वीं शताब्दी ईस्वी में किया गया था तथा ये 12वीं शताब्दी ईस्वी तक ही कार्यात्मक बने रहे थे।
    - पूर्वोत्तर भारत में एक ही परिसर में एक ही अवधि के दौरान निर्मित **दो मठों की उपस्थिति** अद्वितीय है।
  - यह **पश्चिम बंगाल के पश्चिम मेदिनीपुर जिले में सुवर्णरेखा नदी के बाएं तट पर अवस्थित है।**
  - इसे पश्चिम बंगाल में विशालतम और **प्राचीनतम पुरातात्विक स्थल** माना जाता है।
  - इसे **दांतापुर बौद्ध मठ** के रूप में भी जाना जाता है तथा इसे चीनी बौद्ध भिक्षु एवं विद्वान ह्वेनत्सांग (जिसने 7वीं शताब्दी में भारत की यात्रा की थी) के यात्रा वृतांतों में प्रलेखित किया गया था।

VISION IAS

- **कीर्ति झेयपा मठ**
  - यह **धर्मशाला** (हिमाचल प्रदेश) में स्थित एक तिब्बती बौद्ध मठ है।
  - इसका निर्माण तिब्बत से निर्वासित हुए बौद्ध भिक्षुओं के लिए वर्ष 1992 में करवाया गया था।
- **लामायुरु मठ**
  - युंगद्रुंग थारपलिंग मठ (जिसे लामायुरु के नाम से भी जाना जाता है) **लद्दाख** का सबसे प्राचीन मठ है।
  - यह **लद्दाख** के निचले भागों में प्रचलित ड्रिकुंग काग्यू परंपरा (तिब्बती बौद्ध धर्म) की मुख्य पीठ है।
  - इसकी आधारशिला 11वीं शताब्दी में महासिद्धाचार्य नारोपा नामक विद्वान ने रखी थी।

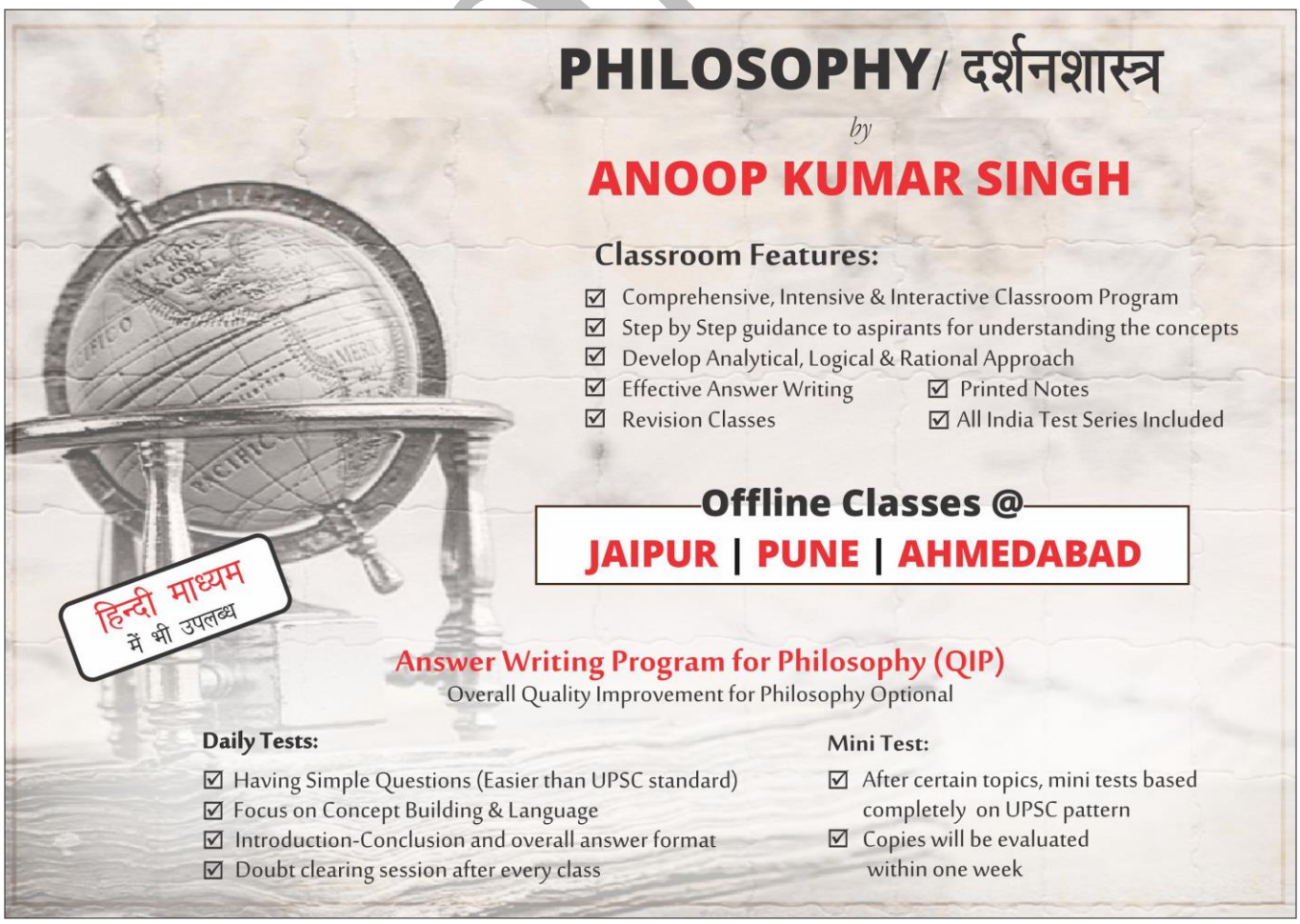

8. प्रसिद्ध व्यक्तित्व

(Personalities)

8.1. गुरु नानक

(Guru Nanak)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, गुरु नानक देव की 550वीं जयंती मनाई गई।

गुरु नानक देव के बारे में

- गुरु नानक देव सिख धर्म के **संस्थापक** एवं **प्रथम गुरु** (आदि गुरु) थे।
- उनका जन्म 1469 ई. में लाहौर के पास **राय-भोए-दी-तलवंडी** (कालांतर में **ननकाना साहिब** के रूप में पुनःनामकरण) में हुआ था।
- माना जाता है कि 1499 ई. में उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई तथा उन्होंने 'ईश्वर के आह्वान' को सुना और स्वंय को पूर्णतया मानव सेवा के प्रति समर्पित कर दिया।
    - अपने संदेश को प्रसारित करने हेतु उन्होंने उपदेश यात्राएं (उदासियाँ) आरंभ की।
    - उन्होंने 1500 से 1524 ई. तक ऐसी पांच उदासियाँ सम्पन्न की, जिसके अंतर्गत उन्होंने न केवल भारत के अधिकांश हिस्सों का भ्रमण किया, अपितु मक्का, श्रीलंका, नेपाल आदि स्थानों की भी यात्राएं की।
- अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, गुरु नानक देव पंजाब में रावी नदी के तट पर अवस्थित **करतारपुर** (सृजक का क़स्बा) नगर में बस गए थे।
    - हाल ही में, करतारपुर कॉरिडोर का उद्घाटन किया गया है, जो भारत के पंजाब राज्य में स्थित **डेरा बाबा नानक साहिब गुरुद्वारे** को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के नरोवाल जिले में स्थित पवित्र स्थल **गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर** से जोड़ता है।
    - यह कॉरिडोर रावी नदी से होकर गुजरता है।
    - गुरुद्वारा दरबार साहिब का निर्माण वर्ष 1921-1929 के मध्य पटियाला के महाराजा द्वारा कराया गया था।
- 70 वर्ष की आयु में गुरु नानक देव का निधन हो गया। उन्होंने भाई लहणा को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया तथा उनका नाम परिवर्तित कर गुरु अंगद कर दिया।
- गुरु अंगद ने **गुरुमुखी** नामक एक नई लिपि में गुरु नानक देव की रचनाओं को संकलित किया तथा इसमें उन्होंने अपनी रचनाओं को भी मिश्रित कर दिया।
- गुरु नानक देव एवं अन्य सिख गुरुओं की रचनाओं और शेख फरीद, संत कबीर, भगत नामदेव जैसे अन्य महापुरुषों की कृतियों को **गुरु ग्रंथ साहिब** (सिखों का पवित्र ग्रंथ) में संकलित किया गया है।
- गुरु नानक देव के जीवन के अधिकांश जीवनी लेख **जन्म-सखियों** (शाब्दिक रूप से जन्म की कहानियां) में शामिल हैं।
    - **जन्म-सखियां** ऐसी रचनाएं हैं, जिनका गुरु नानक देव की जीवनियों के रूप में दावा किया जाता है। इनकी रचना उनकी मृत्यु के पश्चात् विभिन्न चरणों में की गयी थी।

गुरु नानक देव के उपदेश

- उनका मानना था कि **ईश्वर निराकार (निरंकार)** है तथा एक ही ईश्वर **(एक ओंकार)** है, जो उसके द्वारा सृजित प्रत्येक प्राणियों में निवास करता है और सभी मनुष्य बिना किसी अनुष्ठान या पुजारी के ईश्वर तक प्रत्यक्ष पहुंच स्थापित कर सकते हैं।
- **समानता एवं बंधुत्व प्रेम पर आधारित** एक अद्वितीय आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मंच की स्थापना करते हुए, गुरु नानक देव ने हिंदू धर्म में प्रचलित जाति-व्यवस्था की आलोचना की तथा मुगल शासकों के धर्मतंत्र (theocracy) की निंदा की।

VISION IAS

- मोक्ष (लिबरेशन) का उनका विचार निष्क्रिय आनंद की स्थिति नहीं थी, बल्कि सामाजिक प्रतिबद्धता की एक दृढ़ भावना के साथ **सक्रिय जीवन का अनुसरण करना** था।
- पंथ, जाति या लिंग संबंधी भिन्नता के बावजूद उनके अनुयायी सामूहिक पाकशाला (लंगर) में एक साथ भोजन ग्रहण करते थे।
- गुरु नानक देव ने सिख धर्म के 3 स्तंभों की स्थापना की एवं उन्हें औपचारिक स्वरूप प्रदान किया:
  - **नाम जपना:** ईश्वर के नाम और सद्गुणों के गहन अध्ययन तथा उनकी समझ के पश्चात् पाठ, जप, गायन और निरंतर स्मरण के माध्यम से ईश्वर का ध्यान करना।
- **किरत करनी:** ईमानदारीपूर्वक शारीरिक और मानसिक प्रयास से उपार्जन करना तथा दुःख और सुख दोनों को ईश्वर का उपहार एवं आशीर्वाद मानकर स्वीकार करना।
- **वंड छकना:** सिखों को वंड छकना - **"एक दूसरे के साथ साझा एवं उपभोग करें"** - के व्यवहार द्वारा समुदाय के भीतर अपने धन को साझा करने के लिए कहा गया।

8.2. टीपू सुल्तान

(Tipu Sultan)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, कर्नाटक सरकार ने राज्य में इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों से टीपू सुल्तान के अध्याय को हटाने की घोषणा की है तथा इसके साथ ही टीपू जयंती का सार्वजनिक समारोह भी अब नहीं मनाया जाएगा।

टीपू सुल्तान के बारे में

- 1782 ई. में द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् टीपू सुल्तान मैसूर का शासक बना।
- टीपू सुल्तान को उसकी निर्भीकता के कारण **"टाइगर ऑफ़ मैसूर"** के रूप में संदर्भित किया जाता है तथा वह एक प्रतिभाशाली **सैन्य रणनीतिकार** था। अपने 17 वर्षीय अल्प शासनकाल में उसने ईस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा के समक्ष सर्वाधिक गंभीर चुनौती उत्पन्न की थी।
- हालांकि, चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान हैदराबाद के निजाम और मराठों द्वारा अंग्रेजों को प्रदत्त सहायता के कारण टीपू सुल्तान **4 मई 1799** को श्रीरंगपट्टनम के अपने किले की रक्षा करते हुए **पराजित हो गया तथा मार दिया गया।**
- टीपू सुल्तान की मृत्यु के उपरांत लॉर्ड वेलेजली ने पुन: सिंहासनारूढ़ हुए वडियार राजा पर **सहायक संधि** आरोपित कर दी तथा मैसूर, ईस्ट इंडिया कंपनी का एक अधीन राज्य बन गया।

टीपू सुल्तान की उपलब्धियाँ

- **व्यापार:** उसने व्यापार को बढ़ाने हेतु नौसेना का गठन किया तथा कारख़ानों के निर्माण हेतु एक "राज्य वाणिज्यिक निगम" की भी स्थापना की।
- **कृषि:** उसने कृषि का आधुनिकीकरण किया, बंजर भूमि के विकास हेतु कर छूट प्रदान की, सिंचाई अवसंरचनाओं का निर्माण व पुराने बांधों का जीर्णोद्धार करवाया तथा कृषिगत विनिर्माण एवं रेशम कीट पालन को प्रोत्साहित किया।
- **कूटनीति:** उसने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में अपनी सहायतार्थ फ्रांस, अफ़ग़ानिस्तान के अमीर और तुर्की के सुल्तान जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों का विश्वास अर्जित किया। इसके अतिरिक्त, वह 'मैसूर के जैकोबिन क्लब' (Jacobin Club of Mysore) का संस्थापक-सदस्य था तथा इस क्लब द्वारा उसने फ्रांस के प्रति अपनी निष्ठा का प्रदर्शन भी किया था।
- **प्रशासन:** उसने **श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष (लिबर्टी ट्री)** भी लगाया तथा स्वयं को नागरिक टीपू के रूप में घोषित किया। जिस प्रकार यह साक्ष्य विद्यमान है कि टीपू सुल्तान ने हिंदुओं एवं ईसाईयों पर अत्याचार किए, उसी प्रकार ये साक्ष्य भी मौजूद हैं कि उसने अनेक हिन्दू मंदिरों एवं पुजारियों को संरक्षण प्रदान किया तथा उन्हें अनुदान व उपहार भी दिए।

VISION IAS

एक निरंकुश शासक के रूप में टीपू सुल्तान की छवि हेतु उत्तरदायी कारण

- **ब्रिटिश विवरण:** जेम्स किर्कपैट्रिक और मार्क विल्क्स जैसे ब्रिटिश लेखकों ने अपने विवरण में टीपू सुल्तान को एक निरंकुश शासक के रूप में वर्णित किया है।
  - हालांकि, इरफ़ान हबीब और मोहिब्बुल हसन जैसे विभिन्न इतिहासकारों ने तर्क दिया है कि इन दोनों लेखकों द्वारा टीपू को एक निरंकुश शासक के रूप में चित्रित करने के पीछे स्पष्ट साम्राज्यिक हित निहित थे, क्योंकि इन दोनों ने टीपू सुल्तान के विरुद्ध हुए युद्धों में भाग लिया था तथा ये लॉर्ड कार्नवालिस और लॉर्ड रिचर्ड वेलेजली के प्रशासन से घनिष्ट रूप से संबंधित थे।
- **क्षेत्रीय महत्वकांक्षाएं और धार्मिक नीति:** टीपू ने कोडागू, मंगलुरु और कोच्ची पर आक्रमण किए थे। इन सभी स्थानों पर, उसे एक निरंकुश शासक के रूप में देखा जाता है, जिसने संपूर्ण कस्बे एवं ग्रामों में आग लगवा दी, सैकड़ों मंदिरों और गिरिजाघरों को नष्ट करवा दिया तथा हिंदुओं का जबरन धर्मांतरण करवाया।

8.3. महाराजा रणजीत सिंह

(Maharaja Ranjit Singh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **महाराजा रणजीत सिंह (1780-1839 ई.)** की 180वीं पुण्यतिथि पर पाकिस्तान स्थित लाहौर के किले में उनकी प्रतिमा का अनावरण किया गया।

महाराजा रणजीत सिंह के बारे में

- वे एक सिख शासक थे, जिन्होंने 19वीं शताब्दी ईस्वी में पंजाब में शासन किया था।
- 18वीं शताब्दी के दौरान पंजाब शक्तिशाली सरदारों के आधिपत्य में था, जिन्होंने संपूर्ण क्षेत्र को मिसलों में विभाजित किया था।
  - रणजीत सिंह ने इन परस्पर युद्धरत मिसलों का अंत किया तथा 1799 ईस्वी में लाहौर पर विजय के उपरांत एक संयुक्त सिख साम्राज्य की स्थापना की।
  - रणजीत सिंह **सुकरचकिया मिसल** से संबंधित थे।
- उन्होंने आधुनिक चीन और अफ़ग़ानिस्तान की सीमा तक विस्तारित क्षेत्र पर शासन किया था। उनका शासन **'सरकार-ए-खालसा'** कहलाता था।
  - उन्हें **'शेर-ए-पंजाब'** की उपाधि प्रदान की गई थी, क्योंकि उन्होंने लाहौर में अफगान आक्रमण को विफल कर दिया था।
- **राज्य का धर्मनिरपेक्ष चरित्र:** उनके शासनकाल के तहत सिख साम्राज्य अत्यधिक धर्मनिरपेक्ष था। प्रशासन में विभिन्न धर्मों के लोगों को शामिल होने और प्रभावशाली पदों तक पहुँचने की अनुमति प्रदान की गई थी।
- **सेना का आधुनिकीकरण:** पैदल सेना और तोपखाने के प्रशिक्षण हेतु उन्होंने यूरोपीय अधिकारियों की सेवाओं का प्रयोग करते हुए अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया।
  - उन्होंने अपनी सेना का आधुनिकीकरण करने हेतु फ़्रांसीसी जनरल जीन फ़्रैंको अलार्ड को नियुक्त किया था।
  - अपने जीवनकाल में पंजाब को अंग्रेजों द्वारा उपनिवेश बनाए जाने से रोकने हेतु उन्होंने **सिख खालसा सेना** का निर्माण किया था।
- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक योगदान:** अमृतसर के **प्रतिष्ठित स्वर्ण मंदिर का स्वर्ण और संगमरमर से अलंकरण किए जाने का कार्य** उनके संरक्षण के अंतर्गत ही पूर्ण हुआ था।
  - उन्हें महाराष्ट्र के नांदेड़ में गुरु गोविंद सिंह के अंतिम विश्राम स्थल पर स्थित **हजूर सिंह गुरुद्वारे** को धन दान करने का श्रेय भी दिया जाता है।
  - उन्होंने नए सिक्के जारी किए, जिन पर सिख गुरुओं के नाम अंकित थे तथा सिख राष्ट्रमंडल के नाम पर राज्य का प्रशासन किया।
  - **कोहिनूर हीरा** जो वर्तमान में इंग्लैंड की महारानी के अधिकार में है, कभी महाराजा रणजीत सिंह के खजाने का भाग था।

VISION IAS

1809 ई. की अमृतसर की संधि

- यह संधि 1809 ई. में महाराजा रणजीत सिंह और **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी** (लॉर्ड मिंटो) के मध्य हस्ताक्षरित हुई थी। यह संधि ब्रिटिश सरकार और लाहौर राज्य (सिख साम्राज्य की राजधानी) के मध्य **शाश्वत मित्रता** को बनाए रखने पर केंद्रित थी।
  - इस संधि के द्वारा **सतलज नदी** को रणजीत सिंह के साम्राज्य की पूर्वी सीमा के रुप में **निर्धारित** किया गया था।
- यह कहा जाता है कि इस संधि ने **रणजीत सिंह के जमुना (यमुना) और सतलज नदियों के मध्य के क्षेत्रों पर सिख वर्चस्व स्थापित करने के स्वप्न को ध्वस्त कर** दिया था, क्योंकि संधि के द्वारा सतलज नदी के पूर्व की ओर उनकी शक्ति के विस्तार को रोक दिया गया था।

8.4. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

(Ishwar Chandra Vidyasagar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, कोलकाता में हुए हिंसक संघर्षों के दौरान **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर** की प्रतिमा को खंडित कर दिया गया था।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के बारे में (1820-1891 ई.)

- ईश्वर चन्द्र को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन हेतु **विद्यासागर** (ज्ञान का महासागर) की उपाधि प्रदान की गई थी। वे एक प्रसिद्ध शिक्षाविद, संस्कृत के विद्वान तथा एक समाज सुधारक थे जिन्होंने हिन्दू समाज की **दमनकारी सामाजिक परम्पराओं** का विरोध किया था।
- उन्हें फोर्ट विलियम्स कॉलेज द्वारा यूरोपीय रंगरूटों को बंगाली भाषा की शिक्षा देने हेतु आमंत्रित किया गया था तथा कालांतर में उन्हें संस्कृत विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। वर्ष 1846 में वे **संस्कृत कॉलेज** से संबद्ध हुए।
- वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि **पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों का समामेलन अंधविश्वास एवं पूर्वाग्रहों को समाप्त करेगा।**

एक समाज सुधारक

- **आधुनिक बंगाली समाज का निर्माण:** यद्यपि वे संस्कृत के विद्वान थे तथापि उन्होंने **तर्क एवं विवेक के आधार पर** प्रथाओं एवं परम्पराओं की व्याख्या की तथा **सामूहिक पहचान के ऊपर व्यक्तिगत अधिकारों** को समर्थन प्रदान किया। **बंगाल पुनर्जागरण** के नाम से ज्ञात बृहत् सामाजिक आन्दोलन के एक भाग के रूप में उनके योगदान निम्नलिखित हैं:
  - **विधवा पुनर्विवाह हेतु अभियान:** वर्ष 1854 में उन्होंने **तत्वबोधिनी पत्रिका** में विधवा पुनर्विवाह न करने की कुप्रथा के विरुद्ध विभिन्न लेखों के माध्यम से विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में एक अभियान प्रारंभ किया।
    - उन्होंने ब्राह्मण विद्वानों को चुनौती दी तथा यह सिद्ध किया कि वैदिक ग्रन्थों द्वारा विधवा पुनर्विवाह को स्वीकृति प्रदान की गई है (उन्होंने एक प्राचीन विधिक साहित्य **पराशर संहिता** से एक छंद का उद्धरण दिया जो विधवा पुनर्विवाह का पक्षपोषी था)।
    - वर्ष 1855 में उन्होंने विधवा पुनर्विवाह को अनुमति प्रदान करने हेतु सरकार के समक्ष एक याचिका प्रस्तुत की, जिसके परिणामस्वरूप **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856** पारित हुआ। एक दृष्टांत प्रस्तुत करने हेतु उन्होंने अपने पुत्र नारायण चंद्र का विवाह एक किशोरी विधवा से किया था।
- **पिछड़ी जातियों को प्रवेश:** वर्ष 1846 में संस्कृत कॉलेज में नियुक्त होने के पश्चात् उन्होंने संस्कृत अध्ययन हेतु निम्न जातियों के विद्यार्थियों को प्रवेश न देने की परंपरा का विरोध किया। उन्होंने यह तर्क देने हेतु **भागवत पुराण** का उद्धरण दिया कि "शास्त्रों में इस संबंध में कोई प्रत्यक्ष प्रतिबंध आरोपित नहीं हैं कि शूद्र संस्कृत का अध्ययन नहीं कर सकते"।
- उन्होंने कुलीन ब्राह्मणों के मध्य प्रचलित **बहुविवाह की प्रथा के विरुद्ध अभियान** प्रारंभ किया। यद्यपि उनका यह आन्दोलन विधान में परिणत नहीं हुआ तथापि इसके सामाजिक प्रभाव विचारणीय थे।
- **बाल विवाह:** बाल विवाह जैसी कुप्रथा को प्रबलता से चुनौती देते हुए उन्होंने बालिकाओं की विवाह योग्य आयु को निर्धारित करने की मांग की। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश सरकार ने **वर्ष 1891** में **एज ऑफ़ कंसेंट एक्ट (सम्मति आयु अधिनियम)** पारित किया, जिसके द्वारा बाल विवाह को अवैध घोषित कर दिया गया।

VISION IAS

शैक्षणिक सुधार

- उन्हें संस्कृत कॉलेज में प्रचलित **मध्यकालीन परंपरागत शैक्षणिक प्रणाली** को पूर्णतया पुनर्निर्मित करने तथा उसमें आधुनिक परिज्ञान का समावेश करने का श्रेय प्रदान किया जाता है। उन्होंने निम्नलिखित कार्य किए:
  - संस्कृत के अतिरिक्त, अध्ययन के माध्यम के रूप में अंग्रेजी और बंगाली भाषाओं का समावेश।
  - वैदिक ग्रंथों के साथ-साथ यूरोपीय इतिहास, दर्शन और विज्ञान के पाठ्यक्रम का प्रारम्भ।
  - विद्यालय सुधारों के भाग के रूप में नियमित कक्षाएं और साप्ताहिक अवकाश जैसी आधुनिक अवधारणाएँ।
  - प्रथम बार प्रवेश शुल्क एवं अध्यापन शुल्क की संकल्पना का समावेश।
- **महिला शिक्षा:**
  - वे महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिला शिक्षा हेतु अनेक कार्य किए।
  - कन्याओं हेतु एक विद्यालय की स्थापना के लिए अपने पक्ष में जनमत तैयार किया तथा आजीविका के माध्यम से उन्हें **आत्म-निर्भर** बनाने हेतु एक उपयुक्त पाठ्यक्रम को रेखांकित भी किया। उन्होंने महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए ऋण समर्थन प्रदान करने हेतु **नारी शिक्षा भंडार** नामक एक **निधि** की भी स्थापना की।
  - उन्होंने महिलाओं हेतु संपूर्ण बंगाल में 35 विद्यालय स्थापित किए तथा उनमें 1,300 छात्राओं का नामांकन करवाने में भी सफल हुए।
  - उन्होंने भारत में कन्याओं हेतु प्रथम स्थायी विद्यालय की स्थापना के लिए जॉन बेथुन को समर्थन प्रदान किया। **बेथुन स्कूल** की स्थापना वर्ष 1849 में हुई थी।
  - उन्होंने अपने अंतिम दो दशक झारखंड में संथाल जनजाति के साथ व्यतीत किए तथा प्रथम बार जनजातीय कन्याओं हेतु एक विद्यालय की स्थापना की।
- **साहित्य में योगदान:**
  - उन्होंने अपनी पुस्तक **'वर्ण परिचय' (Borno Porichoy)** के माध्यम से बंगाली भाषा के लेखन और पठन के तरीके में एक क्रांति का सृजन किया। ज्ञातव्य है कि वर्तमान में भी बंगाली वर्णाक्षरों को सीखने हेतु एक परिचयात्मक पाठ के रूप में इस पुस्तक का प्रयोग किया जाता है।
  - उन्होंने बंगाली भाषा में 'उपक्रमणिका' (Upakramonika) और 'व्याकरण कौमुदी' (Byakaran Koumudi) नामक छात्र अनुकूल संस्कृत व्याकरण पुस्तकों की रचना की।
  - **कालिदास की शकुंतला (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)** सहित अनेक संस्कृत पुस्तकों का बंगाली भाषा में अनुवाद किया।
  - विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार पर दो संस्करणों की रचना की जिसने राज्य में प्रमुख सामाजिक सुधारों हेतु प्रवृत्ति को निर्धारित किया।
- **पत्रकारिता में योगदान:** वे 'तत्वबोधिनी पत्रिका', 'सोमप्रकाश' 'हिन्दू पैट्रियट' आदि पत्रिकाओं से संबंधित थे।
- उन्होंने शिक्षण पद्धतियों में समानता का सृजन करते हुए **अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु नॉर्मल स्कूल** की स्थापना की। उन्होंने 1872 ई. में **मेट्रोपोलिटन इंस्टीट्यूट** की भी स्थापना की थी।
- उन्होंने वहनीय मूल्यों पर विद्यालयी पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन हेतु **संस्कृत प्रेस की भी स्थापना की थी।**

8.5. अशफ़ाक़ुउल्ला ख़ाँ

(Ashfaqullah Khan)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल ने गोरखपुर में एक प्राणि उद्यान की स्थापना के लिए 234 करोड़ रुपये के एक प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की है, जिसका नामकरण स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी शहीद अशफ़ाक़ुउल्ला ख़ाँ के नाम पर किया जाएगा।

VISION IAS

अशफ़ाक़ुउल्ला ख़ाँ के बारे में

- अशफ़ाक़ुउल्ला ख़ाँ को राम प्रसाद बिस्मिल के साथ वर्ष 1925 के काकोरी षड्यंत्र के आरोप में मृत्युदंड की सजा दी गई थी।
- इनका जन्म 22 अक्टूबर 1900 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में हुआ था।
- ये उन युवाओं में शामिल थे, जो महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन को वापस लिए जाने से असंतुष्ट थे।
- उन्होंने "अहिंसक रणनीतियों में घटते विश्वास" को महसूस किया तथा यह माना कि उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता के लिए अधिक "उग्रपंथी तरीकों" को अपनाए जाने की आवश्यकता है।
- अशफाक ने उर्दू (अधिकांशतः) और हिंदी में **वारसी एवं हज़रत** उपनाम से कविताओं की रचना की।
- 1920 के दशक के मध्य में, अशफाकउल्ला ख़ाँ और राम प्रसाद बिस्मिल ने हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) की स्थापना में भागीदारी की।
    - HSRA ने वर्ष 1925 में "द रिवोल्यूशनरी" नामक शीर्षक से अपना घोषणा-पत्र प्रकाशित किया, जिसमें कहा गया था कि "राजनीति के क्षेत्र में इस क्रांतिकारी दल का तात्कालिक उद्देश्य एक संगठित और सशस्त्र क्रांति के द्वारा रिपब्लिक ऑफ़ यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ इंडिया की स्थापना करना है"।

काकोरी षड्यंत्र से संबंधित तथ्य

- अगस्त 1925 में, सरकारी धन लेकर जा रही काकोरी एक्सप्रेस में एक सशस्त्र डकैती की गयी थी।
- इस डकैती को HSRA की गतिविधियों के संचालन हेतु आयोजित किया गया था, जिसमें बिस्मिल, अशफाकउल्ला ख़ाँ और 10 से अधिक अन्य क्रांतिकारियों ने ट्रेन को रोककर उसमें रखी गयी नकदी को लूट लिया था।
- लगभग 18 माह तक चली कार्रवाई के पश्चात् वर्ष 1927 में न्यायालय द्वारा निर्णय दिया गया। इस निर्णय में बिस्मिल, अशफ़ाक़ुउल्ला ख़ाँ, राजेंद्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को मृत्युदंड तथा अन्य को आजीवन कारावास की सजा दी गई थी।

8.6. विनायक दामोदर सावरकर

(Vinayak Damodar Savarkar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रख्यात दार्शनिक **विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर)** की 136 वीं जयंती मनाई गई।

वीर सावरकर के बारे में (1883-1966 ई.)

- वे एक स्वतंत्र कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, अधिवक्ता, लेखक और हिंदुत्व दर्शन के प्रणेता थे।
- **प्रमुख रचनाएँ:** द इंडियन वार ऑफ़ इंडिपेंडेंस ऑफ़ 1857 (इसे ब्रिटिश शासन द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था), हिंदुत्व (उन्होंने रत्नागिरी जेल में इसकी रचना की थी), हिन्दू पद-पादशाही, जोसेफ़ मेजिनी आदि।

सावरकर के विभिन्न रूप

- **स्वतंत्रता सेनानी:**
    - उन्होंने **'मित्र मेला'** नामक एक संगठन की स्थापना की, जिसे कालांतर में **'अभिनव भारत'** नाम दिया गया था। इस संगठन ने सदस्यों को भारत की 'पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता' हेतु संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया था।
- वे इंडिया हाउस (इंग्लैंड) से भी संबंधित थे, जिसके लिए उन्हें वर्ष 1910 में गिरफ्तार कर लिया गया तथा बाद में उन्हें **अंडमान और निकोबार द्वीप की सेलुलर जेल** में स्थानांतरित कर दिया गया था। उन्हें वर्ष 1921 में रिहा किया गया।
- कालांतर में उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु **रत्नागिरी हिन्दू सभा** की स्थापना की थी तथा सामाजिक कल्याण की दिशा में कार्य किया।
- वे **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** तथा भारत के विभाजन की उसकी स्वीकृति के **कटु आलोचक** बन गये थे।

VISION IAS

- **हिंदुत्व विचारक:**
  - मुस्लिम लीग के प्रति प्रतिक्रिया हेतु सावरकर **हिन्दू महासभा** में शामिल हो गए तथा भारत (इंडिया) के सार के रूप में एक **सामूहिक "हिन्दू" पहचान** के सृजन हेतु हिंदुत्व पद को लोकप्रिय बनाया।
  - उन्होंने धार्मिक मिथकों/अंधविश्वासों को प्रमाणित करने हेतु आधुनिक वैज्ञानिक परीक्षण का समर्थन किया, इसलिए उन्हें **तर्कवादी और सुधारक** भी कहा जाता है।
  - वर्ष 1937 में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने "एक **हिन्दू राष्ट्र** के रूप में भारत" के विचार का समर्थन किया तथा वर्ष 1942 के **भारत छोड़ो आन्दोलन** का विरोध किया था।
- **समाज सुधारक:**
  - वे जन्म के आधार पर निर्धारित जाति व्यवस्था के अत्यधिक प्रबल आलोचक थे।
  - वर्ष 1930 में उन्होंने प्रथम **अखिल-हिन्दू गणेशोत्सव** प्रारम्भ किया। अस्पृश्य लोगों द्वारा प्रस्तुत 'कीर्तन' इन उत्सवों की पहचान है।
  - उन्होंने महाराष्ट्र में कई **मंदिर आन्दोलन** आरम्भ किए, जिनमें अस्पृश्यों को प्रार्थना करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता था। (उदाहरणार्थ- **रत्नागिरी में पतितपावन मंदिर)**

हिन्दू महासभा

- वर्ष 1907 में गठित हिन्दू महासभा वस्तुतः हिंदुओं के मुद्दों को सुरक्षित रखने हेतु स्थापित एक दल है।
- वर्ष 1915 में **प्रमुख हिन्दू नेताओं** ने इस संगठन का विस्तार कर इसे अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया। ये नेता थे- मदन मोहन मालवीय, एन. सी. केलकर, लाला लाजपत राय, वीर सावरकर, डॉ. एस .पी. मुखर्जी, डॉ. एन. बी. खरे आदि।
- यद्यपि महासभा ब्रिटिश शासन की समर्थक नहीं थी, परन्तु इसने **राष्ट्रवादी आन्दोलन को भी पूर्ण समर्थन प्रदान नहीं किया।** हिंदू महासभा ने वर्ष 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लिया था।
- इसके द्वारा 30 जनवरी को **शौर्य दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

8.7. मुहम्मद इक़बाल

(Muhammad Iqbal)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, उत्तर प्रदेश के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य को उनके विद्यार्थियों द्वारा मुहम्मद इक़बाल द्वारा रचित एक कविता के वाचन के कारण निलंबित कर दिया गया।

मुहम्मद इक़बाल के बारे में

- सर मुहम्मद इक़बाल को अल्लामा इक़बाल के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने **"सारे जहां से अच्छा" (वैकल्पिक रूप से 'तराना-ए-हिन्द' के रूप में भी प्रसिद्ध)** कविता की रचना की थी।
  - यह कविता 16 अगस्त 1904 को एक साप्ताहिक पत्रिका इत्तेहाद में प्रकाशित की गई थी।
- उनका जन्म 9 नवंबर 1877 को **पंजाब के सियालकोट** (वर्तमान में पाकिस्तान) में कश्मीरी ब्राह्मण वंशावली वाले एक परिवार में हुआ था।
- इक़बाल एक कवि व दार्शनिक थे, जिनकी कृतियों ने **आत्मत्व के दर्शन** को प्रोत्साहित किया। वे **मुस्लिम जगत के बौद्धिक व सांस्कृतिक पुनर्निर्माण** से संबद्ध थे।
- उनकी अधिकांश कृतियां **उर्दू एवं फ़ारसी** भाषाओं में रचित थी।
- इक़बाल की कविताओं के संग्रह का प्रथम प्रकाशन वर्ष 1923 में **"बंग-ए-दर्रा" (कॉल ऑफ़ मार्चिंग बेल)** के नाम से किया गया था।

- उनकी अन्य प्रमुख कृतियों में सम्मिलित हैं:
  - ज़बूर-ए-आजम, बाल-ए-जिब्रील (द गैब्रिएल्स विंग्स);
  - मुसाफिर (यात्री);
  - मिस्ट्रीज ऑफ़ सेल्फलेसनेस;
  - सीक्रेट्स ऑफ़ द सेल्फ: असरार-ए-खुदी; तथा
  - द रिकंस्ट्रक्शन ऑफ़ रिलीजियस थॉट इन इस्लाम।
- वर्ष 1930 में, इक़बाल ने इलाहाबाद में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के 25वें अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण (प्रचलित रूप से **'इलाहाबाद संबोधन'** के रूप में संदर्भित) दिया। इसमें उन्होंने **इस्लाम और राष्ट्रवाद, भारतीय राष्ट्र की एकता एवं रक्षा** की समस्या पर अपने विचार प्रस्तुत किए थे।
- वर्ष 1931-1932 में उन्होंने **लंदन में आयोजित द्वितीय एवं तृतीय गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था।**
- कालांतर में वह यह विश्वास करने लगे थे कि स्वतंत्र मुस्लिम देश अथवा देशों के बिना देश में शरीयत का प्रवर्तन एवं विकास असंभव है।
- यह माना जाता है कि **पाकिस्तान के निर्माण के विचार और दो राष्ट्र सिद्धांत के जन्मदाता** मुहम्मद इक़बाल ही थे तथा उन्हें "पाकिस्तान का आध्यात्मिक पिता" भी कहा जाता है, जबकि जिन्ना वह व्यक्ति हैं जिन्होंने इस परिकल्पना को मूर्त रूप प्रदान किया।

8.8. दारा शिकोह

(Dara Shikoh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संस्कृति मंत्रालय ने मुगल शहज़ादे दारा शिकोह (1615-59 ई.) की कब्र का पता लगाने हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की **सात सदस्यीय समिति** का गठन किया है। वस्तुतः यह माना जाता है कि दारा शिकोह को **दिल्ली स्थित हुमायूं के मक़बरा परिसर** में ही कहीं पर दफनाया गया था।

दारा शिकोह के बारे में

- दारा शिकोह, मुगल सम्राट शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र था। शाहजहाँ ने 1642 ई. में दारा शिकोह की औपचारिक रूप से अपने उत्तराधिकारी के रूप में पुष्टि कर दी थी तथा उसे **शहजादा-ए-बुलंद इक़बाल** की उपाधि प्रदान की थी।
- औरंगज़ेब द्वारा उत्तराधिकार के युद्ध में दारा शिकोह को पराजित कर उसकी हत्या कर दी गई थी।
  - 1657 ई. में मुग़ल बादशाह शाहजहाँ के गंभीर रोग के उपरांत उसके पुत्रों (एक ओर **औरंगज़ेब और मुराद बख्श** तथा दूसरी ओर **दारा शिकोह**) के मध्य उत्तराधिकार के लिए संघर्ष हुआ, जिसमें 1658 ई. का **सामूगढ़ का युद्ध** निर्णायक सिद्ध हुआ था।
- दारा शिकोह का व्यक्तित्व उदारवादी था तथा उसने हिंदू और इस्लामी परंपराओं के मध्य समानताएं खोजने का प्रयास किया।

कला और संस्कृति में योगदान

- उसने 1657 ई. में **भगवद्गीता के साथ-साथ उपनिषदों का मूल संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया** ताकि मुस्लिम विद्वानों द्वारा उनका अध्ययन किया जा सके।
  - उसके द्वारा उपनिषदों का फारसी में किया गया अनुवाद **सिर्र-ए-अकबर ("सबसे बड़ा रहस्य")** के नाम से विख्यात है, जिसमें उसने कुरान में प्रतिपादित मतों एवं उपनिषदों में व्यक्त विचारों के मध्य समानता को दर्शाया है।
  - **मज्म-उल-बहरीन:** उसके द्वारा फारसी में रचित एक लघु ग्रंथ है, जो **सूफी और वेदांतिक** चिंतन के मध्य रहस्यवादी और बहुलतावादी समानताओं के रहस्योद्घाटन के प्रति समर्पित है।
- **'दारा शिकोह एलबम',** दारा शिकोह द्वारा 1630 ई. के दौरान एकत्रित किए गए चित्रों और सुलेखों का एक समुच्चय है, जिसे 1641-42 ई. में उसने अपनी पत्नी नादिरा बानो बेगम को उपहारस्वरूप प्रदान किया था।

VISION IAS

- उसे **मुगल स्थापत्य कला** की कई उत्कृष्ट इमारतों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है, जैसे कि, उसकी पत्नी नादिरा बेगम का मक़बरा (लाहौर), मियाँ मीर की दरगाह (लाहौर), दारा शिकोह पुस्तकालय (दिल्ली), **अखुन मुल्ला शाह मस्जिद** (श्रीनगर) और **'परी महल'** नामक एक उद्यान महल (श्रीनगर) आदि।
- कुछ इतिहासकारों का तर्क है कि दारा शिकोह का स्वभाव और विचार औरंगज़ेब से पूर्णतया विपरीत थे। वह अधिक समधर्मी, दयालु और उदार व्यक्ति था, परन्तु साथ ही वह एक उदासीन प्रशासक और युद्ध क्षेत्र में अप्रभावी योद्धा भी था।
- **इतालवी यात्री निकोलो मनुची** ने अपनी पुस्तक **ट्रैवल्स ऑफ मनुची** में दारा शिकोह की मृत्यु के संबंध में विवरण प्रदान किया है।

8.9. आदि शंकर

(Adi Shankar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

आदि शंकर द्वारा **पुरी** में स्थापित **गोवर्धन मठ** ओडिशा सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर होगा।

आदि शंकर के बारे में

- आदि शंकर **8वीं सदी** के **भारतीय दार्शनिक और धर्म शास्त्री** थे। उनके द्वारा **अद्वैत वेदांत सिद्धांत** का प्रतिपादन किया गया था।
  - अद्वैत वेदांत हिंदू धर्म का अद्वैतवादी संप्रदाय है। यह वेदों एवं उपनिषदों पर आधारित है, इसमें **एक सत्य एवं एक ईश्वर** को मान्यता प्रदान की गई हैं।
  - अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म (निर्गुण ईश्वर) ही एक मात्र सत्य है और आत्मा ब्रह्म का ही रूप है।
- उन्होंने उपनिषदों के मूलभूत विचारों की व्याख्या की और हिंदू धर्म की सर्वाधिक प्राचीन अवधारणा का समर्थन किया, जो परमात्मा (निर्गुण ब्रह्म) के साथ आत्मा के एकीकरण की पुष्टि करती है।
  - उन्होंने आत्मा और निर्गुण ब्रह्म के अस्तित्व का समर्थन किया।
  - उनका मानना था कि निर्गुण ब्रह्म ही सत्य और अपरिवर्तनशील है।
- उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य **छह उप-संप्रदायों** को संक्षेपित करने के लिए किया गया उनका प्रयास था, जिन्हें 'षण्मत' के रूप में जाना जाता है।
- उन्होंने **'दशनामी संप्रदाय'** की भी स्थापना की, जो मठवासी जीवनयापन करने का समर्थन करता है, जबकि शंकराचार्य प्राचीन हिंदू धर्म में दृढ़ विश्वास करते थे। उन्होंने 'हिंदू धर्म के मीमांसा संप्रदाय' की निंदा की, जो कि विशुद्ध रूप से अनुष्ठानिक प्रथाओं पर आधारित था।
- उन्होंने चार मठों नामतः **श्रृंगेरी शारदा पीठ, द्वारकापीठ, ज्योतिर्मठ पीठम** और **गोवर्धन मठ** की स्थापना की, जिनके माध्यम से उनकी शिक्षाओं का प्रसार जारी रखा गया है।
- उन्होंने प्रसिद्ध **'उपदेशसहस्री'** की भी रचना की, जिसका शाब्दिक अनुवाद 'हजार शिक्षाएं' हैं।

8.10. तिरुवल्लुवर

(Thiruvalluvar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **केसरिया रंग के परिधान में तिरुवल्लुवर का चित्र ट्वीट** करने से तमिलनाडु में एक विवाद आरम्भ हो गया था।

तिरुवल्लुवर के बारे में

- सामान्यतः **वल्लुवर** के नाम से प्रसिद्ध तिरुवल्लुवर, एक तमिल संत, कवि और दार्शनिक थे। प्रायः चित्रों में उन्हें एक सफेद शॉल धारण किए हुए दर्शाया जाता है।
- तिरुवल्लुवर का वास्तविक नाम, जन्म तिथि एवं जन्मस्थान, धार्मिक संबद्धता और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में विवरण उपलब्ध नहीं है। अनेक शोधकर्ताओं का मानना है कि उनका जन्म प्रथम शताब्दी ई. पू. और द्वितीय शताब्दी ई. के मध्य हुआ था।

VISION IAS

- तिरुवल्लुवर का **नैतिक दर्शन** मानव-केंद्रित है, क्योंकि इसके तहत पारलौकिक सुख की तुलना में इहलौकिक सुख पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।
    - इसके अतिरिक्त, उन्होंने दु:खों के निरपेक्षीकरण और इसके लिए आदर्श निर्मित करने तथा उनको पारलौकिक बनाने का विरोध किया।
- उन्होंने दृढ़तापूर्वक अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, पवित्रता, अहिंसा, संयम और भक्तिमय जीवन का समर्थन किया।
- उनकी सर्वाधिक पहचान **तिरुक्कुरल** के रचयिता के रूप में है। तिरुक्कुरल वस्तुतः नैतिकता, राजनीति, आर्थिक मामलों और प्रेम पर 1,330 दोहों का एक संग्रह है।
    - तिरुक्कुरल में, **'आदि भगवान'** वाक्यांश के माध्यम से, तिरुवल्लुवर ने कहा था कि **सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी ईश्वर सार्वभौमिक है।**

तिरुक्कुरल के बारे में

- तमिल भाषा में रचित, यह आचार संहिता एवं सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित एक प्राचीन ग्रंथ है।
- यह एक नैतिक संकलन है जिसे अग्रलिखित तीन प्रमुख शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है- अराम (धर्म), पोरुल (अर्थ) और इब्म (काम):
    - इन शीर्षकों का वैचारिक निहितार्थ यह है कि सभी को नैतिक साधनों के माध्यम से ही धन अर्जित करना चाहिए।
    - यह दृष्टिकोण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की संस्कृत परंपरा के समान है।
- जीवन के चार पहलुओं (पुरुषार्थ), यथा- अराम, पोरुल, इब्म और वीदु (मोक्ष) में से **तिरुक्कुरल केवल प्रथम तीन को ही संबोधित करते हैं** तथा इनके माध्यम से वीदु तक पहुँचने का मार्ग प्रस्तुत करते हैं, इसलिए इन तीनों को **मुप्पल (3 तत्व)** कहा जाता है।
- यह व्यक्तियों हेतु सामाजिक दिशा-निर्देश प्रदान करने का प्रयास करता है (जैसे- तपस्वी, परिवार के सदस्य आदि), जो स्वयं और दूसरों के लिए उत्तरदायी हैं।

8.11. गुरु रविदास जयंती

(Guru Ravidas Jayanti)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संपूर्ण देश में संत रविदास जयंती मनाई गई।

संत रविदास के बारे में

- संत रविदास 14वीं सदी के एक **संत-कवि, समाज सुधारक, आध्यात्मिक व्यक्तित्व और उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के संस्थापक थे।**
- उनके माता-पिता चर्मकार समुदाय से संबंधित थे, जिन्हें **अस्पृश्य** समझा जाता था।
- उनके भक्ति गीतों को सिख ग्रंथ **गुरु ग्रंथ साहिब** में संकलित किया गया है।
- संत रविदास ने **जाति और लिंग के सामाजिक विभाजन** को अस्वीकार करने की शिक्षा दी तथा व्यक्तिगत आध्यात्मिक स्वतंत्रता के अनुसरण में **एकता** को प्रोत्साहित किया।
- **मीराबाई** रविदास की शिष्या बन गई थी। दादूपंथी परंपरा के पंच वाणी ग्रंथों में भी रविदास की कई कविताएं शामिल हैं।
- उन्हें **रविदासिया धर्म** का संस्थापक भी माना जाता है, जिसमें पूर्व में सिख धर्म से जुड़े कई लोग सम्मिलित हुए।
- रविदास के भजनों की विषय वस्तु निर्गुण-सगुण विषयों पर आधारित है, साथ ही उनके विचार हिंदू धर्म के नाथ योग दर्शन की स्थापना के आधार बनें।

VISION IAS

8.12. वेदांत देशिक

(Vedanta Desikan)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, उपराष्ट्रपति द्वारा **श्री वेदांत देशिक की 750वीं जयंती** के अवसर पर उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया गया।

वेदांत देशिक के बारे में

- श्री वेदांत देशिक **श्रीवैष्णव परंपरा** के सबसे प्रभावशाली संतों में से एक थे। **वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।**
- वे **"सर्व-तंत्र-स्वतंत्र"** अथवा सभी कलाओं एवं शिल्पों के स्वामी के रूप में विख्यात हैं तथा **"कवि-तार्किक-केसरी"** की उपाधि से सम्मानित हैं।
- **दर्शन:**
  - वेदांत देशिक की कृतियों एवं उपदेशों के माध्यम से श्रीवैष्णव दर्शन ने अत्यधिक श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित किया।
  - **समावेशन के पहलू** उनके दर्शन की प्रमुख विशेषताओं में से एक है अर्थात् किसी भी जाति और पंथ का व्यक्ति वैष्णव संप्रदाय में सम्मिलित हो सकता है। यह वास्तव में एक **लोकतांत्रिक आंदोलन** है जिसमें जाति विभेद को समाप्त किया गया है।
  - उन्होंने भक्ति और समर्पण के मार्ग अर्थात् मानवता के प्रति निस्वार्थ प्रेम एवं लगाव तथा दैवीय सत्ता के प्रति पूर्ण समर्पण के पथ को प्रतिपादित किया।

श्रीवैष्णव परंपरा

- यह हिन्दू धर्म की **वैष्णववाद परंपरा** के अंतर्गत एक संप्रदाय है।
- हालाँकि, **श्री नाथमुनि** (10वीं शताब्दी ईस्वी) को इस संप्रदाय के संस्थापक के रूप में माना जाता है, परन्तु **श्री रामानुज (11वीं शताब्दी ईस्वी)** इसके प्रमुख दार्शनिक थे, जिन्होंने **विशिष्टाद्वैत दर्शन** का प्रतिपादन किया था।
- श्रीवैष्णव और अन्य वैष्णव समूहों के मध्य सबसे बड़ा विभेद **वेदों की उनकी व्याख्या** में निहित है।
- उल्लेखनीय है कि अन्य **वैष्णव समूह** वैदिक देवताओं, जैसे- इंद्र, रूद्र आदि की व्याख्या उनके पौराणिक समकक्षों के समान ही करते हैं, परन्तु **श्रीवैष्णववादी** इन्हें भगवान नारायण के विभिन्न नामों एवं स्वरूपों में स्वीकार करते हैं तथा इस प्रकार यह दावा करते हैं कि **संपूर्ण वेद केवल भगवान विष्णु की उपासना को ही समर्पित हैं।**
- इस परंपरा में **अंतिम वास्तविकता एवं सत्य** को स्त्री और पुरुष, देवी एवं देवता के दैवीय सहभाजन के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- इस संप्रदाय हेतु **श्री** उपसर्ग इसलिए प्रयुक्त किया जाता है, क्योंकि **वे देवी लक्ष्मी की उपासना को विशिष्ट महत्व** प्रदान करते हैं तथा वे यह विश्वास करते हैं कि **देवी लक्ष्मी भगवान विष्णु और मनुष्य** के मध्य एक मध्यस्थ की भूमिका का निर्वहन करती हैं।
- **आचार्य-** यमुनाचार्य, रामानुजाचार्य, पराशर भट्टर, पिल्लई लोकाचार्य, वेदांत देशिक आदि।

8.13. भारतीय इतिहास की व्याख्या में यात्रा वृतांतों की भूमिका

(Travelogues in Decoding Indian History)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में सुनाए गए अयोध्या निर्णय में, उच्चतम न्यायालय ने तीन यूरोपीय यात्रियों (जोसेफ टेफेन्थैलर, विलियम फिंच और मॉन्टगोमरी मार्टिन) के विवरणों को भी संदर्भ के तौर पर प्रयुक्त किया।

VISION IAS

इन यात्रियों से संबंधित तथ्य

जोसेफ टेफेन्थैलर

- वह ईसाई मिशनरी से संबद्ध एक इतालवी यात्री था तथा उसने 18वीं शताब्दी में 27 वर्षों तक भारत के विभिन्न भागों का भ्रमण किया।
- भारत में, जयपुर के राजा सवाई जय सिंह की प्रसिद्ध वेधशाला में उसे नियुक्त किया गया था, उसके उपरांत वह आगरा के जेसुइट कॉलेज से भी संबद्ध रहा।
- वह पाँच वर्षों से अधिक समय के लिए **अवध क्षेत्र में भी रहा था, जहाँ पर अयोध्या स्थित है।**
- अपनी पुस्तक "डिस्क्रिप्शन हिस्टोरिक एट जियोग्रफिक डे एल इंडे" (Description Historique Et Geographique de L'Inde) में उसने अयोध्या की अपनी यात्रा के बारे में विवरण दिया है।

विलियम फिंच

- वह वर्ष 1608 में सूरत में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक प्रतिनिधि सर विलियम हॉकिंस के साथ भारत आया था।
- उसके बारे में यह कहा जाता है कि उसने सर्वप्रथम अंग्रेजी भाषा में कश्मीर का विवरण प्रदान किया। साथ ही, उसने पंजाब और पूर्वी तुर्किस्तान तथा पश्चिमी चीन को जोड़ने वाले व्यापार मार्गों का विवरण प्रस्तुत किया।
- फिंच ने 1608 ई. और 1611 ई. के मध्य अयोध्या का दौरा किया था तथा उसे इस्लामिक उद्भव के महत्व की कोई इमारत प्राप्त नहीं हुई।
- इतिहासकार सर विलियम फोस्टर ने वर्ष 1921 में रचित अपनी पुस्तक **'अर्ली ट्रैवल्स इन इंडिया' (1583-1619 ई.)** में विलियम फिंच के विवरणों को शामिल किया था।

रॉबर्ट मॉन्टगोमरी मार्टिन

- वह एक **आंग्ल-आयरिश लेखक और सिविल सेवक** था। उसने **सीलोन (वर्तमान श्रीलंका), पूर्वी अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलिया में एक चिकित्सक के तौर पर कार्य किया था।**
- इसके पश्चात् मार्टिन कोलकाता में कार्य करने हेतु चला गया, जहाँ उसने **'बंगाल हेराल्ड'** के प्रकाशन में योगदान दिया। तत्पश्चात वह इंग्लैंड लौट गया, जहां पर उसने ब्रिटिश साम्राज्य के बारे में लिखा।
- उसने तीन खंडों में **'हिस्ट्री, एंटीक्विटीज, टोपोग्राफी एंड स्टेटिस्टिक्स ऑफ़ ईस्टर्न इंडिया'** नामक एक पुस्तक की रचना की तथा इसमें अपने विवरणों को दर्ज किया।
- उसने अयोध्या क्षेत्र में भगवान राम की उपासना, मंदिरों के विध्वंस और मस्जिदों के निर्माण के बारे में लिखा था।

8.14. सुर्ख़ियों में रहे अन्य व्यक्तित्व

(Other Personalities in News)

गुरु गोविंद सिंह	• पटना में जन्मे, गुरु गोविंद सिंह (1666 -1708 ई.), **दसवें सिख गुरु** थे। • उन्होंने 1699 ई. में **खालसा** नामक सिख योद्धा समुदाय की स्थापना की। • वे अपने पिता और नौवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर के निधन के पश्चात् **नौ वर्ष की आयु में ही सिख गुरु** बन गए थे। • उन्होंने पांच **'ककार'** (केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कच्छा) की शुरुआत की, जिन्हें खालसा सिखों द्वारा सदैव धारण किया जाता है। • उन्होंने 1706 ई. में **गुरु ग्रंथ साहिब** को अंतिम रूप प्रदान किया और इसे सिखों के लिए शाश्वत गुरु घोषित किया।
त्यागराज	• वे **कर्नाटक संगीत शैली** के प्रसिद्ध संगीतकार थे। उनकी अधिकांश रचनाएँ भक्ति से संबंधित थी, जिनमें से अधिकांश तेलुगू में रचित हैं और भगवान राम को समर्पित हैं। • इनकी पाँच रचनाएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें **पंचरत्न कृति** (पाँच रत्न) कहा जाता है। • वे 18वीं शताब्दी के रचनाकारों में सर्वाधिक सम्मानित **त्रिदेवों** में से एक थे। अन्य दो हैं: **श्यामा शास्त्री** और **श्री मुथुस्वामी दीक्षितार।**

VISION IAS

सुब्रमण्यम भारती	• वे तमिलनाडु के एक कवि, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थे। • "कण्णन् पाट्टु" (श्रीकृष्ण स्तुति), "निलावम वणमिणम कत्रुम", "पांचाली शपथम्" तथा "कुयिल् पाट्टु" (कोयल के गीत) भारती द्वारा रचित महान काव्य रचनाओं के उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त स्वदेश गीतांगल व जन्मभूमि उनके द्वारा रचित देशभक्तिपूर्ण काव्य हैं। • वह **विजया** और **इंडिया (तमिल साप्ताहिक)** के संपादकीय कार्य में भी संलग्न थे।
सावित्रीबाई फुले	• वह 19वीं सदी की एक समाज सुधारक थीं। • उन्हें विशेष रूप से **भारत की प्रथम महिला शिक्षक** के रूप में स्मरण किया जाता है, जिन्होंने शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में महिलाओं एवं अस्पृश्यों के उत्थान के लिए कार्य किया। • उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करते हुए महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और बाल विवाह के विरुद्ध अभियान संचालित करने के लिए **महिला सेवा मंडल (1852 ई.)** की स्थापना की थी।
अमृतलाल विठ्ठलदास ठक्कर	• लोकप्रिय रूप से इन्हें **ठक्कर बापा (1869-1951 ई.)** के रूप में जाना जाता है। वे एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने आदिवासी लोगों के उत्थान के लिए कार्य किया। • उन्होंने वर्ष 1922 में **भील सेवा मंडल** और वर्ष 1948 में **भारतीय आदिम जाति सेवा संघ** की स्थापना की। वे **सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी** और **हरिजन सेवक संघ** से भी संबद्ध थे। • वे वर्ष 1932 में महात्मा गांधी द्वारा स्थापित **हरिजन सेवक संघ** के **महासचिव** बने।
दत्तोपंत ठेंगड़ी की 100वीं जयंती	• वे एक श्रमिक संघ आंदोलन के नेता थे तथा **स्वदेशी जागरण मंच, भारतीय मजदूर संघ** और **भारतीय किसान संघ** के संस्थापक थे।
वी. एम. तारकुंडे	• वे एक प्रमुख भारतीय अधिवक्ता व नागरिक अधिकार कार्यकर्ता थे तथा उन्हें भारत में **"सिविल लिबर्टीज आंदोलन के जनक"** के रूप में जाना जाता है। • इन्होंने वर्ष 1980 में, देश के सबसे बड़े मानवाधिकार संगठन में से एक **"पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज" (PUCL)** के स्थापना सम्मेलन की अध्यक्षता की थी।
कोटा रानी	• उन्हें **कश्मीर में हिंदू लोहार वंश** से संबंधित अंतिम शासक के रूप में स्मरण किया जाता है। उनकी मृत्यु 1339 ई. में हुई थी। • वह लोहार वंश से संबंधित कश्मीर के शासक सुहादेव के **सेनापति रामचंद्र की पुत्री** थी। • लोहार वंश (1003 ई. और लगभग 1320 ई.) के शासक कश्मीर के खासा जनजाति के हिंदू शासक थे।
अलवार और नयनार	• अलवार (इन्हें अझवार भी कहा जाता है) प्रसिद्ध तमिल कवि संत थे। इनके द्वारा रचित गीतों में हिंदू देवता विष्णु और उनके अवतार कृष्ण की उपासना की गई थी। • नयनार भगवान शिव के निष्ठावान और उत्साही भक्त थे। • **नालयिर दिव्य प्रबंधम ("चार हजार पवित्र रचनाएँ"):** यह 12 अलवार रचनाओं का एक प्रमुख संकलन है, जिसे 10वीं शताब्दी में **नाथमुनि** द्वारा संकलित किया गया था। इसे प्राय: **तमिल वेद** के रूप में वर्णित किया जाता है।

VISION IAS

9. ऐतिहासिक घटनाएँ

(Historical Events)

9.1. पाइका विद्रोह

(Paika Rebellion)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत के राष्ट्रपति द्वारा **पाइका विद्रोह** की **200वीं वर्षगांठ** के स्मरणार्थ ओडिशा के खुर्दा जिले में पाइका स्मारक का शिलान्यास किया गया।

पाइका विद्रोह के बारे में

- यह वर्ष 1817 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध ओडिशा में संचालित एक सशस्त्र विद्रोह था।
- पाइका **ओडिशा के गजपति शासकों के पारंपरिक कृषक सैनिक थे, जो शांतिकाल में कृषि करते थे तथा युद्ध के दौरान राजा को सैन्य सेवा प्रदान करते थे।**
- पाइका **लगान-मुक्त भूमि** के स्वामी होते थे, जो उन्हें खुर्दा साम्राज्य के प्रति उनकी सैन्य सेवा के प्रतिफल में प्रदत्त थी।
- अंग्रेजों ने बंगाल एवं मद्रास प्रांत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेने के उपरांत 1803 ई. में ओडिशा को भी अधिकृत कर लिया था।
    - ओडिशा का गजपति शासक मुकुंद देव द्वितीय उस समय अवयस्क था तथा उसके संरक्षक जय राजगुरु द्वारा किए गए प्रारंभिक प्रतिरोध का क्रूरता से दमन कर दिया गया था।
    - खुर्दा के शासक पारंपरिक रूप से जगन्नाथ मंदिर के संरक्षक थे तथा वे पृथ्वी पर भगवान जगन्नाथ के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे। वे ओडिशा के लोगों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता के प्रतीक थे।
- कुछ वर्ष उपरांत, पाइकाओं ने गजपति शासक की असंगठित सेना के वंशानुगत प्रमुख **बक्शी जगबंधु** के नेतृत्व में आदिवासियों और समाज के अन्य वर्गों के समर्थन से विद्रोह कर दिया।
- खुर्दा की ओर अपने कूच के दौरान उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के प्रतीकों पर हमला किया, पुलिस स्टेशनों, प्रशासनिक कार्यालयों और राजकोष को आग लगा दी गई, जहां से ब्रिटिश पलायन करने हेतु विवश हुए।
- विद्रोहियों को जमींदारों, ग्राम प्रधानों एवं साधारण किसानों का समर्थन प्राप्त था।

पाइका विद्रोह के कारण

- **खुर्दा की समकालीन राजनीतिक स्थिति:** जय राजगुरु की फांसी, राजा मुकुंददेव द्वितीय की पदच्युति और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा खुर्दा में प्रशासन का पुनर्गठन आदि घटनाओं से खुर्दा के लोगों में आक्रोश व्याप्त था।
- **दोषपूर्ण राजस्व नीति:** औपनिवेशिक शासन द्वारा इस क्षेत्र में नवीन भू-राजस्व बंदोबस्त लागू किया गया, जिससे पाइका अपनी भूमियों से वंचित होने लगे तथा उनकी भूमि **बंगाली दूरस्थ जमींदारों** को हस्तांतरित की जाने लगी।
- **नवीन मुद्रा प्रणाली:** अंग्रेजों ने मुद्रा प्रणाली को **कौड़ी से रुपये** में परिवर्तित कर दिया। नवीन मुद्रा के माध्यम से विनिमय में ग्रामीणों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा था तथा स्थानीय महाजनों द्वारा उनका अत्यधिक शोषण किया जाने लगा।
- **ब्रिटिश नमक नीति:** ओडिशा के दीर्घ समुद्री तट से भारी मात्रा में नमक का उत्पादन होता था, जिसका इस क्षेत्र के लोग मुक्त रूप से उपयोग करते थे। परन्तु, ब्रिटिश प्राधिकारियों द्वारा जमींदारों एवं तटीय क्षेत्रों के स्थानीय लोगों को नमक निर्माण के उनके परंपरागत अधिकार से उन्हें वंचित कर दिया गया।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में पाइका विद्रोह

- पाइका विद्रोह को क्षेत्र की पारंपरिक जीवन पद्धति में ब्रिटिश आगमन के कारण उत्पन्न व्यवधान के विरुद्ध एक अभिव्यक्ति कहा जाता है।
- यह प्रत्यक्ष रूप से औपनिवेशिक स्वामियों के विरुद्ध था और समाज के सभी वर्गों की व्यापक पैमाने पर भागीदारी के कारण इसे कभी-कभी "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में भी संदर्भित किया जाता है।

VISION IAS

विद्रोह का दमन

- आरम्भ में ब्रिटिश, विद्रोहियों का सामना करने में असफल हो गए थे, परन्तु क्रूर दमनचक्र के तहत अनेक विद्रोहियों की हत्या कर दी गई, अनेकों को कारावास का दंड दिया गया तथा कई विद्रोहियों पर भीषण अत्याचार भी किए गए।
- कुछ विद्रोहियों ने वर्ष 1819 तक गुरिल्ला पद्धति से संघर्ष किया, परन्तु बाद में उन्हें पकड़ कर उनकी हत्या कर दी गई।
- बक्शी जगबंधु को अंततः वर्ष 1825 में गिरफ्तार कर लिया गया तथा वर्ष 1829 में बंदी अवस्था में ही उनकी मृत्यु हो गई।

दमन के उपरांत

- पाइकाओं को राजा को प्रदत्त सैन्य सेवा का त्याग करने और आजीविका हेतु कृषि एवं अन्य व्यवसायों को अपनाने के लिए बाध्य किया गया।
- नमक की कीमत कम कर दी गई तथा लोगों को सुगम खरीद के लिए अधिक नमक उपलब्ध कराया गया।
- 30 नवंबर 1817 को राजा मुकुंददेव द्वितीय के मृत्योपरांत ब्रिटिश शासन द्वारा उसके पुत्र रामचंद्रदेव तृतीय को पुरी जाने की अनुमति प्रदान कर दी गई। उसके लिए वार्षिक पेंशन की व्यवस्था की गई और पुरी के जगन्नाथ मंदिर के प्रबंधन का कार्यभार ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की गई। ज्ञातव्य है कि यह व्यवस्था ओडिशा के लोगों को शांत करने में सहायक सिद्ध हुई।

9.2. पैय्यानूर

(Payyanur)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केरल सरकार ने कन्नूर जिले में पेरुम्बा नदी के तट पर अवस्थित पैय्यानूर में **महात्मा गांधी स्मृति संग्रहालय** स्थापित करने की योजना प्रस्तुत की है।

पैय्यानूर का ऐतिहासिक महत्व

- **वर्ष 1928 में साइमन कमीशन विरोधी प्रदर्शन:** मोयारनाथ शंकरन, ए. लक्ष्मण शेनॉय और सुब्रह्मण्यम थिरुमुनपु आदि पैय्यानूर में "साइमन गो बैक" प्रदर्शनों में भाग लेने वाले प्रमुख नेता थे।
- **वर्ष 1930 में नमक सत्याग्रह:** 'केरल के गांधी' के नाम से विख्यात के. केलप्पन के नेतृत्व में, कोझीकोड से पैय्यानूर तक 33 सत्याग्रहियों ने कूच किया था। इस सत्याग्रह से पैय्यानूर को "द्वितीय बारदोली" का गौरव प्राप्त हुआ था।
- **अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन:** पैय्यानूर भी अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र था। पैय्यानूर में इस आंदोलन के महान नेता थे- ए. के. गोपालन, के. ए. केरालियन और विष्णु भारतीयन। यह आंदोलन **उत्पीड़ित पुलया समुदाय** के लड़कों को कुरुम्बा भगवती मंदिर में प्रवेश करवाने से संबंधित था।
  - पैय्यानूर में जातिवाद के विरुद्ध प्रथम संघर्षकारियों में से एक **स्वामी आनंदतीर्थ** भी थे, जो जन्म से एक कोंकणी ब्राह्मण थे। उन्होंने दलितों के अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया था।
- **गाँधीजी का संबंध:** गाँधीजी ने वर्ष 1934 में स्वामी आनंदतीर्थ के आग्रह पर केरल का दौरा किया था। गाँधीजी ने उनके आश्रम में एक आम के वृक्ष का रोपण किया था, जो वर्तमान में भी उस स्थल पर मौजूद है।

9.3. जलियांवाला बाग

(Jallianwala Bagh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक (संशोधन) अधिनियम, 2019** को अधिनियमित किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस अधिनियम के द्वारा **जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक अधिनियम, 1951** में संशोधन किया गया है।
- यह न्यास के स्थायी सदस्य के रूप में **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष** से संबंधित उपबंध को समाप्त कर जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक का संचालन करने वाले ट्रस्ट को **अराजनैतिक** स्वरूप प्रदान करता है।
- यह स्पष्ट करता है कि जब लोकसभा में विपक्ष का कोई नेता न हो, तो सबसे बड़े विपक्षी दल का नेता ट्रस्टी होगा।
- यह किसी **कारण का उल्लेख किए बिना,** केंद्र सरकार को नामित ट्रस्टी के कार्यकाल की अवधि समाप्त होने से पूर्व ही उसके कार्यकाल को समाप्त करने हेतु अधिकृत करता है।

VISION IAS

- 1951 के अधिनियम के अनुसार, **स्मारक के ट्रस्टी में निम्नलिखित शामिल हैं:** प्रधानमंत्री (अध्यक्ष), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष, संस्कृति मंत्रालय का प्रभारी मंत्री, लोकसभा में विपक्ष का नेता, पंजाब का राज्यपाल, पंजाब का मुख्यमंत्री और केंद्र सरकार द्वारा नामित तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति।

विवरण:

- अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम, 1919 को सामान्यतया **रॉलेट एक्ट** के रूप में जाना जाता है। केंद्रीय विधान परिषद के प्रत्येक भारतीय सदस्य द्वारा इसका विरोध किए जाने के बावजूद मार्च 1919 में यह अधिनियम लागू कर दिया गया।
- **रॉलेट एक्ट** द्वारा सरकार को निम्नलिखित शक्तियां प्राप्त हुईं:
  - विशिष्ट अपराधों के लिए उच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीशों से मिलकर गठित **विशेष न्यायालयों को स्थापित करना;**
- **अच्छे व्यवहार के लिए अनुबंध के निष्पादन का निर्देश करना;** पुलिस स्टेशन में रिपोर्टिंग के साथ शहर के भीतर नजरबंदी; और कुछ विशिष्ट कृत्यों को रोकना; तथा
- **संदेह के आधार पर क्रांतिकारी गतिविधियों में संलिप्त किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करना**, बिना किसी सुनवाई (ट्रायल) के उन्हें 2 वर्ष तक हिरासत में रखना, बिना वारंट के किसी स्थान की तलाशी लेना और प्रेस की स्वतंत्रता पर कठोर प्रतिबंध आरोपित करना।
- इसने उन अधिकांश भारतीयों को अचंभित कर दिया जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों के साथ स्वेच्छा से भाग लेने हेतु पुरस्कृत किए जाने की अपेक्षा की थी न कि दंड दिए जाने की।
- रॉलेट एक्ट के पारित होने के तुरंत पश्चात् **बी. एन. शर्मा** ने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल के सदस्य के पद से त्यागपत्र दे दिया।
- सी. राजगोपालाचारी, ए. रंगास्वामी अयंगर, जी. हरिसर्वोत्तम राव और टी. आदिनारायण चेट्टी के नेतृत्व में **मद्रास सत्याग्रह सभा ने रॉलेट एक्ट का विरोध किया।**
- **महात्मा गांधी** ने एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह (रॉलेट सत्याग्रह) का आह्वान किया। 6 अप्रैल 1919 को वायसराय द्वारा रॉलेट विधेयक को अपनी स्वीकृति दिए जाने के पश्चात् हड़ताल की गई।
- किन्तु सत्याग्रह से पहले कलकत्ता, बंबई, दिल्ली, अहमदाबाद आदि स्थानों पर वृहद पैमाने पर ब्रिटिश विरोधी हिंसक प्रदर्शन हुए।
- पंजाब में, लेफ्टिनेंट गवर्नर सर माइकल ओ'डायर के दमनकारी प्रशासन के तहत स्थिति तनावपूर्ण थी। डायर ने मार्शल लॉ लागू कर दिया था।
  - उसके आदेशों के तहत गांधीजी को दिल्ली के निकट पलवल में गिरफ्तार कर लिया गया और इस प्रकार उन्हें पंजाब में प्रवेश करने से रोक दिया गया।
  - उसने अमृतसर के लोकप्रिय नेताओं सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू को 'अज्ञात स्थान' पर भेजने के भी निर्देश दिये। ये नेता रॉलेट एक्ट को लागू करने के विरुद्ध आंदोलन कर रहे थे।
  - **बैसाखी के दिन** जनता अपने नेताओं की गिरफ्तारी के विरुद्ध शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने के लिए एक छोटे से बाग़ में एकत्रित हुई थी।
  - **जनरल रेजिनाल्ड डायर** के आदेशों के तहत सेना ने भीड़ (बाग़ में एकत्रित लोगों) को घेर लिया। **गवर्नर माइकल ओ'डायर** ने रेजिनाल्ड डायर को कार्रवाई हेतु पूर्ण अनुमति प्रदान की थी। बाग़ के एकमात्र निकास द्वार को अवरुद्ध कर दिया गया तथा सेना ने निहत्थी जनता पर गोलियां चलाईं, जिससे 1,000 से अधिक लोग मारे गए।

परिणाम

- **महात्मा गांधी** हिंसा के परिवेश से व्यथित हो गए थे तथा उन्होंने 18 अप्रैल 1919 को रॉलेट सत्याग्रह को वापस ले लिया।
- **रवींद्रनाथ टैगोर** ने विरोधस्वरूप नाइटहुड की उपाधि को त्याग दिया।
- 14 अक्टूबर 1919 को भारत के राज्य सचिव एडविन मोंटेग्यू द्वारा जारी आदेशों के बाद भारत सरकार ने पंजाब की घटनाओं की जाँच हेतु एक समिति के गठन की घोषणा की।
  - इस समिति को **डिसऑर्डर इनक्वायरी कमेटी** के रूप में संदर्भित किया गया। बाद में इसे **हंटर कमीशन** के नाम से जाना गया।
  - कांग्रेस ने इस समिति का बहिष्कार किया।
  - हंटर कमीशन ने कोई दंड या अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं की, क्योंकि डायर की कार्रवाइयों को विभिन्न वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा क्षमा कर दिया गया था (बाद में सेना परिषद द्वारा भी इस निर्णय को बरकरार रखा गया)।

VISION IAS

- आरम्भ में ब्रिटिश साम्राज्य में कंजरवेटिव्स द्वारा डायर की प्रशंसा की गयी थी, किन्तु जुलाई 1920 में उसकी निंदा की गयी तथा हाउस ऑफ कॉमन्स द्वारा उसे सेवानिवृत्त होने के लिए बाध्य किया गया था। उसे उसकी नियुक्ति से हटाकर अनुशासित किया गया, उसकी पदोन्नति रोक दी गयी तथा भविष्य में भारत में नियोजन हेतु उसे प्रतिबंधित कर दिया गया।

- **महात्मा गांधी** ने वर्ष 1920 में पंजाब और खिलाफत अन्याय के विरुद्ध आंदोलन के एक भाग के रूप में अपनी **केसर-ए-हिंद** की उपाधि लौटा दी। गाँधीजी को यह उपाधि ब्रिटिश सरकार द्वारा बोअर युद्ध के पश्चात् प्रदान की गई थी।
- स्वर्ण मंदिर के कुछ भ्रष्ट महंतों ने जनरल डायर को सरोपा (सम्मान सूचक वस्त्र) देकर सम्मानित किया, जिसके फलस्वरूप गुरुद्वारा सुधार आंदोलन आरम्भ हो गया। परिणामस्वरूप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (SGPC) के नाम से एक समिति का गठन किया गया तथा इस समिति को स्वर्ण मंदिर, अकाल तख्त और अन्य गुरुद्वारों का नियंत्रण और प्रबंधन सौंप दिया गया।
- दमनकारी कानून समिति (Repressive Laws Committee) की रिपोर्ट को स्वीकार करते हुए, भारत के ब्रिटिश शासन ने मार्च 1922 में रॉलेट एक्ट, प्रेस एक्ट और 22 अन्य कानूनों को निरस्त कर दिया।
- ग़दर पार्टी के एक क्रांतिकारी **उधम सिंह** ने 13 मार्च 1940 को लंदन में **माइकल ओ'डायर** की हत्या कर दी थी।

9.4. आजाद हिंद सरकार

(Azad Hind Government)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ष 2019 में आज़ाद हिंद सरकार के गठन की 76वीं वर्षगांठ मनाई गई।

आजाद हिंद सरकार

- 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में अस्थायी **आजाद हिंद सरकार की स्थापना** की थी। वह आज़ाद हिंद सरकार के नेता और इस निर्वासित अस्थायी भारतीय सरकार के शासन प्रमुख भी थे।
- यह **स्वतंत्रता आंदोलन का एक हिस्सा** था, जिसे भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र कराने के लिए धुरी शक्तियों के साथ गठबंधन के उद्देश्य से देश के बाहर 1940 के दशक में आरंभ किया गया था।
- आज़ाद हिंद सरकार के अस्तित्व में आने से अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम को अधिक वैधता प्राप्त हुई।
- **आजाद हिंद फौज या इंडियन नेशनल आर्मी (INA)** की भूमिका ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष हेतु आवश्यक बल प्रदान किया था।

इंडियन नेशनल आर्मी (INA)

- INA के विचार की परिकल्पना सर्वप्रथम मलाया में **मोहन सिंह** ने की थी।
- INA की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सिंगापुर, मलेशिया एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य देशों में जापानियों द्वारा गिरफ्तार किए गए ब्रिटिश भारतीय सेना के युद्धबंदियों द्वारा की गई थी।
- 1 सितंबर, 1942 को INA के प्रथम डिवीज़न (division) का गठन किया गया।
- उन्हें संगठित करने तथा INA के निर्माण का मुख्य कार्य रासबिहारी बोस द्वारा किया गया था, जो स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। तत्पश्चात सुभाष चंद्र बोस ने इसे सेना के रूप में पुनर्गठित किया।
- INA द्वारा महिलाओं की समानता को प्रमुखता प्रदान की गई थी और इसी क्रम में एक महिला रेजिमेंट का गठन किया गया था। **रानी झांसी रेजिमेंट** (कैप्टन लक्ष्मी सहगल की अध्यक्षता में) का गठन ब्रिटिश शासन से संघर्ष करने और साथ ही, INA को चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए एक स्वयंसेवक महिला इकाई के रूप में किया गया था।

INA पर मुकदमा (INA Trials)

- कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लों, मेजर जनरल शाह नवाज खान के नेतृत्व वाले INA के सैकड़ों गिरफ्तार किए गए सैनिकों पर 1945-46 के दौरान लाल किले में मुकदमा चलाया गया था।
- ज्ञातव्य है कि विचारधाराओं में मतभेद होने के बावजूद स्वतंत्रता आंदोलन के कई नेताओं, यथा- जवाहरलाल नेहरू, सर तेज बहादुर सप्रू, कैलाशनाथ काटजू, भूलाभाई देसाई, आसफ अली के साथ-साथ मुस्लिम लीग द्वारा भी इसका विरोध किया गया।
- **इस प्रसिद्ध INA मुकदमे के कारण देश भर में व्यापक स्तर पर असंतोष व्याप्त हो गया।** फरवरी 1946 में मुंबई व कराची के

VISION IAS

बंदरगाहों से लेकर मद्रास, विशाखापत्तनम व कलकत्ता तक नाविकों तथा रॉयल इंडियन नेवी एवं एयर फोर्स के अधिकारियों द्वारा हड़ताल की गई। वायु सेना के सैनिकों ने भी कराची तथा कलईकुंडा (अब पश्चिम बंगाल में) सहित विभिन्न स्थानों पर कार्य राेक दिया।

- इतिहासकारों ने इस असंतोष को ब्रिटिश साम्राज्य के **"ताबूत में अंतिम कील"** की संज्ञा प्रदान की है।

9.5. नेहरू-लियाकत समझौता

(Nehru-Liaquat Agreement)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संसद में नागरिकता संशोधन अधिनियम पर हुए वाद-विवाद में वर्ष 1950 में दिल्ली में संपन्न नेहरू-लियाकत समझौते के कई संदर्भों को शामिल किया गया।

नेहरू लियाकत समझौते के बारे में

- जवाहर लाल नेहरू एवं पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान द्वारा हस्ताक्षरित नेहरू-लियाकत समझौते को **दिल्ली पैक्ट** के रूप में भी जाना जाता है।
- यह भारत और पाकिस्तान के मध्य एक द्विपक्षीय समझौता था, **जिसके अंतर्गत दोनों देशों में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार के संदर्भ में एक फ्रेमवर्क प्रदान किया गया था।**
- यह समझौता दोनों देशों में अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित क्षेत्रों में बहुसंख्यक समुदाय द्वारा किए जा रहे हमलों के कारण **अल्पसंख्यक समुदाय के व्यापक प्रवास की पृष्ठभूमि में संपन्न हुआ था।**

इस समझौते के प्रमुख प्रावधान

- दोनों देशों की सरकारें अल्पसंख्यक समुदाय को धर्म निरपेक्ष पूर्ण समानता पर आधारित नागरिकता, दोनों देशों में **आवागमन की स्वतंत्रता, व्यवसाय, वाक् एवं अभिव्यक्ति तथा उपासना की स्वतंत्रता जैसे राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकार** प्रदान करने व इन अधिकारों की रक्षा करने पर सहमत हुईं।
- दोनों देशों ने इन अधिकारों को **मौलिक अधिकार घोषित किया** तथा इनको प्रभावी रूप से लागू करने के लिए उपयुक्त उपाय करने पर सहमत हुए।
- अव्यवस्था के कारणों की जांच करने और भविष्य में उनकी रोकथाम के उपाय सुझाने के लिए एक **जाँच आयोग** का गठन किया गया।
- शरणार्थियों को अपनी संपत्ति का विक्रय करने हेतु वापस अपने मूल देश लौटने की अनुमति प्रदान की गई थी।
- अपहृत महिलाओं की सुरक्षित वापसी और लूटी गई संपत्ति की पुनर्प्राप्ति के उपाय किए जाने थे।
- **बलपूर्वक धर्मांतरणों को मान्यता नहीं दी गई थी।**

9.6. प्रिवी पर्स का उन्मूलन

(Privy Purse Abolition)

सुर्ख़ियों में क्यों?

इस वर्ष **प्रिवी पर्स की समाप्ति को 50 वर्ष** पूर्ण हो गए हैं।

विवरण

- दिसंबर 1971 में, **26वें संविधान संशोधन अधिनियम** द्वारा, इंदिरा गांधी सरकार ने वर्ष 1949 में राजाओं एवं नवाबों के रियासतों के एकीकरण के पश्चात् उन्हें प्राप्त 'प्रिवीपर्स' और विशेषाधिकारों को औपचारिक तौर पर समाप्त कर दिया था।
- **प्रिवी पर्स वस्तुतः तत्कालीन रियासतों के शासक परिवारों** को पूर्व में 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अपनी रियासतों को भारत के साथ एकीकृत करने तथा तत्पश्चात, वर्ष 1949 में उनके रियासतों के विलय के समझौतों (जिसके अंतर्गत उन्होंने शासन के अपने सभी अधिकारों का त्याग कर दिया था) के हिस्से के रूप में किया जाने वाला **एक भुगतान** था।
- जैसा कि वर्ष 1949 में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 291 के तहत परिभाषित किया गया था, **प्रिवी पर्स वस्तुतः पूर्व रियासतों तथा उनके उत्तराधिकारियों को प्रत्याभूत एक निश्चित, कर-मुक्त राशि होगी।** यह राशि पूर्व शासक परिवारों के सभी व्ययों को वहन करने के लिए थी, जिनमें धार्मिक तथा अन्य समारोहों के व्यय भी सम्मिलित किए गए थे तथा इसका भार भारत की संचित निधि पर था।
- यह कहा गया था कि किसी भी वर्तमान कार्यों एवं सामाजिक उद्देश्यों से असंबद्ध प्रिवी पर्स तथा अन्य विशेषाधिकार के साथ शासकत्व की अवधारणा एक समतावादी सामाजिक व्यवस्था के साथ असंगत है। इसलिए, सरकार द्वारा विशेषाधिकार को समाप्त करने का निर्णय लिया गया था।

VISION IAS

9.7. अन्य घटनाएँ

(Other events)

वर्साय की संधि	• 28 जून 2019 को इसकी **100वीं वर्षगांठ** मनाई गई। ज्ञातव्य है कि वर्साय की संधि पर जर्मनी एवं मित्र राष्ट्रों ने 28 जून 1919 को हस्ताक्षर किए थे तथा इसी के साथ प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो गया था। • यह संधि वर्ष 1919 में **पेरिस शांति सम्मेलन** के दौरान हुई मित्र राष्ट्रों के मध्य 6 माह की वार्ता का परिणाम थी। • संधि के प्रावधानों को ब्रिटेन (डेविड लॉयड जॉर्ज के नेतृत्व में), फ्रांस (जार्ज क्लेमेंसो के नेतृत्व में) तथा अमेरिका (वुडरो विल्सन के नेतृत्व में) द्वारा प्रमुखता से निर्धारित किया गया था। इस सम्मेलन में रूस एवं जर्मनी, दोनों को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया था।
ऑशविट्ज़ (Auschwitz) की मुक्ति की 75वीं वर्षगांठ	• द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, जर्मनी की नाजी सरकार द्वारा विशेष रूप से लोगों की हत्या करने के लिए निर्मित विभिन्न शिविरों में लगभग 17 मिलियन लोगों की हत्या कर दी गई थी। पोलैंड के ऑशविट्ज़ का शिविर इनमें सबसे बड़ा था। • वर्ष 1979 में, यूनेस्को ने ऑशविट्ज़ स्मारक को यूनेस्को की विश्व विरासत स्थलों की अपनी सूची में सम्मिलित किया था। • वर्ष 2005 में, संयुक्त राष्ट्र ने **27 जनवरी** को **अंतर्राष्ट्रीय होलोकॉस्ट स्मरण दिवस** (International Holocaust Remembrance Day) के रूप में नामित किया। • होलोकॉस्ट द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान की एक अवधि थी, जब लाखों यहूदियों एवं अन्य लोगों की केवल उनकी पहचान के कारण हत्या कर दी गई थी।
कानाक्कले / गलीपोली का युद्ध (Battle of Canakkale /Gallipoli)	• इसे डारडेंलीज अभियान (Dardanelles Campaign) भी कहा जाता है। **प्रथम विश्व युद्ध** में, इस अभियान के दौरान ऑटोमन सेना ने वर्ष 1915 से 1916 तक **गलीपोली प्रायद्वीप (तुर्की)** पर मित्र राष्ट्रों की सेना के विरुद्ध संघर्ष किया था। • यह मित्र देशों द्वारा यूरोप से रूस तक समुद्री मार्ग को अधीन करने के लिए **मरमरा सागर को एजियन सागर व भूमध्य सागर से जोड़ने वाले** रणनीतिक डारडेंलीज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु किया गया एक असफल प्रयास था।
भीमा कोरेगांव का युद्ध	• यह युद्ध **1 जनवरी 1818** को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी तथा **पेशवा बाजी राव द्वितीय** के नेतृत्व वाले मराठा परिसंघ के पेशवा गुट के मध्य लड़ा गया था। यह **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध** का हिस्सा था। • **दलित (महार) बहुल ब्रिटिश सेना** ने कोरेगांव में पेशवा सेना को पराजित कर दिया था। • यह युद्ध **दलितों के लिए एक महान विजय** सिद्ध हुई। दलित इसे पेशवाओं के अन्याय के विरुद्ध महारों की जीत मानते थे।
इंफाल युद्ध	• इंफाल युद्ध {द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) के दौरान} की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए इंफाल (मणिपुर) के बाहर लाल पहाड़ी पर **इंफाल पीस म्यूज़ियम** की स्थापना की गई है। • इंफाल युद्ध जापान एवं मित्र राष्ट्रों (ब्रिटिश) की सेनाओं के मध्य हुआ था। इस युद्ध के परिणामस्वरूप पूर्वी एशिया से होने वाली जापानी सेना के कूच को रोक दिया गया था।
सेलुलर जेल	• इसे कालापानी के रूप में भी जाना जाता है। यह **अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में स्थित एक औपनिवेशिक जेल** थी। • इस जेल का उपयोग अंग्रेजों ने, विशेष रूप से **राजनीतिक कैदियों को निर्वासित करने हेतु** किया था। • कई प्रतिष्ठित राष्ट्रवादियों को सेलुलर जेल में कैद किया गया था। उनमें दीवान सिंह कालेपानी, फ़ज़ल-ए-हक़ खैराबादी, योगेंद्र शुक्ला, बटुकेश्वर दत्त, मौलाना अहमदुल्लाह, मोवली अब्दुल रहीम सादिकपुरी, अली अहमद सिद्दीकी, मौलवी लियाकत अली, विनायक दामोदर सावरकर, बाबाराव सावरकर, सचिंद्र नाथ सान्याल आदि सम्मिलित हैं।

VISION IAS

विश्व भारती विश्वविद्यालय	• शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) में स्थित इस विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1921 में **रवींद्रनाथ टैगोर** द्वारा की गई थी। • वर्ष 1951 में संसद के एक अधिनियम द्वारा इसे **केंद्रीय विश्वविद्यालय** तथा **राष्ट्रीय महत्व का संस्थान** घोषित किया गया था।
गुजरात विद्यापीठ	• गुजरात विद्यापीठ की **स्थापना वर्ष 1920 में महात्मा गांधी** द्वारा की गई थी। गाँधीजी इसके जीवनपर्यंत कुलपति थे। • यह **असहयोग आंदोलन के दौरान स्थापित** विद्यापीठों में से एक है। अन्य काशी विद्यापीठ तथा बिहार विद्यापीठ हैं।

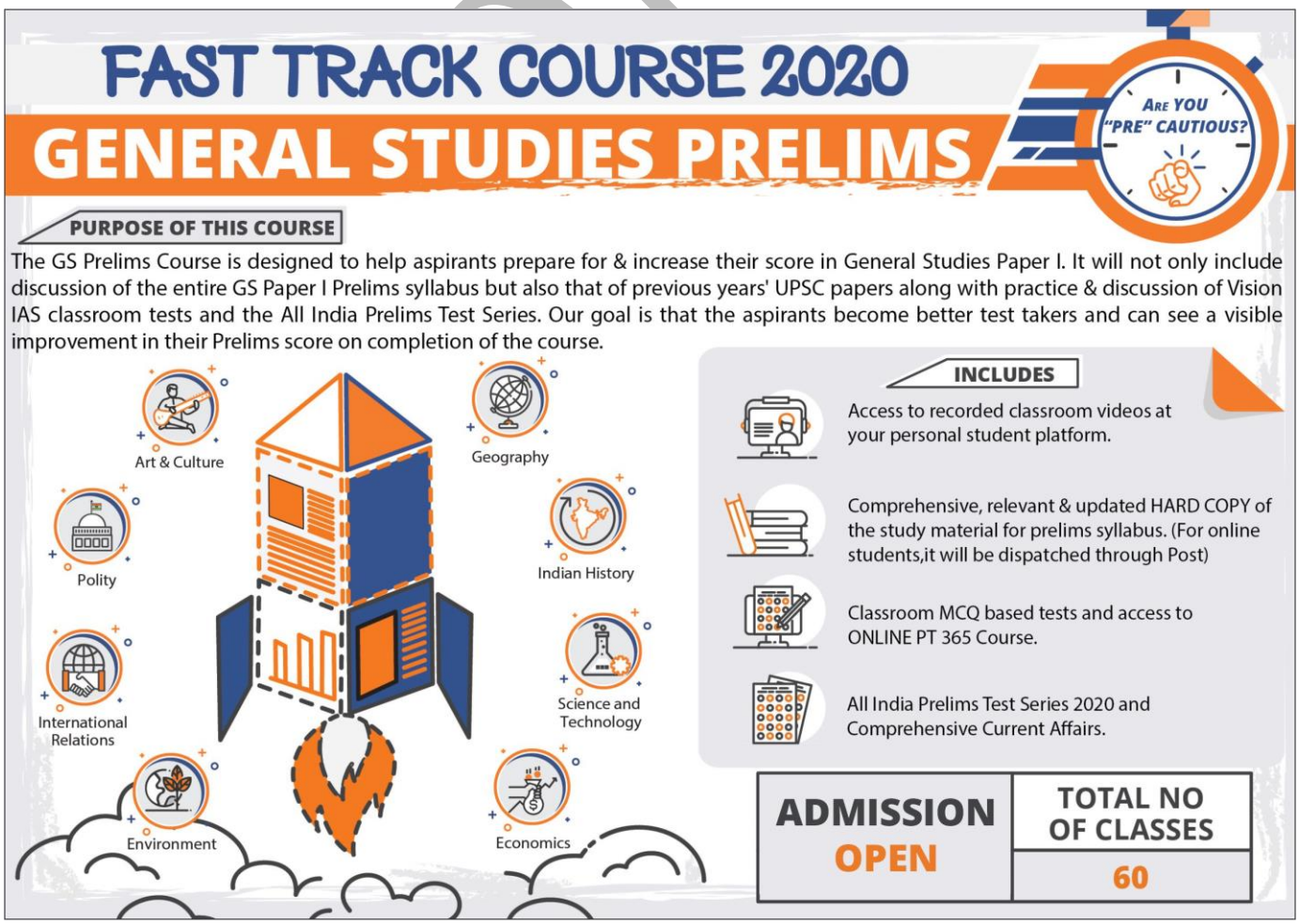

10. पुरस्कार एवं अवार्ड्स

(Prizes and Awards)

10.1. नोबेल पुरस्कार

(Nobel Prizes)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, साहित्य तथा शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कारों की घोषणा की गई।

साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार: स्वीडिश अकादमी ने वर्ष 2019 और वर्ष 2018 हेतु दो विजेताओं की घोषणा की है। उल्लेखनीय है कि अकादमी ने वर्ष 2018 के लिए साहित्य के नोबेल पुरस्कार की घोषणा नहीं की थी।

- ऑस्ट्रियन लेखक **पीटर हैंडके** को **वर्ष 2019** के साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पीटर हैंडके को यह पुरस्कार उनके "एक प्रभावशाली कार्य के लिए दिया गया है, जिसमें भाषाई प्रवीणता के साथ मानव अनुभव की परिधि और विशिष्टता का अन्वेषण किया गया है"।
- **वर्ष 2018** का नोबेल साहित्य पुरस्कार पोलैंड की लेखिका **ओल्गा टोकरजुक** को प्रदान किया गया है। "सीमाओं के पार जीवन के रूप को चित्रित करने की उनकी काल्पनिकता" हेतु उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
    - ओल्गा टोकरजुक को **वर्ष 2018 के मैन बुकर अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार** से भी सम्मानित किया गया था।

शांति का नोबेल पुरस्कार: वर्ष 2019 का शांति का नोबेल पुरस्कार इथियोपिया के प्रधानमंत्री **अबी अहमद अली** को प्रदान किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार शांति स्थापित करने एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने, विशेष रूप से पड़ोसी देश इरिट्रिया के साथ सीमा संघर्ष के समाधान के लिए उनकी निर्णायक पहलों हेतु दिया गया है।

- **संघर्ष समाधान**
    - दीर्घकाल से एक-दूसरे के शत्रु देश रहे इथियोपिया और इरिट्रिया ने जुलाई 2018 में परस्पर संबंधों की पुनर्स्थापना की थी।
    - **अबी अहमद अली** ने इरिट्रिया के राष्ट्रपति इसाइस अफवेरकी के साथ "शांति और मित्रता के संयुक्त घोषणा-पत्र" (जॉइंट डिक्लेरेशन ऑफ़ पीस एंड फ्रेंडशिप) पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने दोनों देशों के मध्य व्यापार, कूटनीतिक और यात्रा विषयक संबंधों को पुन: आरंभ करने तथा रक्तरंजित युद्ध से पीड़ित हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में "शांति व मित्रता के एक नए युग" की स्थापना की घोषणा की है।
    - इन दो देशों के मध्य एक अन्य समझौता सितम्बर 2018 में सऊदी अरब के जेद्दाह में संपन्न हुआ था।

10.2. संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कार वितरण

(Awards by Sangeet Natak Akademi)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संगीत नाटक अकादमी द्वारा विविध पुरस्कारों की घोषणा की गयी।

संगीत नाटक अकादमी के बारे में

- यह वर्ष 1952 में भारत सरकार द्वारा स्थापित नृत्य और नाटक की **प्रथम राष्ट्रीय अकादमी** है। यह सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1860 के तहत एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत है।

VISION IAS

- यह अकादमी देश में **निष्पादन कलाओं के एक शीर्ष निकाय** के रूप में कार्य करती है तथा संगीत, नृत्य एवं नाट्य शैलियों में अभिव्यक्त भारत की विविध व्यापक मूर्त सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करती है एवं उन्हें प्रोत्साहित भी करती है।
- यह अकादमी देश की सांस्कृतिक विरासत के अनुरक्षण हेतु यूनेस्को (UNESCO) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग भी करती है।
- **संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रदत्त पुरस्कार**
  - **फ़ेलोशिप:** अकादमी की फ़ेलोशिप अत्यंत प्रतिष्ठित एवं असाधारण सम्मान है, जिसे किसी भी समय 40 से अधिक कलाकारों को प्रदान नहीं किया जा सकता। इस वर्ष यह पुरस्कार ज़ाकिर हुसैन (तबला वादक), सोनल मानसिंह (भरतनाट्यम और ओडिसी), जतिन गोस्वामी (सत्रिय) तथा के. कल्याणसुंदरम पिल्लई (भरतनाट्यम) को प्रदान किया गया है।
  - **संगीत नाटक अकादमी अवार्ड्स:** इस वर्ष संगीत, नृत्य, रंगमंच, पारंपरिक/कला शैलियों आदि के क्षेत्र से 44 कलाकारों को पुरस्कृत किया गया है।
  - **उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार** निष्पादन कलाओं के विविध क्षेत्रों में **उत्कृष्ट युवा प्रतिभाओं की पहचान करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने** तथा उनके जीवन के आरम्भिक वर्षों में ही उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने के उद्देश्य से युवा कलाकारों को प्रदान किया जाता है। 40 वर्ष की आयु तक के सभी भारतीय नागरिक (कला से संबंधित) इस पुरस्कार हेतु पात्र हैं। उल्लेखनीय है कि इसे मरणोपरांत प्रदान नहीं किया जाता।

10.3. पुर्तगाल द्वारा गांधी पुरस्कार की स्थापना

(Portugal Sets up Gandhi Prize)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, पुर्तगाल के प्रधानमंत्री एंटोनियो कोस्टा ने **'गांधी नागरिकता शिक्षा पुरस्कार' (Gandhi Citizenship Education Prize)** की स्थापना करने की घोषणा की है।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह घोषणा **'महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के स्मरणोत्सव की राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति'** की दूसरी बैठक में भाग लेने के दौरान की गई।
  - यह **पुरस्कार गाँधीजी के विचारों और उद्धरणों से प्रेरित होगा तथा प्रत्येक वर्ष प्रदान किया जाएगा।**
  - इस पुरस्कार का प्रथम **संस्करण पशु कल्याण के प्रति समर्पित होगा।**
- पुर्तगाल के प्रधानमंत्री **'महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के स्मरणोत्सव की राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति'** के सदस्य बनने वाले एकमात्र विदेशी राजनेता हैं।
- **महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के स्मरणोत्सव की राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति के विषय में:**
  - इस राष्ट्रीय समिति का गठन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाने के लिए किया गया था।
  - **इस समिति की अध्यक्षता राष्ट्रपति द्वारा की गई** तथा इसमें उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, राजनीतिक क्षेत्र के प्रतिनिधि, गाँधीवादी विचारक और सभी क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को शामिल किया गया था।
  - इस समिति में सदस्य के रूप में संयुक्त राष्ट्र के दो पूर्व महासचिव, यथा- **कोफी अन्नान** और **बान की मून** भी शामिल थे।

10.4. वर्ष 2019 का साहित्य अकादमी पुरस्कार

(Sahitya Akademi Awards 2019)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, साहित्य अकादमी द्वारा 23 भाषाओं के लिए अपने वार्षिक साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा की गई। नेपाली भाषा के लिए पुरस्कार की घोषणा बाद में की जाएगी।

अन्य संबंधित तथ्य

- साहित्य अकादमी पुरस्कार **अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी प्रमुख भारतीय भाषा में विगत 5 वर्षों में भारत में प्रकाशित साहित्यिक श्रेष्ठता की सर्वोत्कृष्ट कृतियों हेतु केवल भारतीय नागरिकों को प्रदान किया जाता है।**

VISION IAS

- भारत के **संविधान में सम्मिलित 22 भाषाओं** के अतिरिक्त साहित्य अकादमी ने **अंग्रेजी एवं राजस्थानी** भाषा को भी मान्यता प्रदान की है। इस प्रकार राजस्थानी एवं अंग्रेजी सहित 24 भाषाओं के क्षेत्र में यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।
- विजेताओं को एक उत्कीर्णित ताम्र-पत्र, एक शॉल और 1 लाख रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाता है।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले **ज्ञानपीठ पुरस्कार** के पश्चात् **दूसरा सबसे बड़ा साहित्यिक सम्मान** है।
- वर्ष 1956 में, **अमृता प्रीतम** अपनी लंबी कविता, **'सुनहुड़े'** (संदेश) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीतने वाली प्रथम महिला बनीं थी।

- **भारत की राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था- साहित्य अकादमी के बारे में:**
  - यह देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और संवर्धन के लिए एक केंद्रीय संस्थान है तथा अंग्रेजी भाषा सहित 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियाँ संपन्न करने वाली एकमात्र संस्था है।
  - इसे वर्ष 1954 में भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया था, हालांकि यह स्वायत्त रूप से कार्य करती है।
  - यह **सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860** के अंतर्गत एक संस्था के रूप में पंजीकृत है।
  - यह भारत से बाहर भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने के लिए **विभिन्न देशों के साथ साहित्यिक आदान-प्रदान कार्यक्रम भी आयोजित** करती है।

10.5. पद्म पुरस्कार

(Padma Awards)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, गणतंत्र दिवस के अवसर पर पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई।

पद्म पुरस्कार के बारे में

- पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं, जिन्हें निम्नलिखित तीन श्रेणियों में प्रदान किया जाता है:
  - **पद्म विभूषण:** असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है;
  - **पद्म भूषण:** उच्च क्रम की विशिष्ट सेवा के लिए; और
  - **पद्म श्री:** किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए।
- इन **पुरस्कारों की शुरुआत वर्ष 1954** में विभिन्न गतिविधियों या विषयों के सभी क्षेत्रों में उपलब्धियों की पहचान करने हेतु की गई थी, जिनमें सार्वजनिक सेवा एक प्रमुख घटक है।
  - ये पुरस्कार विभिन्न विषयों/गतिविधियों के क्षेत्रों, यथा- कला, सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामलों, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य एवं शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि में प्रदान किए जाते हैं।
- **पद्म पुरस्कार समिति** द्वारा की गई अनुशंसाओं के आधार पर इन पुरस्कारों को प्रदान किया जाता है। समिति का गठन प्रति वर्ष **प्रधान मंत्री द्वारा कैबिनेट सचिव** की अध्यक्षता में किया जाता है।
  - नामांकन प्रक्रिया में कोई भी भाग ले सकता है तथा इसके लिए स्व-नामांकन भी किया जा सकता है।
- जाति, व्यवसाय, पद या लिंग विभेद के बिना सभी व्यक्ति इन पुरस्कारों के लिए पात्र हैं।
  - हालांकि, चिकित्सकों और वैज्ञानिकों को छोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में कार्यरत कर्मचारियों सहित **सरकारी कर्मचारी पद्म पुरस्कारों के लिए पात्र नहीं** हैं।
- एक वर्ष में प्रदान किए जाने वाले कुल पद्म पुरस्कारों की संख्या 120 से अधिक नहीं होनी चाहिए। {व्यक्तियों को मरणोपरान्त प्रदत्त पुरस्कारों तथा विदेशी/NRI (अनिवासी भारतीय)/OCI (प्रवासी भारतीय नागरिक) को प्रदान किए जाने वाले पुरस्कारों को छोड़कर}।
- ये पुरस्कार **किसी प्रकार की उपाधि नहीं हैं तथा इनका प्रयोग पुरस्कार प्राप्तकर्ता के नाम के साथ प्रत्यय या उपसर्ग के रूप में नहीं किया जा सकता** है।
- पुरस्कार प्राप्तकर्ता को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक **सनद** (प्रमाण-पत्र) और एक पदक प्रदान किया जाता है। इन पुरस्कारों के साथ कोई **नकद पुरस्कार प्रदान नहीं** किया जाता है।

10.6. ज्ञानपीठ पुरस्कार

(Jnanpith Award)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, लेखक **अमिताव घोष** को "अंग्रेजी में भारतीय साहित्य के संवर्धन में उत्कृष्ट योगदान" के लिए 54वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- उन्हें शैडो लाइन्स, द ग्लास पैलेस, द हंग्री टाइड और इबिस ट्रिलॉजी - सी ऑफ़ पॉपीज़, रिवर ऑफ़ स्मोक तथा फ्लड ऑफ़ फायर जैसी विभिन्न रचनाओं के लिए जाना जाता है।
- ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रतिवर्ष भारतीय ज्ञानपीठ (एक साहित्यिक और शोध संगठन) द्वारा "साहित्य में उत्कृष्ट योगदान" करने के लिए किसी लेखक को प्रदान किया जाता है।
    - इसे वर्ष 1961 में स्थापित किया गया और इसे **भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची** में शामिल भारतीय भाषाओं व **अंग्रेजी भाषा** (49वें ज्ञानपीठ पुरस्कार के पश्चात् शामिल की गई) में लिखने वाले भारतीय नागरिकों **(मरणोपरांत नहीं)** को प्रदान किया जाता है।
- जिस भाषा के साहित्यकार को एक बार पुरस्कार मिल जाता है, उस पर आगामी तीन वर्ष तक विचार नहीं किया जाता है।
- यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति मलयालम लेखक जी. शंकर कुरूप थे।

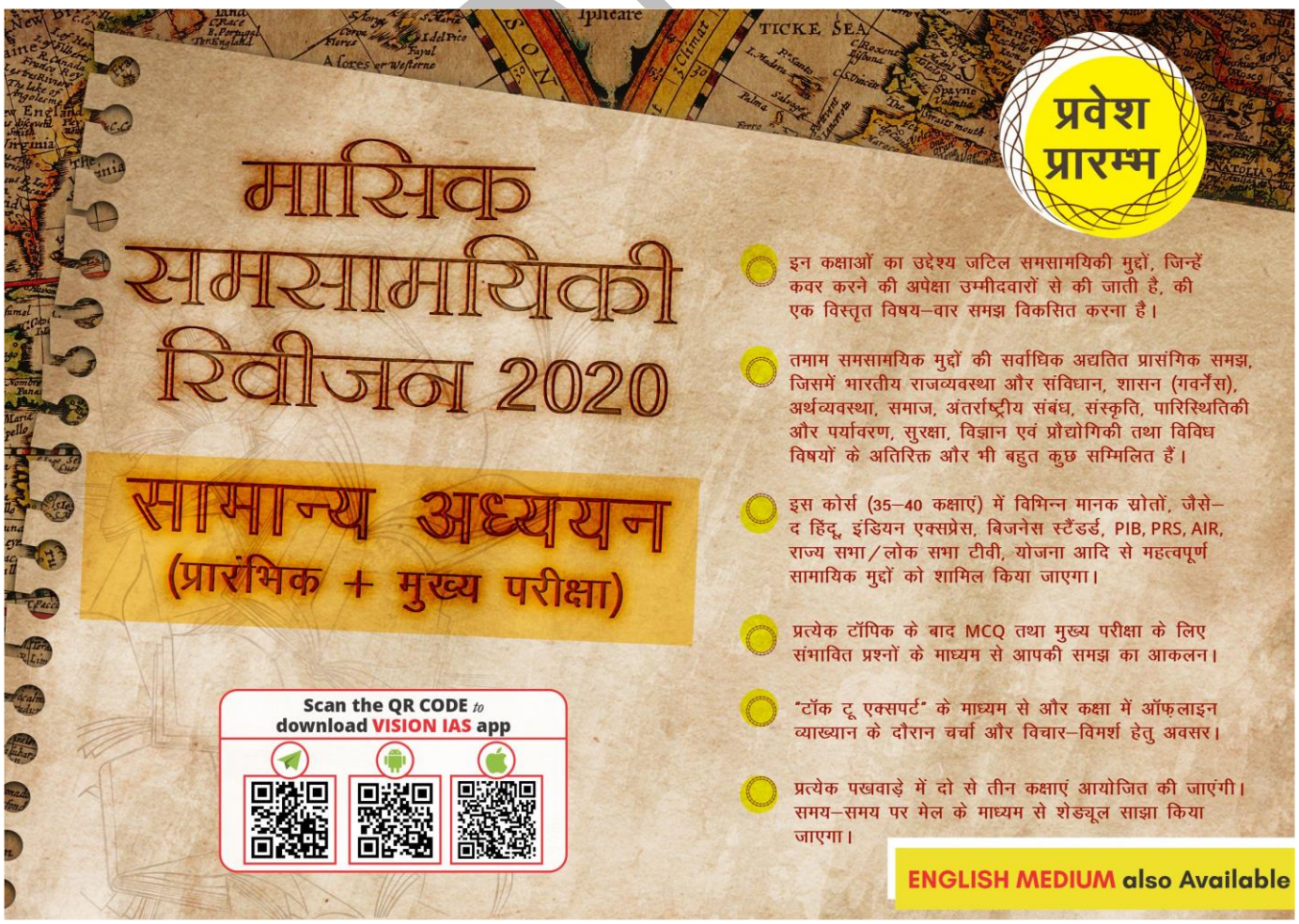

11. विविध

(Miscellaneous)

11.1. भौगोलिक संकेतक दर्जा

(GI Tags)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, वस्त्र मंत्रालय द्वारा देश के भौगोलिक संकेतक (GI) शिल्प और विरासत को बढ़ावा देने हेतु देश के विभिन्न हिस्सों में **'कला कुंभ-हस्तशिल्प विषयक प्रदर्शनी'** का आयोजन किया गया।

भौगोलिक संकेतक दर्जा के बारे में

- GI कृषि, प्राकृतिक और विनिर्मित उत्पादों के लिए एक संकेतक होता है, जो किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान या मूल क्षेत्र (जैसे- एक शहर, क्षेत्र या देश) से संबद्ध होते हैं।
- **"भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999"** भारत में GI उत्पादों के पंजीकरण का प्रावधान करता है।
- GI टैग एक प्रमाण-पत्र के रूप में कार्य करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि किसी अन्य स्थान के इसी के समान उत्पादों को इस नाम से विक्रय न किया जाए।
- भौगोलिक संकेतक प्राप्त करने वाला प्रथम भारतीय उत्पाद **दार्जिलिंग चाय** था।
- GI टैग एक दशक के लिए वैध होता है, जिसके पश्चात् आगामी 10 वर्षों के लिए इसे नवीनीकृत करवाया जा सकता है।

हाल ही में चर्चा में रहे GI Tags

नाम	प्रमुख विशेषताएं
पलानी पंचामिर्थम (Palani Panchamirtham)	• तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले के पलानी शहर की पलानी पहाड़ियों में अवस्थित **अरुल्मिगु धान्दयुथापनी स्वामी मंदिर** के पीठासीन देवता **भगवान धान्दयुथापनी स्वामी (Lord Dhandayuthapani Swamy)** के अभिषेक से संबद्ध प्रसाद को पलानी पंचामिर्थम कहते हैं। • इस अत्यंत पावन प्रसाद को एक निश्चित अनुपात में पांच प्राकृतिक पदार्थों, यथा- केले, गुड़-चीनी, गाय के घी, शहद और इलायची को मिश्रित कर बनाया जाता है। • इसे **बिना किसी परिरक्षकों या कृत्रिम पदार्थों की मिलावट के प्राकृतिक विधि से तैयार किया जाता है** तथा यह अपने धार्मिक उत्साह और प्रसन्नता हेतु सुविख्यात है। • यह **प्रथम बार है जब तमिलनाडु के एक मंदिर के प्रसाद (प्रसादम) को** GI टैग प्रदान किया गया है। • इसे भारत सरकार के एक उपक्रम **केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान (Central Food Technological Research Institute: CFTRI), मैसूर** द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों के तहत निर्मित किया जाता है।
तवलोहपुआन (Tawlhlohpuan)	• तवलोहपुआन **मिज़ोरम** का एक भारी, अत्यंत मजबूत एवं उत्कृष्ट वस्त्र है जो अपने तने हुए धागे, बुनाई और जटिल डिज़ाइन के लिए विख्यात है। • मिजो भाषा में तवलोह से तात्पर्य - दृढ़ रहना और पीछे की ओर कदम न रखना है। • मिज़ो समाज में तवलोहपुआन का विशेष महत्व है और इसे पूरे मिज़ोरम राज्य में तैयार किया जाता है। आइजोल और थेनजोल शहर इसके उत्पादन के मुख्य केंद्र हैं।
मिजो-पुआनचेई (Mizo Puanchei)	• यह मिज़ोरम का एक रंगीन मिज़ो शॉल / वस्त्र है। • यह राज्य का एक महत्वपूर्ण विवाह परिधान है। • यह **मिज़ो उत्सव नृत्यों और आधिकारिक समारोहों में सर्वाधिक प्रयुक्त पोशाक भी है।** • बुनकर इस सुंदर और आकर्षक वस्त्र के निर्माण हेतु बुनाई के समय पूरक धागों के प्रयोग द्वारा **डिजाईनों एवं रूपांकनों का समावेश** करते हैं।

VISION IAS

तिरुर (Tirur)	• तिरुर एक पान (betel vine) है, जिसकी कृषि केरल के मलप्पुरम जिले के तिरूर, तनूर, तिरुरंगडी, कुट्टिपुरम, मलप्पुरम और वेंगरा ब्लॉक पंचायतों में की जाती है। यह अपने **मृदु उत्तेजक स्वाद व औषधीय गुणों** (श्वास दुर्गंध और पाचक विकार नाशक गुण) के कारण मूल्यवान है। • यह अपनी ताजा पत्तियों में कुल क्लोरोफिल और प्रोटीन की विशिष्ट रूप से उच्च मात्रा के कारण भी अद्वितीय है। • इसे सामान्यतया चबाने वाले पान मसालों के निर्माण में भी उपयोग में लाया जाता है। • **यूजेनॉल (Eugenol)** तिरुर पान की पत्तियों से प्राप्त प्रमुख तेल है जिसके कारण इसमें तीक्ष्णपन आता है।
डिंडीगुल ताले	• डिंडीगुल ताले अपनी **उत्कृष्ट गुणवत्ता और टिकाऊपन** हेतु विख्यात हैं। • ये ताले **लौह धातु एवं पीतल** से बनाए जाते हैं तथा पूर्णतया **हस्तनिर्मित** होते हैं। • प्रत्येक ताले के भिन्न-भिन्न लीवर पैटर्न होने के कारण ये अद्वितीय हैं। • डिंडीगुल शहर (तमिलनाडु) को लॉक सिटी (तालों का शहर) भी कहा जाता है। • अपनी अद्वितीय विशेषताओं के बावजूद डिंडीगुल का ताला उद्योग विगत कुछ वर्षों से अलीगढ़ और राजपलयम् के ताला उद्योगों से कठोर प्रतिस्पर्धा के कारण उतरोत्तर ह्रास की स्थिति का सामना कर रहा है।
कांदांगी साड़ी	• तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के कराइकुडी तालुका में निर्मित कांदांगी सूती साड़ियाँ हाथ से बुनी जाती हैं। • इन्हें कोयंबटूर के **उच्च गुणवत्तायुक्त कपास** से निर्मित किया जाता है। • कांदांगी सूती साड़ियाँ चेट्टियार समुदाय (जिन्हें नगराथर अथवा नत्तुकोत्तई चेट्टियार के रूप में संदर्भित किया जाता है) की महिलाओं हेतु देवांगा चेट्टियारों के बुनकरों द्वारा निर्मित किया जाता है। • इन साड़ियों की मुख्य विशेषता इनके **"चटकीले रंग"** हैं, जिनमें अत्यधिक स्थायित्व होता है। • इनकी एक अन्य विशेषता इनका चौड़ा असादृश्य बॉर्डर है, जो साड़ी के लगभग दो-तिहाई भाग को कवर करता है।

11.2. गणतंत्र दिवस परेड 2020

(Republic Day Parade 2020)

सुर्ख़ियों में क्यों?

26 जनवरी 2020 को भारत ने अपना 71वां गणतंत्र दिवस मनाया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस वर्ष के समारोह के लिए मुख्य अतिथि **ब्राजील के राष्ट्रपति जेयर बोल्सोनारो (Jair Bolsonaro)** थे।
- इस वर्ष गणतंत्र दिवस की परेड में 16 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और 6 मंत्रालयों/विभागों की कुल 22 झांकियां शामिल थीं।
- प्रधानमंत्री ने प्रथम बार **राष्ट्रीय युद्ध स्मारक** (नेशनल वॉर म्यूजियम) जाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। ऐसा पहली बार हुआ जब गणतंत्र दिवस परेड में सशस्त्र सेनाओं के तीनों अंग एक साथ **'ट्राई सर्विस' फॉर्मेशन** में दृष्टिगत हुए।

इस परेड में सांस्कृतिक थीम (विषय-वस्तु)

- **ककसार लोक नृत्य:** यह छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में अभुजमाड़िया जनजाति के मध्य प्रचलित नृत्य है। इस नृत्य के माध्यम से बेहतर फसल के लिए **'ककसार'** देवता का आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। यह नृतक/नर्तकियों को अपनी नृत्य मंडली में से ही जीवन साथी के चयन का अवसर प्रदान करता है।
- **ग्रामिया कलई (एक लोक कला):** तमिलनाडु की झांकी में लोक देवता **अय्यनार** की प्रतिमा एवं इन लोक कलाओं का प्रदर्शन किया गया।
- **बतुकम्मा महोत्सव:** यह पुष्प त्यौहार दुर्गा नवरात्रि के दौरान तेलंगाना में मनाया जाता है। इसमें विभिन्न मौसम के सुंदरतम पुष्पों की सात सघन परतों से मंदिर गोपुरम की आकृति बनाई जाती है। देवी गौरी की बतुकम्मा के रूप में पूजा की जाती है।

- **भोरताल नृत्य:** यह असम के बरपेटा क्षेत्र से संबंधित है। इसे सत्रिय कलाकार नरहरि बुरहा भगत द्वारा विकसित किया गया था। झांझ से सुसज्जित नृत्यांगनाएं **'झीया नोम' (Zhiya Nom)** के नाम से प्रसिद्ध तीव्र ताल पर प्रस्तुति देती हैं।
- **भोपाल का जनजातीय संग्रहालय:** मध्य प्रदेश की झांकी भोपाल के जनजातीय संग्रहालय पर आधारित थी, जिसमें गोंड, बैगा, कोरकू, राजवार, सहरिया, भील, भारिया जनजातियों को प्रदर्शित किया गया था।
- **भगवान लिंगराज की रुकुना रथ यात्रा:** ओडिशा के भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर में भगवान लिंगराज की पूजा, **भगवान शिव और भगवान विष्णु (हरिहर)** दोनों के रूप में की जाती है।
- **ब्रह्मोत्सवम:** यह त्यौहार तिरुमाला तिरुपति मंदिर में मनाया जाता है। आंध्र प्रदेश की झांकी में प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते हुए शास्त्रीय कुचिपुड़ी नृत्य, कोंडापल्ली हस्तशिल्प और कलमकारी चित्रों का प्रदर्शन किया गया।
- **अनुभव मंतपा:** यह बसवेश्वर या बसवन्ना द्वारा स्थापित अनुभव का एक अधिष्ठान केंद्र है, जिसमें 12वीं शताब्दी में कर्नाटक के कल्याण शहर में स्थापित प्रथम सामाजिक धार्मिक केंद्र को प्रदर्शित किया गया था।
- **लिविंग रूट ब्रिज:** मेघालय के चेरापूंजी में स्थित नोंगरीट रबर के वृक्षों की जड़ों से निर्मित डबल डेकर लिविंग रुट ब्रिज या जीवित जड़ सेतु का प्रदर्शन किया गया। यह एक अनूठी प्राकृतिक घटना है, जिसे मानवीय कौशल द्वारा आकार दिया जाता है।
- **गुरु नानक देव की 550वीं वर्षगांठ:** पंजाब की झांकी में किरत करो, नाम जपो और वंड छको के सिद्धांतों को दर्शाया गया, जो कि सिख धर्म की आधारशिला है।
- गोवा सरकार के **'सेव द फ्रॉग' अभियान** और जम्मू-कश्मीर के **'बैक टू विलेज' कार्यक्रम** को भी झांकी में प्रदर्शित किया गया।
- **रानी की वाव - जल मंदिर:** गुजरात राज्य द्वारा पाटण शहर में स्थित रानी की वाव - जलमंदिर की अनूठी थीम पर आधारित झांकी प्रस्तुत की गई। इसे एक अद्वितीय वास्तुशिल्पीय आश्चर्य माना जाता है, जो प्राचीन निर्माण कला एवं शिल्प कौशल का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।
    - सोलंकी वंश के संस्थापक मूलराज के पुत्र राजा भीमदेव-प्रथम की स्मृति में रानी उदयमति द्वारा 1083 ई. में निर्मित **रानी की वाव यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों की सूची में भी शामिल है।**

11.3. पारसी जनसंख्या

(Parsi Population)

सुर्ख़ियों में क्यों

- हाल के आंकड़े दर्शाते हैं कि **जियो पारसी योजना** के शुभारंभ के उपरांत से भारत में पारसी समुदाय की जनसंख्या में 233 (पारसी समुदाय में जन्मे शिशुओं की संख्या) की वृद्धि हुई है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम,1992** के अंतर्गत अधिसूचित पारसी एक अल्पसंख्यक समुदाय है। इनकी जनसंख्या वर्ष **1941 के 1,14,000 से घटकर वर्ष 2011 में 57,264 हो गई** थी। इनकी जनसंख्या में हो रही गिरावट को देखते हुए इस योजना को प्रारंभ किया गया था।
- वर्ष **2013 में प्रारंभ** की गई जियो पारसी योजना का उद्देश्य भारत में **पारसी समुदाय की जनसंख्या में गिरावट को रोकना** है।
- इस योजना के तहत **तीन घटकों** को शामिल किया गया है: पक्ष समर्थन, समुदाय का स्वास्थ्य और चिकित्सा।
- इस योजना के तहत पारसी जनसंख्या में स्थिरता लाने के लिए एक वैज्ञानिक नवाचार और **ढांचागत हस्तक्षेप प्रक्रिया** को अपनाया गया है।
- राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग (NCM) द्वारा पारसियों की जनसंख्या में गिरावट के लिए निम्न कारणों को चिन्हित किया गया है:
    - विलंब से विवाह और विवाह न करना;
    - प्रजनन क्षमता में कमी आना;
    - उत्प्रवास;
    - बाह्य-विवाह; तथा
    - संबंध विच्छेद और तलाक।

पारसी (जोरास्ट्रियन) के बारे में

- पारसी लोग ज़रथुस्ट्र धर्म (Zoroastrianism) के अनुयायी हैं, जिसकी स्थापना प्राचीन ईरान में पैगंबर ज़ोरोस्टर (जरथुस्त्र) ने की थी।
- इन्होंने लगभग 8वीं शताब्दी में मुस्लिमों द्वारा धार्मिक उत्पीड़न से बचने के लिए भारत में प्रवास किया था।
- ये मुख्य रूप से कराची (पाकिस्तान) और मुंबई एवं बेंगलुरु (भारत) में अधिवासित हैं।

11.4. कूर्ग का कोडावास समुदाय

(Kodavas Community of Coorg)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने कोडावास समुदाय को बिना लाइसेंस पिस्तौल, रिवाल्वर और डबल बैरल शॉटगन जैसे आग्नेयास्त्रों को रखने संबंधी ब्रिटिश काल से प्रदान की जा रही छूट को जारी रखने का निर्णय किया है। वर्तमान छूट को **10 वर्षों की अवधि** के लिए अर्थात् वर्ष 2029 तक विस्तारित किया गया है।
- **कोडावास समुदाय के बारे में**
  - **कोडावास** (कोगडू के रूप में भी जाने जाते हैं) कर्नाटक में **कूर्ग क्षेत्र का एक प्रसिद्ध योद्धा समुदाय है।**
  - ये **'कालीपोढ़' उत्सव पर शस्त्रों की पूजा** करते हैं तथा यह देश का एकमात्र समुदाय है, जिसे **बिना लाइसेंस शस्त्र रखने की अनुमति प्रदान** की गई है।
  - ये **देश के रक्षा क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान** के लिए भी जाने जाते हैं और इसलिए कूर्ग को **सेनाध्यक्षों की भूमि** भी कहा जाता है।
  - इस समुदाय की विशिष्ट विशेषता यह भी है कि यहाँ महिलाओं को उच्च दर्जा प्राप्त है, जैसे- बाल विवाह की अनुपस्थिति, दहेज़ प्रथा पर प्रतिबंध तथा विधवा पुनर्विवाह का प्रचलन।
  - कोडावास समुदाय द्वारा मनाए जाने वाले **अन्य महत्वपूर्ण त्यौहार हैं-** 'पुत्तरि' (धान के फसल की पहली कटाई के दौरान मनाया जाने वाला) और 'कावेरी संक्रमण'।

11.5. पश्मीना उत्पादों को BIS प्रमाणन की प्राप्ति

(Pashmina Products Receive BIS Certification)

सुर्ख़ियों में क्यों

- हाल ही में, भारतीय मानक ब्यूरो (Bureau of Indian Standards: BIS) ने पश्मीना उत्पादों की शुद्धता को प्रमाणित करने हेतु इसकी पहचान, अंकन और लेबलिंग के लिए एक भारतीय मानक प्रकाशित किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **चांगथांगी या पश्मीना बकरी** लद्दाख के अत्यधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाई जाने वाली देशज बकरी की एक विशेष नस्ल है।
- इन्हें अति-उत्तम कश्मीरी ऊन (बालों की एक मोटी परत होती है, इससे बकरी को ऊष्मा बनाए रखने में सहायता प्राप्त होती है) के लिए संग्रहित किया जाता है, जिन्हें बुनाई के उपरांत **पश्मीना** के नाम से जाना जाता है।
- इन वस्त्रों को हाथ से तैयार (handspun) किया जाता है।
  - यायावर पश्मीना चरवाहे (जिन्हें **चांगपा** कहा जाता है) चांगथांग के प्रतिकूल और दुर्गम क्षेत्रों में निवास करते हैं तथा अपनी आजीविका के लिए पूर्णतः पश्मीना पर निर्भर हैं।

VISION IAS

भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) के बारे में

- BIS भारत का राष्ट्रीय मानक निकाय है, जिसकी स्थापना BIS अधिनियम, 2016 के अंतर्गत की गई थी। BIS की स्थापना वस्तुओं के मानकीकरण, मुहरांकन और गुणवत्ता प्रमाणन गतिविधियों के सुमेलित विकास तथा उससे संबंधित या उससे प्रसंगवश संबद्ध मामलों हेतु की गई है।
- BIS मानकीकरण, प्रमाणन और परीक्षण द्वारा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कई तरीकों से लाभ पहुंचा रहा है, यथा-
  - सुरक्षित विश्वसनीय गुणवत्तायुक्त उत्पाद प्रदान करता है;
  - उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य जोखिम को न्यून करता है;
  - निर्यात एवं आयात विकल्पों को प्रोत्साहित करता है; और
  - किस्मों के प्रसार को नियंत्रित करता है।
- इसे पूर्व में **भारतीय मानक संस्थान (ISI)** के नाम से जाना जाता था।
- यह **उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय** के अधीन कार्यरत है।

11.6. वैश्विक यात्रा एवं पर्यटन प्रतिस्पर्धा सूचकांक

(Travel and Tourism Competitiveness Index: TTCI)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत ने **वैश्विक यात्रा एवं पर्यटन प्रतिस्पर्धा सूचकांक- 2019** में छह स्थानों का सुधार करते हुए **34वां** स्थान प्राप्त किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इसे **विश्व आर्थिक मंच (WEF)** द्वारा जारी किया जाता है।
- इसमें **140 अर्थव्यवस्थाओं** को शामिल किया गया है। यह देश के विकास एवं प्रतिस्पर्धा में योगदान करने वाले यात्रा एवं पर्यटन क्षेत्र के सतत विकास को सक्षम करने वाले कारकों और नीतियों के समुच्य का मापन करता है।
- **पर्यटन मंत्रालय** ने देश में पर्यटन अवसंरचना के निर्माण हेतु कई कदम उठाए हैं, ताकि अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:
  - **स्वदेश दर्शन:** विषय वस्तु-आधारित पर्यटन परिपथों का एकीकृत विकास;
  - **प्रशाद (PRASHAD):** तीर्थस्थल जीर्णोद्धार तथा आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान (प्रशाद);
  - **आइकॉनिक टूरिस्ट साइट्स;**
  - **एडॉप्ट ए हेरिटेज:** अपनी धरोहर, अपनी पहचान आदि।

11.7. सरकारी पहल

(Government Initiatives)

डिजिटल भारत डिजिटल संस्कृति	• हाल ही में, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने भारत को एक नए डिजिटल चरमोत्कर्ष तक ले जाने एवं भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से **सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (Centre for Cultural Resources and Training: CCRT) के ई-पोर्टल 'डिजिटल भारत डिजिटल संस्कृति' तथा 'CCRT यूटयूब चैनल'** का शुभारम्भ किया।

VISION IAS

	• इस पहल के लिए, सभी CCRT क्षेत्रीय केंद्रों को निर्बाध रूप से संयोजित करने हेतु CCRT ने **रूट्स 2 रूट्स (एक गैर-सरकारी संगठन)** के साथ समझौता किया है।
भारतीय संस्कृति पोर्टल (Indian Culture Portal)	• हाल ही में, संस्कृति मंत्रालय (MoC) ने **भारतीय संस्कृति वेब पोर्टल** का शुभारंभ किया। • यह सरकार द्वारा अधिकृत प्रथम पोर्टल है, जहाँ MoC के विभिन्न संगठनों से संबंधित ज्ञान और सांस्कृतिक संसाधन अब एक ही मंच पर सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध हो सकेंगे। • इसे **भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), बॉम्बे** के एक दल द्वारा विकसित किया गया है, जबकि इसके लिए डेटा के चयन, संग्रहण और परिरक्षण का कार्य **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU)** द्वारा किया जाएगा। • यह परियोजना प्रधानमंत्री की **डिजिटल इंडिया** पहल का एक भाग है, जो देश और विदेश में भारत की समृद्ध मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी प्रदर्शित करेगी। • इस पोर्टल पर उपलब्ध सामग्री में मुख्य रूप से दुर्लभ पुस्तकें, ई-पुस्तकें, पांडुलिपियां, संग्रहालय की कलाकृतियां, आभासी दीर्घाएं, अभिलेखागार, चित्र अभिलेखागार, गजेटियर, भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथ सूची, वीडियो, चित्र, व्यंजन, यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल, भारत के संगीत उपकरण इत्यादि शामिल होंगे। • इस पोर्टल पर सामग्री वर्तमान में **अंग्रेजी** और **हिंदी** भाषा में उपलब्ध हैं। भविष्य में यह पोर्टल अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी जानकारी उपलब्ध कराएगा।
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (Zonal Cultural Centres)	• **संस्कृति मंत्रालय** ने देश भर में सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (ZCC) स्थापित किए हैं, जिनका मुख्यालय पटियाला, उदयपुर, इलाहाबाद, कोलकाता, दीमापुर, नागपुर और तंजावुर में स्थित है। • इन केंद्रों का मुख्य उद्देश्य देश की पारंपरिक कलाओं का विकास, संरक्षण, संवर्धन और प्रसार करना है।
एक भारत श्रेष्ठ भारत (EBSB)	• खेल विभाग ने खेल के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को बढ़ावा देने के प्रयोजनार्थ देश के विभिन्न हिस्सों में **EBSB** के तहत कार्यक्रम आयोजित किए। • EBSB का उद्देश्य भारत के विभिन्न राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में विविध संस्कृतियों के लोगों के मध्य **परस्पर संवाद** को बढ़ावा देना है, जिसका लक्ष्य उनके मध्य अधिक से अधिक पारस्परिक समझ को प्रोत्साहित करना है। • EBSB के तहत, प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक राज्य/संघ शासित प्रदेश को **लोगों के मध्य पारस्परिक संपर्क के लिए** दूसरे राज्य/संघ शासित प्रदेशों के साथ जोड़ा जाएगा।
स्वच्छ 'आइकॉनिक स्थान' (Swachh Iconic Places: SIP)	• यह स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत एक **विशेष स्वच्छता पहल** है। • यह देश की चयनित अनुप्रतीकात्मक (आइकॉनिक) विरासत, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्थानों पर केंद्रित है।

VISION IAS

	• इसे शहरी विकास मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय तथा संबंधित राज्य सरकारों के साथ मिलकर **पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय** द्वारा समन्वित किया जा रहा है।
पर्यटन पर्व 2019 (Paryatan Parv 2019)	• **पर्यटन मंत्रालय** द्वारा 'पर्यटन पर्व 2019' का आयोजन अक्टूबर माह में देश भर में किया गया था। • इस पर्यटन पर्व का प्रयोजन भारतवासियों को देश के विभिन्न पर्यटक स्थलों की यात्रा करने हेतु प्रोत्साहित करने के एक उद्देश्य के साथ 'देखो अपना देश' संदेश का प्रचार करना है। • **पर्यटन पर्व 2019 महात्मा गांधी की 150वी जयंती** को समर्पित है। • इस पर्व का आयोजन पर्यटन के लाभों पर ध्यान केंद्रित करने, देश की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करने और **"सभी के लिए पर्यटन"** के सिद्धांत को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। • **पर्यटन पर्व के निम्नलिखित तीन प्रमुख घटक हैं:** ○ **देखो अपना देश:** इसका उद्देश्य भारतीयों को देश का भ्रमण करने हेतु प्रोत्साहित करना है। ○ **सभी के लिए पर्यटन:** देश के सभी राज्यों में स्थित विभिन्न महत्वपूर्ण स्थलों पर पर्यटन संबंधी आयोजन किए जा रहे हैं। ○ **पर्यटन एवं शासन:** पर्यटन पर्व से संबद्ध गतिविधियों के तहत देश भर में विभिन्न विषयों (थीम) पर हितधारकों के साथ परस्पर संवाद-सत्र एवं कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं।
भारत पर्व 2020	• भारत पर्व को वर्ष 2016 से गणतंत्र दिवस समारोह के एक भाग के रूप में मनाया जाता रहा है। • इसका उद्देश्य भारतीयों को भारत के विभिन्न पर्यटन स्थानों की यात्रा करने और **'देखो अपना देश'** की भावना को प्रोत्साहित करना है। • भारत पर्व 2020 का केंद्रीय थीम है: **एक भारत श्रेष्ठ भारत** और **महात्मा गांधी की 150वी जयंती का आयोजन**। • इसे **पर्यटन मंत्रालय** द्वारा अन्य केंद्रीय मंत्रालयों के सहयोग से आयोजित किया जाता है।

11.8. सुर्ख़ियों में रही जनजातियाँ

(Tribes in News)

ब्रू जनजाति	• नृजातीय हिंसा के कारण ब्रू जनजातियों ने वर्ष 1997 में अपने मूल निवास स्थान **मिज़ोरम से त्रिपुरा में प्रवास** किया था। मिज़ोरम से विस्थापित हजारों ब्रू जनजाति त्रिपुरा में शरणार्थी शिविरों में निवास कर रहे हैं। • ब्रू जनजाति, जिसे **रियांग** भी कहा जाता है, त्रिपुरा, असम, मणिपुर और मिज़ोरम राज्यों में विस्तृत हैं।
राभा और गारो जनजाति	• राभा जनजाति **असम** के मैदानी जिलों में निवास करने वाली नौ अनुसूचित जनजातियों में से एक है। • गारो जनजाति, **मेघालय** की गारो पहाड़ियों में निवास करने वाली मातृसत्तात्मक समाजों में से एक है।
जुआंग जनजाति	• यह एक **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)** है, जो मुख्य रूप से **ओडिशा** के **क्योंझर** जिले के **गोंसिका** पहाड़ियों में निवास करते हैं। • उनके प्रमुख व्यवसायों में शामिल हैं: स्थानांतरित कृषि, आखेट और खाद्य संग्रहण।

VISION IAS

असुर जनजाति	• असुर जनजाति **झारखंड** में पाए जाने वाले नौ PVTGs समूहों में से एक है। • असुर भाषा को **"यूनेस्को इंटरेक्टिव एटलस ऑफ़ द वर्ल्डस लैंग्वेज इन डेंजर"** की सूची में शामिल किया गया है।
कोरकू जनजाति	• कोरकू जनजाति मुख्य रूप से **मध्य प्रदेश** के खंडवा, बुरहानपुर, बैतूल और छिंदवाड़ा जिलों, **छत्तीसगढ़** तथा **महाराष्ट्र के मेलघाट टाइगर रिजर्व** के निकटवर्ती क्षेत्रों में निवासित एक आदिवासी जातीय समूह है। • ये **कोरकू भाषा** बोलते हैं, जो **"यूनेस्को इंटरेक्टिव एटलस ऑफ़ द वर्ल्डस लैंग्वेज इन डेंजर"** में सूचीबद्ध भाषाओं में से एक है। • ये उत्कृष्ट कृषक हैं और आलू एवं कॉफी की कृषि करते हैं।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS